आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

वर्ष : 63 मूल्य 10 रु. अंक : 5

15 मई, 2006 वैशाख, 2063

अनगिनत व्हरायटीज्,
शुद्धता और
वाजिब हिसाब का
सुनहरा संगम

त्यौहार, शुभ प्रसंग
के आनंद को
द्विगुणीत करनेवाले
मंगल आभूषण

भारतवर्ष का
स्वर्णतीर्थ

३५ वर्षोंसे तत्पर
एवं विनम्र सेवा
ग्राहकों की जिज्ञासा को
पूरा समाधान

ॲन्टीक, ऑक्साइड
जी बी, कास्टींग, कुंदन
पोलकी इ. गहनों के
अनेकों प्रकार

कॅरेटोमीटर
की उपलब्धता

जलगावमें विशेष
निवास व्यवस्था

औरंगाबाद :
आकाशवाणी चौक,
जालना रोड,
☎ ०२४०-३०९७९७९

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

सोना • चांदी • हिरा • मोती

जलगांव :
नयनतारा,
सुभाष चौक
☎ ०२५७-२२२५९०३

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182–183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141–2575997, फैक्स–0141–2570753

सम्पादक

डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
3 K 24–25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291–2730081

सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.RJ/JPC/M-018/2006-08

सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/– संरक्षक सदस्यता-रू.5000/–
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/– त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/–
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/–
विदेश में- 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रू. 10/–

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

निरुद्धगम्मि विरओ,
मेहुणाओ सुसंवुडो।
जो सक्खं नाभिजाणामि,
धम्मं कल्लाण-पावगं।।

- उत्तराध्ययन सूत्र २.४२

**मैं व्यर्थ हुआ मैथुन निवृत्त,
इन्द्रिय-मन-गोपन व्यर्थ किया।
है धर्म सुखद या पापजनक,
प्रत्यक्ष न इसका ज्ञान लिया।।४२।।**

मई २००६
वीर निर्वाण संवत् २५३२
वैशाख २०६३

वर्ष : ६३ अंक : ०५

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोनः 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	६
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	७
प्रवचन-	बुभुक्षुत्व है व्यसनों का कारण	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	८
शोधालेख-	जैन धर्म का उन्नायक : मौर्य नरेश 'सम्प्रति'	-डॉ. एन.के. शर्मा	१७
विज्ञान और धर्म-	जैन दर्शन की वैज्ञानिक समीक्षा और शोध की आवश्यकता	-डॉ. जीवराज जैन	२३
अध्यात्म-चिन्तन-	सर्वांगीण विकास का साधन : सामायिक व्रत(५)	-श्री प्रेमचन्द कोठारी	२८
	चेतना का ऊर्ध्वीकरण	-श्रीमती विमला जोटा	३२
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (२८)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	३९
तत्त्वज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (३०)	- श्री धर्मचन्द जैन	३६
	दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(८)	- संकलित	४२
	मोहनीय कर्म	- श्री पी.एम. चोरडिया	४५
स्वास्थ्य-	जल का उपयोग कब, क्यों और कैसे करें?	-श्री चंचलमल चोरडिया	५०
युवा-स्तम्भ-	अहिंसा का तात्पर्य	-श्री चतरसिंह मेहता	५६
नारी-स्तम्भ-	मत मारो माता मुझको तुम	- श्री मोहन कोठारी 'विनर'	६२
बाल-स्तम्भ-	परदेशी राजा	-उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा.	६४
प्रेरक प्रसंग-	वर्तमान का सदुपयोग	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरि जी म.सा.	४४
ज्ञान-कण-	२४वें तीर्थंकर के २४ नाम	- श्रीमती उमरावदेवी धींग	६८
विचार-	सुभाषित	- श्रीमती मदनदेवी बुरड़	३८
	हित मित भोजन	-श्री नितेश नागोता	४१
	सजग रहें हम	-श्री गणपत सुराणा	५५
	वचनामृत	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	६१
कविता/गीत-	संयम का ये पथ	- मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	२२
	संयम पथ की राहों में	- श्री मनमोहनचन्द बाफना	२७
	ज्ञान शिविर : चार मुक्तक	- डॉ. दिलीप धींग	३३
	मृत्यु	- डॉ. सागरमल जैन	३४
	हम स्वयं सुख-दुःख के कारण	- श्री कस्तूरचन्द जैन 'अष्टम'	६९
सम्पादकीय -	डॉ. धर्मचन्द जैन		३
स्वाध्यायी परिचय-	श्री रिखबचन्द जी मेहता-जोधपुर	-श्रीमती मोहनकौर जैन	६
नूतन साहित्य-	डॉ. धर्मचन्द जैन		७०
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		७१
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		१००

मृत्यु का सच

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

संसार में कोई कितना भी बड़ा व्यक्ति क्यों न हो, कितनी भी धन-सम्पत्ति का मालिक क्यों न हो, कितनी भी पूजा-प्रतिष्ठा का रसिक क्यों न हो, कैसी भी प्रभुत्व एवं राज्यशक्ति से सम्पन्न क्यों न हो, एक दिन सबको मृत्यु के सच से गुजरना होता है। मृत्यु के पश्चात् जीवन नये सिरे से प्रारम्भ होता है। वह कैसा एवं कहाँ प्रारम्भ होगा इसे हम नहीं जानते, किन्तु यह अवश्य जानते हैं कि मरते समय यहाँ की सभी वस्तुएँ यहाँ ही रहती हैं, साथ में कुछ नहीं जाता। यदि कुछ साथ जाता है तो इस जीवन में अर्जित पुण्य-पाप साथ जाते हैं। न कोई पद साथ जाता है, न सम्पत्ति साथ जाती है, न कोई परिजन साथ जाते हैं और न कोई राज्यशक्ति साथ जाती है। इसलिए अध्यात्मवादी शरीर, परिजन एवं पुद्गल से आत्मा की भिन्नता का प्रतिपादन करते हैं। अध्यात्मयोगी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के शब्दों में-

दृश्य जगत् पुद्गल की माया, मेरा चेतन रूप।
पूरण गलन, स्वभाव धरे तन, मेरा अव्यय रूप॥

चेतन तत्त्व इस दृश्यमान जगत् से भिन्न है, यह बोध उनको होता है जो आत्मगुणों में रमण करते हैं। आश्चर्य तो तब होता है जब इस अनित्य जीवन में व्यक्ति अपने लिए ऐसी योजनाएँ बनाता है, जैसे उसे स्थायी रूप से यह जीवन मिला है। जीवनावधि कितनी भी क्यों न हो, किन्तु वह समाप्य है। हम जब संसार में जीते हैं तब मृत्यु के सच से प्रायः आँखे मूंदे रहते हैं, किन्तु इससे सच छिपता नहीं है। सच तो सच है- मृत्यु एक सच है, जिससे हर मनुष्य को गुजरना है।

मृत्यु का पूर्वाभास होना आवश्यक नहीं है। लाखों में किसी एक को ऐसा आभास हो सकता है और वह पूर्ण तैयारी के साथ सहज-मरण का स्वागत कर सकता है। शेष तो उस सत्य से विमुख होकर जीते हैं और सोचते हैं- मृत्यु आएगी तब देखा जायेगा। अभी तो हम हैं, मृत्यु की बात सोचना बेवकूफी है। जीवन में कभी कैंसर आदि असाध्य रोग से ग्रस्त होने पर निकट मरण का संकेत प्राप्त हो जाता है। फिर भी व्यक्ति मरण से बचने का पूरा प्रयास करता हुआ देखा जाता है। परिजन भी अन्तिम श्वास तक अस्पताल, डॉक्टर और औषधि का आश्रय नहीं छोड़ना चाहते।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति को अवशिष्ट जीवन का सदुपयोग करने का भी अवसर प्राप्त नहीं होता। जब यह सुनिश्चित हो जाय कि कोई भी औषधि उस रोग का निवारण नहीं कर सकती तब अस्पताल के वातावरण को त्यागकर अपने घर में आ जाना और भावशुद्धि के लिए आध्यात्मिक और वैराग्यपरक भजनों का श्रवण करना ही अधिक उचित प्रतीत होता है। पाँच अणुव्रतों, तीन गुणव्रतों और चार शिक्षाव्रतों का आधान कर संलेखना-संथारा स्वीकार करना उस स्थिति में आत्मिक उत्थान की दृष्टि से निश्चित ही उपयोगी है।

विचार का विषय तो तब होता है जब मृत्यु अचानक आक्रमण कर देती है। ऐसी अचानक मृत्यु कभी प्राकृतिक आपदाओं के कारण, कभी वाहनादि के दुर्घटनाग्रस्त होने पर तो कभी आयुष्य के क्षीण होने पर सहज ही आ जाती है। इस प्रकार की मृत्यु में संभलने का अवसर नहीं मिलता। भावों की शुद्धि के पुरुषार्थ हेतु उपक्रम नहीं होता। कहते हैं मृत्यु के समय जिस प्रकार के भाव होते हैं उसी प्रकार के भावों में नया जन्म प्राप्त होता है। वैसे नया भव आयुष्य कर्म के बंध के अनुसार प्राप्त होता है। मृत्यु के समय व्यक्ति में उस प्रकार के भाव स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं, जिस प्रकार के भव में उसे गमन करना होता है। कर्म-सिद्धान्त का यह नियम है कि वर्तमान में प्राप्त भव का दो-तिहाई भाग व्यतीत होने पर नये आयुष्य का बंध हो जाता है। इसका तात्पर्य है कि वर्तमान भव में गतिशील शुभाशुभ भावों के अनुसार ही नया भव प्राप्त होता है। इसलिए नये भव को सुधारने हेतु वर्तमान भव में भावो की शुद्धि अनिवार्य है। यही नहीं, इस भव को सुधारने हेतु भी भावों की शुद्धि अपेक्षित है। जीवन की सुखकरता भावों की शुद्धि से जुड़ी हुई है।

हम जीने की इच्छा अवश्य रखते हैं, किन्तु जीवन अच्छा हो इसका प्रायः चिन्तन नहीं करते। जीवन तभी अच्छा हो सकता है जब मरण का सच अर्थात् जीवन की अनित्यता का भाव सदैव बना रहे। फिर व्यक्ति मोह, आसक्ति, परिग्रह, अनैतिकता, लोलुपता आदि दोषों में फंस नहीं सकता। क्योंकि ये दोष वर्तमान जीवन को भी दूषित करते हैं तथा भावी जीवन को भी गहरे गर्त में डुबो देते हैं। इसलिए मृत्यु अवश्यम्भावी है, इस सच को स्वीकार करते हुए जीने की आवश्यकता है। यद्यपि सांसारिक प्रलोभनों में अटके मनुष्य के लिए इस सत्य को स्वीकार करके जीना कठिन है। किन्तु इसको स्वीकार किए बिना जीवन सुन्दर नहीं बनता।

मनुष्य मोह के वशीभूत होकर अपने लिए ही नहीं, अपनी अनेक पीढ़ियों के लिए भी इन्तजाम करने की सोचता है, किन्तु यह भी सच है कि असीम सम्पत्ति

का संचय करके भी मृत्यु के पश्चात् व्यक्ति उसे संभालने नहीं आता है, न यह जान पाता है कि उसके वंशजों ने उसे सुरक्षित रखा है, नष्ट कर दिया है या बढ़ाया है। व्यक्ति जब प्रयाण करता है तो कारोबार जहाँ का तहाँ छोड़कर चल देता है। पुनः हिसाब देखने आने का अवसर नहीं होता। व्यक्ति घरवालों के लिए बेईमानी, भ्रष्टाचार आदि करके धन कमाता है, किन्तु अन्त में भोगना स्वयं को पड़ता है। इस जीवन में भी वह अशान्ति एवं तनाव में जीता है तथा आगे भी अभुक्त पापकर्मों का फल प्राप्त होता रहता है।

मृत्यु के सच से परिचित होने का यह अर्थ नहीं कि हम निराशावादी हो जाएँ, अपितु इसका तात्पर्य है कि हम ऐसा करें जो हमारी चेतना को सुप्त न करे, चेतना को शुद्ध एवं सात्त्विक बनाने के लिए हम निरन्तर कोई न कोई अभ्यास अवश्य करें। स्वाध्याय, सामायिक, ध्यान, व्रत-नियम, उपवास-पौषध, सत्संग आदि इसमें सहायक हो सकते हैं। अतः इन्हें अपनी दिनचर्या में अवश्य स्थान दें, ये हमें भटकने से बचा सकते हैं तथा जीवन को सम्यक् दिशा प्रदान कर सकते हैं।

जैन धर्म में मृत्यु को महोत्सव बनाने के लिए त्याग-प्रत्याख्यान के साथ संथारापूर्वक समाधिभाव में मरण की प्रेरणा की गई है। प्रभु से भी यही प्रार्थना की गई- "प्रभुवर! अन्तिम श्वास में समाधि जीवन होवे।" अध्यात्मवादी कवि तो शरीर को मिट्टी से भी कच्चा बतलाते हैं- "काया गार सूँ काची।"

हम जीवन में कुछ भी करें, किन्तु मृत्यु का सच हमारी स्मृति में रहे तो हम बहुत से अनावश्यक तनावों एवं इच्छाओं से मुक्त हो सकते हैं। आसक्ति की गहरी निद्रा टूट सकती है। प्राप्त जीवन का अधिकाधिक सदुपयोग करने की भावना जाग सकती है। जीवन सीमित है, उसका हम कैसा उपयोग करते हैं, यह हमारे पर निर्भर है। धन-सम्पत्ति आदि को तो व्यापार के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है, किन्तु जीवन की अवधि को बढ़ाना शक्य नहीं। हाँ, संयम से जीने वाले अपेक्षाकृत पूर्ण आयु भोगते हैं और असंयम से जीने वाले अकालमृत्यु को भी प्राप्त हो सकते हैं। हम संयम से जीते हुए जीवन के स्वरूप एवं लक्ष्यों का यथोचित निर्धारण करें।

जीवन की सार्थकता इसी में है कि हमारे विचारों, वचनों एवं कार्यों में उत्तरोत्तर शुद्धता, उत्कृष्टता और उदारता की अभिव्यक्ति हो। यह अभिव्यक्ति दूसरों को दिखाने के लिए नहीं, अपितु आत्मशुद्धि एवं आन्तरिक सुखानुभूति के लिए हो। चेतना के स्तर पर हमें ऐसी अनुभूति हो कि "अब हम अमर भये न मरेंगे।"

आगम-वाणी

थंभा व कोहा व मयप्पमाया, गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो, फलं व कीयस्स वहाय होइ।।१।।

पगईए मंदा वि भवंति एगे, डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया।
आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा, जे हीलिया सिहिरिव भासकुज्जा।।३।।

आसीविसो वा वि परं सुरुट्ठो, किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा।
आयरियपाया पुण अप्पसण्णा, अबोहि-आसायण णत्थि मुक्खो।।५।।

जो पावगं जलियमवक्कमिज्जा, आसीविसं वा वि हु कोवइज्जा।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी, एसोवमासायणया गुरूणं।।६।।

सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिया न भिंदिज्ज व सत्तिअग्गं, न या वि मुक्खो गुरुहीलणाए।।९।।

लज्जा दया संजम बंभचेरं, कल्लाण भागिस्स विसोहिठाणं।
जे मे गुरु सययमणुसासयंति तेऽहं गुरु सययं पूययामि।।१३।।

-दशवैकालिक सूत्र, नौवा अध्ययन, प्रथम उद्देशक, गाथा १, ३, ५, ६, ९, १३

जो गर्व क्रोध माया प्रमाद वश, सीखे न विनय निज गुरुजन से।
हो उसका नष्ट ज्ञान वैभव, जैसे कीचक फल लगने से॥

होते हैं प्रकृति मंद कोई, श्रुत बुद्ध कई बालक होते।
आचार निष्ठ गुण-दृढ़ हीलन, पा अग्नि समान गुण भस्म करते॥

हो परमक्रुद्ध अहि जीवन का, करता विनाश कुछ और नहीं।
पर रुष्ट गुरु के होने पर, आशातना अबोधि से मोक्ष नहीं॥

जो अग्नि ज्वाल पर पाँव धरे, या नागनाथ को क्रुद्ध करे।
जो जीने के हित विष खाये, यह उपमा गुरु अपमान धरे॥

संभव है सिर से गिरि फूटे, क्रुद्ध सिंह भी ना खाए।
कुंतल नोक नहीं भेदे, पर मोक्ष न गुरु निंदक पाए॥

लज्जा दया ब्रह्मचर्य संयम, कल्याण भाग के शुचितम पद।
सतत सिखायें मुझको जो गुरु, नित्य करूँ पूजन वह पद॥

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- पाँच व्रतों का यथाशक्ति आगार के साथ पालन, भोगोपभोग का परिमाण, अनर्थ दण्ड से बचना आदि पाप को घटाने के साधन हैं।
- विनय तप के अहर्निश आराधन से, साधारण से साधारण साधक भी गुरुजनों का अनन्य प्रीतिपात्र या कृपापात्र बन कर अन्ततोगत्वा सर्वगुण सम्पन्न हो, ज्ञान का भण्डार और महान् साधक बन जाता है।
- जैसे बिना पाल के तालाब में पानी नहीं ठहरता वैसे ही बिना व्रत के जीवन में सद्गुणों का पानी समाविष्ट नहीं हो सकता, अतः श्रावक अपने व्रत में पाल अवश्य बाँधे।
- जीव दो प्रकार के होते हैं- एक भवमार्गी और दूसरे शिवमार्गी। विश्वभर में अनन्तानंत प्राणी भव मार्ग का अनुगमन कर रहे हैं। उनकी कोई गुण-गाथा नहीं गायी जाती। उनका उल्लेख कहीं नहीं होता। उनका कोई पता नहीं होता कि किधर से आये और किधर गये। दूसरी ओर शिवमार्गी वे जीव हैं, जो संख्या में असंख्य नजर नहीं आते, किन्तु शास्त्रों में, सत्-साहित्य में उन्हीं की गुण-गाथा गायी हुई है।
- गुणियों के गुणों का कीर्तन प्रभावना का कारण है, पर साधक को प्रशंसा सुनकर खुश नहीं होना चाहिए। यही समझना चाहिए कि इसने प्रेमवश मेरे गुण देखे हैं, इसको मेरे दोषों का क्या पता? मुझे अपने दोषों को निकाल कर इसके विश्वास पर खरा उतरना है, ताकि उसे धोखा न हो।
- हर मनुष्य के पास मन, वचन और काया के सुप्रणिधान की तीन निधियाँ हैं, जो नवनिधियों की दाता हैं। गरीब से गरीब भी इनसे वंचित नहीं है। स्थानांग सूत्र के तृतीय स्थान में प्रभु ने स्पष्ट कहा है- मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे।
- माताएँ सुशिक्षित होंगी तो बालक को संस्कारवान बनने में देरी नहीं लगेगी।

प्रवचन

बुभुक्षुत्व है व्यसनों का कारण

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

मुमुक्षुत्व एवं विनयशीलता का आचरण जहाँ व्यक्ति के आत्मिक विकास का कारण है वहाँ बुभुक्षुत्व एवं वासनाएँ व्यसन अर्थात् विपत्ति की कारण हैं। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा बालकेश्वर, मुम्बई में ११ अगस्त २००२ को फरमाये गये इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। -सम्पादक

अविनाशी-अविचल-पदवासी निरंजन-निराकार सिद्ध भगवंतों को, तिन्नाणं-तारयाण, तीर्थ के संस्थापक तीर्थंकर भगवन्तों को तथा ढाई हजार वर्ष के बाद भी धर्म-संघ को अक्षुण्ण रखने वाले महाव्रत-समिति-गुप्ति के आराधक संत-भगवंतों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में संसार के समस्त जीवों के दो भेद किये गये। एक- आठ कर्मों का क्षयकर ध्रुव-शाश्वत स्थान पर विराजमान सिद्धों का तो दूसरा- कर्म-बंधन में भव-भ्रमण करने वाले संसारी जीवों का। संसारी जीवों में भी दो भेद किये गये। एक वे प्राणी हैं जो मुमुक्षु हैं तो दूसरे वे प्राणी हैं जो बुभुक्षु हैं।

'मुमुक्षु' शब्द की परिभाषा है- **मोक्तुं इच्छुः**, जो बंधन काटकर मोक्ष की इच्छा वाले हैं उन प्राणियों को मुमुक्षु कहा गया। मुमुक्षु प्राणी विनयशील होते हैं। 'विनय' एक ऐसा गुण है जो दानवी वृत्ति हटाकर मनुष्य में दैवी भावना जागृत करता है, जो अनपढ़-मूर्ख को ज्ञान प्राप्त करने योग्य बनाता है, जो धर्म से पिछड़े व्यक्तियों को धर्म की राह दिखाता है। जैसे मेघ खारे पानी को ऊपर उठाकर मीठा बनाता है, जैसे गाय घास खाकर उसका दूध रूप में निर्माण करती है, जैसे इक्षु का ठूँठ-डंठल पानी की बून्द को मीठे रस में परिवर्तित करता है ठीक इसी तरह जड़-अनपढ़-अबूझ-अयोग्य प्राणी को विनय योग्य बनाता है। विनय के सात प्रकार आपके सामने रखे गए। ज्ञान विनय, दर्शन विनय, चारित्र विनय, मन विनय, वचन विनय, काय विनय और लोकोपचार विनय। विनय मन से, वचन से और काया से किया जाता है। मुमुक्षु के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है-विनय की। उत्तराध्ययन सूत्र के प्रथम

अध्ययन में ही विनय की चर्चा है। शास्त्र के माध्यम से रखूँ-

न पक्खओ न पुरओ, णेव किच्चाण पिट्ठओ।
न जुंजे उरुणा उरुं, सयणे णो पडिस्सुणे॥१८॥

पद्यानुवाद की भाषा में कहूँ-

गुरुजन के आगे-पीछे ना बाजू में अड़ कर बैठे।
ना शय्या पर से उत्तर दे, ना जाँघ सटाकर ही बैठे॥१८॥

विनयशील कैसे बैठे? गुरुओं के समीप में बैठने का कौनसा तरीका होना चाहिये? तेंतीस बोल जानने वाले जानते हैं कि शिष्य को चलना है चाहे गुरु के आगे, चाहे पीछे, चाहे बराबर वह अविनय से नहीं चले। सटकर बैठना, गोडे से गोडा अड़ाकर बैठना, अभिमान सूचक आसन से अकड़ कर बैठना अविनीत शिष्य के लक्षण हैं। वह चाहे गुरु के पीछे बैठा है, या कभी मार्ग में आगे चलने का मौका आए वह आगे चलते हुए भी गुरु की तरफ पीठ करके नहीं चले। कभी ऐसे भी प्रसंग आते हैं- गुरुदेव की नजर में कमजोरी है, काँटे-कंकड़ ठीक तरह से दिखाई नहीं देते तो शिष्य काँटे-कंकड़ हटाते हुए भी विनयपूर्वक झुका हुआ आगे चले। उसे चाहे आगे चलना हो या पीछे, वह पूरे विनय के साथ चले। कभी कोई पीछे चल रहा है, गुरुदेव किसी कारण से अचानक रुक जाये तो पीछे चलने वाला, इतना पीछे भी नहीं चले कि गुरुदेव के रुकने के साथ वह भिड़ जाय। विनय के चार सूत्र कहे हैं -

नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिंडं च संजए।
पाए पसारिए वाबि, न चिट्ठे गुरूणंतिए॥१९॥

बैठे नहीं बांध कर पालथी, पक्ष पिण्ड से भी न कहीं।
गुरुजन के सम्मुख अविनय से, मुनि पाद प्रसारण करे नहीं॥१९॥

कहते हैं- गुरु के समक्ष कपड़े से घुटने बाँधकर बैठना, पाँव पसार कर बैठना भी अविनय है। बिना विशेष स्थिति के गुरु नीचे और चेला ऊपर नहीं बैठे। हाँ कोई लाचारी है, मजबूरी है, शारीरिक विशेष कारण है वह बात अलग है। गुरु-चरणों में निष्कम्प, दृढ़ आसन से चंचलता रहित होकर बैठे। धर्मस्थान में प्रवेश करने वाला भी हाथ जोड़कर प्रवेश करता है तब शिष्य को तो नम्रता से करबद्ध होकर बैठकर विनयशीलता का परिचय देना चाहिए। मैंने ऐसे-ऐसे शिष्य भी देखें है जो जब तक गुरु से कुछ श्रवण करते रहेंगे, हाथ जोड़े-जोड़े ही घंटे भर बैठे रहेंगे। शिष्य चाहे सामने है, पीछे या आजू-बाजू में है झुंककर बैठता है तो आने-जाने वालों को

सहज ज्ञात हो जाता है कि गुरु कौन है और शिष्य कौन। आने वालों को बड़ा-छोटा पूछने की जरूरत नहीं पड़ती। यह कब होता है? जब भीतर में विनय हो।

संसार में अविनय की स्थिति का वर्णन करने की जरूरत नहीं। आप जानते हैं, देखते भी हैं कि पिता कहाँ, पुत्र कहाँ, शिक्षक कहाँ, विद्यार्थी कहाँ, मालिक कहाँ, नौकर कहाँ? अचम्भा आता है जब लोगों को अपना नाम पहले और पिता का नाम बाद में कहते सुनता हूँ। महाराष्ट्र में यही रिवाज है। यहाँ बेटे का नाम पहले है, बाप का बाद में। ऐवन्ता जब गौतम से पूछता है- भगवन्! आप कौन? जवाब क्या था? यह नहीं कहा कि मैं चौदह पूर्व का ज्ञाता, चार ज्ञान का धारक, छत्तीस हजार साधुओं का मुखिया हूँ। गौतम स्वामी ने कहा- मैं तीर्थंकर भगवान महावीर का अन्तेवासी शिष्य इन्द्रभूति गौतम हूँ। इसमें क्या झलकता है? यह तो मैं मुमुक्षुओं की बात कह रहा हूँ।

आज रविवार है। आपमें मुमुक्षु भाव जगे इस हेतु विनय की बात बता गया। मुमुक्षु के अलावा अधिकतर जीव बुभुक्षु होते हैं। बुभुक्षु कौन?

भोक्तुं इच्छुः बुभुक्षुः।

इसका अर्थ किया जाय तो जो भोगने की इच्छा वाला है वह बुभुक्षु है। एक दृष्टि से कहूँ- संसार के सारे जीव भोगी हैं। भोक्तुं इच्छुः अर्थात् जिनके भोगने की इच्छाएँ असीम हैं। खाने वाला कितना खायेगा? पाव-दो पाव। कोई मथुरा का चौबे भी है तो सेर खा लेगा, पाँच सेर खा लेगा। फिर भी सवेरे भूखा ही मिलेगा, पर शास्त्र कह रहा है कुछ ऐसे भोगी हैं जिनकी तृप्ति होती ही नहीं। तीन बातें कही गईं-

न शयानो जयेन्निद्रां, न भुंजानो जयेत्क्षुधां।
काम्यमानो न कामान्, लोभेनेह प्रशाम्यति॥

अर्थात् सोते रहने से नींद-जय नहीं होती। खाते रहने से भूख को जीता नहीं जा सकता। इच्छाओं को बढ़ाने वाला उन पर जय नहीं पा सकता तथा लोभ के रहते शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। अधिक मात्रा में सोकर भी नींद घटती नहीं, बढ़ती है। राजस्थानी कहावत है- नींद घटाया घटती है, बढ़ाया बढ़ती है। कुछ लोग हैं जो तीन घंटे सोकर भी अपनी दिनचर्या करते हैं। मुम्बई में राजेन्द्र बाबू लोढ़ा न्यायाधिपति हैं। एक दिन उनसे बात करने का मौका आया। आप न्याय करने वाले हैं फैसला करने वाले हैं आपको तो समय मिलता होगा? कहा- महाराज! मैं मुश्किल से चार घंटे सोता हूँ। नौ घंटे न्यायालय में काम है, छः घंटे अध्ययन करता हूँ और चार घंटे नींद

लेकर काम चलाता हूँ।

राजस्थानी भाषा में कहा जाता है- बच्चे की आठ घंटे, जवान की छः घंटे और बूढे की पाँच घंटे की नींद होती है। इतना सोकर कोई भी सहज रूप से अपना काम कर सकता है। सोने से नींद जीती नहीं जा सकती। इसी तरह खाने से भूख लगना कम नहीं होता। शाम को खाकर भी व्यक्ति सुबह भूखा देखा जाता है।

इसी तरह जो कामना-वासना वाले लोग हैं वे भोगों से तृप्ति करना चाहते हैं उनकी कभी तृप्ति हुई नहीं और होगी नहीं। जैसे ईंधन डालने से अग्नि तृप्त नहीं होती, अधिक बढ़ती है उसी तरह भोगने से भोग की कामना बढ़ती है।

एक पत्नी वाले भी हैं। आगे बढ़कर कहूँ- जीवन में एक बार भोग करने वाले भी हैं। जिनका कथन है- **संतानाय च मैथुनं**। कुल परम्परा रखने के लिए भोग करके जीवन चलाने वाले हैं। वर्ष में एक बार भोग करने वाले हैं, महीने में एक बार भोग करने वाले हैं। कई हैं जो एक पत्नी से सीमित समय में गुजारा करते हैं। कुछ की उससे भी तृप्ति नहीं हुई। दो, चार, पाँच,आठ, पचास, सौ, हजार कइयों के सोलह हजार तो कइयों के अठारह हजार पत्नियाँ थीं, फिर भी रावण को सौन्दर्य की वासना की भूख समाप्त नहीं हुई। वह आज भी छोटे-छोटे बच्चों के द्वारा दशहरे के दिन मारा जाता है। इसलिए वासना को व्यसन के रूप में कहा गया है।

'व्यसन' शब्द का अर्थ क्या? **व्यसनं विपत्तिः** अर्थात् व्यसन ही विपत्ति है। **व्यस्यति पुरुषं श्रेयसः इति व्यसनं**। अर्थात् जो आदमी को सत्पथ से न्याय मार्ग से श्रेय मार्ग से गिराता है वह है व्यसन। दूसरा अर्थ किया- **विपरीतं असनं व्यसनं**। जो भक्ष्य पदार्थों को छोड़कर अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करता है वह भी व्यसन है। खाद्य छोड़कर अखाद्य खाता है, शाकाहारी होकर भी.....। आगे बोलने की जरूरत नहीं, आप समझ गये हैं।

कुछ दिन पहले इस पर भी कहा गया था। जितने भी माँसाहारी प्राणी होते हैं उनकी रात में आँखे चमकती हैं। शाकाहारी की आँखें रात को काम नहीं करती। शाकाहारी के दाँत चपटे होते हैं जबकि माँसाहारियों के दाँत नुकीले होते हैं। जितने भी माँसाहारी प्राणी हैं वे जीभ बाहर निकाल कर लप-लप करते पानी पीते हैं। शाकाहारी होठ से पानी पीते हैं। गाय, भैंस, बकरी देख लीजिये, आदमी कैसे पीता है? माँसाहारी प्राणियों के शरीर से पसीना नहीं आता, जबकि शाकाहारियों को पसीना आता है। माँसाहारियों के पैरों के नाखून तीखे होते हैं. जबकि शाकाहारियों

के चपटे। न जाने कितने प्रकृतिगत चिह्न हैं।

आचार्य भगवन्त कहते थे- जितने व्यसन हैं वे सब अन्याय से उपार्जित द्रव्य से होते हैं। जितने विकार हैं, प्रदर्शन हैं, आपाधापी है, बुराइयाँ हैं ये सब किसमें हैं? जिनका उपार्जन न्याय सम्पन्नता से नहीं है, उनके जीवन में अनेक विपत्तियाँ आती हैं।

मैं समझने की एक बात कह रहा हूँ। कोसाना में आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) ने एक बात कही- एक अंक है आठ का। आठ के अंक को गुणा किया जाता है या उसका पहाड़ा बोला जाता है तो संख्या बाहर में बढ़ती दिखाई देती है और भीतर के योग में घटती जाती है। आठ का पहाड़ा बोलें- एक आठ, आठ। दो आठ सोलह। सोलह क्या? एक और छः, दोनों का योग सात। तीन आठ चौबीस। दो और चार- छः। चार आठ बत्तीस, तीन और दो- पाँच। पाँच आठ चालीस। योग चार रह गया। आपने देखा बाहर में बढ़ती हुई भी भीतर में संख्या घटती जाती है।

इसी तरह अन्याय से उपार्जित धन बाहर में तो बढ़ता दिखता है, कारें, गाड़ियाँ, बंगले पर भीतर की शांति, समाधि, रस कम होता जाता है। आज लोग धन के पीछे पड़े हुए हैं। दूसरे शब्दों में कहूँ- सात पीढ़ी खाये उतना धन है, फिर भी वही हाय-हाय। लाभ से लोभ बढ़ता जाता है उससे कभी संतुष्टि नहीं होती। लोभ का कहीं अन्त नहीं है। परिग्रह आरम्भ बढ़ाता है। आरम्भ और परिग्रह दोनों मिलकर नरक में ले जाते हैं। वे भले ही रीति-रिवाज निभाने के लिए धर्मस्थान में आ जायें पर उनका मन कहाँ? उनका रस कहाँ? उनका मन धन में है, उनका मन लोभ में है, उस लोभ में जो अन्याय से उपार्जित है।

भारत स्वतंत्र हो गया, पर लोगों को रोटी और मकान की चिंता है। आप रोटी-मकान की आवश्यकता से सहमत हैं, पर रोटी और मकान से भी अधिक चारित्रिक निर्मलता की आवश्यकता है। नीति है, न्याय है तो ठीक, अन्यथा चाहे जितनी सेना बढ़ जाये, सीमाओं को बढ़ा लें उससे शांति नहीं होगी। विचार करने की बात है कि आपका चारित्र बढ़ रहा है या घट रहा है?

मैं पुरानी पढ़ी बात कह रहा हूँ- मैंने चीन के पर्यटक फाहियान ह्वेनचांग के लिए पढ़ा। वे विदेशी, चीन से भारत भ्रमण का लक्ष्य लेकर आये थे। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा- भारत में हमने तीन विशेषताएँ देखी। जवाहरात की दुकान पर भी

यहाँ ताले नहीं लगते थे। दूसरी-सभ्य लोग जो गाँव या नगर में रहते थे उनमें कोई शराबी नहीं था, माँसाहारी नहीं था, सिवाय चांडालों के। चांडाल जो खराब खाना खाते थे वे गाँव के बाहर रहते थे। शराब और माँस के लिए भगवन्त की भाषा में कहूँ- दारुड़ा, मारुड़ा के चक्कर में राजाओं के राज्य चले गये।

भारत में सोने की नगरी या तो लंका थी या द्वारिका। लंका का विनाश परनारी के कारण हुआ तो द्वारिका शराब के कारण नष्ट हुई। रावण हजार विद्याओं का स्वामी था और श्रीकृष्ण वासुदेव की सेवा में १६ हजार देवता थे, फिर भी लंका और द्वारिका को वे बचा नहीं सके।

शराब बुराइयों की जड़ है। अच्छे-अच्छे लोग कहते हैं इसमें क्या, यह तो पानी है। मैंने सुना- बैल पर लकड़ी का ठसका लगाया जाता है तब वह आवेश में आकर तेज चलता है। घोड़ा चाबुक से गति बढ़ाता है, हाथी अंकुश से सही मार्ग पर चलाया जाता है तो शेर हंटर के डर से आग में से भी निकल जाता है, विद्यार्थी शिक्षक के भय से अधिक पढ़ता है, आप संतों की प्रेरणा पाकर धर्म-साधना करते हैं वैसे ही भंगेड़ी, शराबी, अमल खाने वाले लोगों को इनके नशे में आवेश आता है। वे अधिक सक्रिय होते हैं, किन्तु कुछ देर के पश्चात् नशा उतरते ही मृत प्रायः हो जाते हैं। यह नशे का आवेग है जो शरीर की भीतरी शक्ति ऊर्जा को नष्ट कर व्यक्ति को शक्तिहीन बना देता है। बैल डंडे से, घोड़ा चाबुक से दौड़ता है। कई लोग हैं जो शराब से, अमल से, भांग से दौड़ते हैं। उनका कहना है पीने से कुछ शक्ति आ जाती है नहीं तो वे मृत प्रायः हो जाते हैं।

एक भाई से सुना- पीते हैं तो एकाग्रता ज्यादा रहती है, ध्यान अच्छा लगता है। उसने भले ही कह दिया, पर मैंने सुना है-

वैकल्यं धरणीपातमयथोचितजल्पनं।
सन्निपातस्य चिह्नानि मद्यं सर्वाणि दर्शयेत्॥

कहते हैं सन्निपात रोग वाले के वात-पित्त और कफ तीनों बढ़ते हैं। जो चिह्न सन्निपात के रोगी में दिखाई देते हैं वे शराबी में देखे जा सकते हैं। वह वैकल्यंयुक्त यानी उन्मादी हो जाता है। उस पर पागलपन सवार हो जाता है। सन्निपात में क्या होता है? मैं उसे मूड ऑफ नहीं कह रहा, हाफ माइन्ड, क्रेक माइन्ड भी नहीं कह रहा। शराबी में मेडनेस अर्थात् उन्माद आता है। दूसरी बात उसको चक्कर आते हैं, वह धरती पर धड़ाम से गिर जाता है। सन्निपात के रोगी को भी

चक्कर आते हैं। 'अयथोचित जल्पनं' वह असम्बद्ध अनर्गल, निरर्थक प्रलाप करने वाला होता है। बोलना क्या, और बोल क्या जाता है। आप बात पूछेंगे भारत की वह जवाब देगा अमेरिका का।

शराब विकार बढ़ाती है। शराब जुआ खेलना सिखाती है। शराब व्यभिचार बढ़ाती है। कौनसा ऐसा दुर्गुण है जो शराबी में नहीं आता? आज जितनी अधिक मात्रा में असमय में प्राण हत्याएँ हो रही हैं, जिन्हें आप एक्सीडेन्ट कह रहे हैं उनका मूल कारण कई बार यह शराब होती है।

आप कई जगह बिजली के खंभों पर डेंजर लिखा देखते हैं, कहीं डेंजर नहीं भी लिखा है तो भी आप ध्यान रखते हैं। बिजली के तार कोई छूता है? गुटखा, सिगरेट, बीड़ी, शराब की बोतल पर डेंजर लिखा रहता है। क्या डेंजर-डेंजर में फर्क है। एक झटके से मारता है, एक धीरे-धीरे मारता है।

मैंने दो दिन पहले कहा था- पहले आप शराब पीते हैं फिर शराब आपको पीती है। पहले आप गुटखा खाते हैं फिर गुटखा आपको खाता है। **'अद्यते च भूतैः इति अन्नं।'** कहते हैं- जो जीव के द्वारा खाया जाता है वह अन्न है। दूसरी परिभाषा के अनुसार **'अत्ति च भूतानि इति अन्नं।'** अर्थात् जो जीव को खा जाता है, ऐसा अन्न अभक्ष्य होता है। यह अभक्ष्य आप नहीं खा रहे, अभक्ष्य आपको खा रहा है। रावण को देखकर कोई सदाचारी बना हो, मैं नहीं जानता। शरद पंवार के खुद पर बीती तो महाराष्ट्र में गुटखा बंद हो गया। अभी दबी जुबान से बंद हुआ है। गुटखे बनाने वाले कहते हैं इससे लाखों आदमी बेरोजगार हो जायेंगे। उनको दूसरों के जीवन से कोई मतलब नहीं दुनियाँ डूबती है तो डूबे। शायद आज ऐसे ही प्रजाजन हैं और ऐसी ही सरकार। कोई सरकारी अफसर यहाँ बैठे हों तो चिंतन करें।

आज गाय का माँस निर्यात हो रहा है। कहाँ से? जो देश अहिंसा से स्वतंत्र हुआ उस देश में गो हत्याएँ होती हैं, गोमाँस निर्यात किया जाता है। मैं एक दिन कह गया- नौरतनमल जी सिंघवी जो प्रोफेसर हैं, कह रहे थे- महाराज! मैं तीन इस्लामी देशों में घूम कर आया हूँ। वहाँ कोई रात को नहीं खाता। होटल भी बंद हो जाते हैं। जो स्थिति भारत में पहले थी वह आज विदेशों में हो रही है। आज भी कई देश हैं, जहाँ सड़क पर अखबार पड़े हैं जितने अखबार वहाँ से जायेंगे उतने पैसे वहाँ रखे मिल जायेंगे। भारत में ऐसा करें तो? अरे यहाँ अखबार क्या कार छोड़कर देखो वह भी नहीं मिलेगी। एक समय था किसी की मोहरें कुएँ पर रह गई, दूसरे ने देखा तो पहचान कर

उसके घर पहुँचा दी। आज क्या स्थिति है? अभी सुना कि सत्तर रुपये की पायल के लिए १८ महीने की बच्ची की जान ले ली।

भारत का चारित्र क्या था, आज कैसी स्थिति है, यह सोचता हूँ कि इन धर्मियों को सामायिक-स्वाध्याय की कहूँ उसके पहले नींव की बात कहूँ। आज नींव हिल रही है। जीवन में कितने-कितने विकार घर कर गए हैं? चारित्र को पहले ऊँचा उठाना होगा। आचार्य भगवन्त ने इसी चारित्र के लिए कहा-

सामायिक से जीवन सुधरे, जो अपनावेला।
निज सुधार से देश जाति सुधरी हो जावेला, करलो सामायिक.....
निर्व्यसनी हो प्रामाणिक हो, धोखा न किसी जन के संग हो।
संसार में पूजा पाना हो तो सामायिक साधन कर लो॥

कुछ भाई लोगों ने कहा- महाराज, आज रविवार है इसलिए व्यसन त्याग की बात पर बल दें। मन में खेद होता है कि मैं ये बातें किनके लिए कह रहा हूँ? जिस जैन धर्म में निर्व्यसनता समाज धर्म थी। जैसे पानी में मछली सहज गति करती है, आकाश में पक्षी सहज उड़ान भरता है वैसे ही जैन घर में शराब-माँस परस्त्रीगमन वर्जित था। भगवान् महावीर ने कहा-

तीहिं ठाणेहिं देवे पीडेज्जा- तंजहा-
माणुस्सजम्मं, आरियखेत्तं, सुकुलपच्चायाति॥

देवता चाहना करते हैं कि मुझे मनुष्य जन्म मिले, आर्यक्षेत्र मिले और उत्तम कुल मिले, मैं जैन के घर जन्म लूँ। देवता ऐसा क्यों चाहते हैं? आज मैं इन जैन अमीरों की क्या बात कहूँ? मैंने सुना पति-पत्नी आपस में बैठकर जुआ खेलते हैं। पहले सुनता था कि होली-दिवाली पर गंवार लोग जुआ खेला करते थे। मैं आपको बनिया कैसे कहूँ? कैसे कहूँ आप ओसवाल हैं ? जैन हैं ?

आज ये विकृतियाँ क्यों आ रही हैं? आपने एक सिद्धान्त बना लिया- जैसे तैसे पैसा मिलाओ, धन मिलाओ। चाहे वह अन्याय-अनीति से ही क्यों न हो। न्यायाधिपति जसराज जी चौपड़ा कहते हैं कि अन्याय से उपार्जित धन या तो वकील खाता है या डाक्टर खाता है। पहले बेईमानी से कमाओं फिर वकील या डाक्टर को दो, इससे क्या फायदा? अन्याय से उपार्जित धन तन बिगाड़ेगा, मन बिगाड़ेगा, पीढ़ी बिगाड़ेगा और जन्म बिगाड़ेगा। इससे तो अच्छा लूखी-सूखी खाय के ठण्डा पानी पीव। ईमानदारी से, मेहनत से दाल रोटी भी खाते हैं तो वह श्रेष्ठ है। हमारे प्रमोदमुनि

जी कई बार जिनका नाम लेते हैं बाबूसाहब श्रीचंद जी गोलेछा, मैंने सुना पचास साल पहले उन्होंने लाखों रुपये दिये। अपने जीवन में वे वर्षो तक दाल रोटी खाते रहे, अन्य वस्तु की कभी इच्छा नहीं की।

आज आपके न जाने क्या-क्या चलता है? एक-एक व्यसन कितना दुःखदायी है। शक्तिशाली पांडवों को इस जुए के कारण वनवास जाना पड़ा। अयोध्या का राज्य करने वाले राजा नल और रानी दमयन्ती को जंगल में जाना पड़ा। मैं माँस खाने वालों की क्या कहूँ- कभी सार्वजनिक व्याख्यान में हिन्दू भी थे तो मुस्लिम भी थे। एक मुस्लिम भाई ने खड़े होकर कहा- महाराज! हमको क्या कहते हो ? अण्डे तो इन हिन्दुओं ने महंगे कर दिये। मैं हिन्दू शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, आगे नहीं बढ़ रहा।

खाने की बुभुक्षा ने आदमी को कहाँ पहुँचा दिया? आज कई हैं जो छुप-छुपकर माँसाहार कर रहे हैं। एक अखबार में पढ़ने को मिला आज तो आदमी का माँस खाया जा रहा है। ताज्जुब होता है खाने वाला आदमी है या राक्षस।

आज कई हैं जो कहते हैं एक बार किसी पदार्थ को टेस्ट करके देखना चाहिये। आपको अभक्ष्य खाने की मन में क्यों आई, मैं पूछूँ- आपको कभी महाराज बनने की मन में आई क्या? कभी बने नहीं तो एक बार बनकर देखना चाहिये। एक भाई आया- महाराज! मैं खाता तो नहीं पर एक बार गुटखे का स्वाद कैसा है बस, यही देखना है। मैंने कहा-भाई! एक बार गटर का पानी पीकर भी देख लेना।

आप बुभुक्षुपन हटाइये, मुमुक्षुपन जगाइये। आप सद्आचरण पर चलकर जीवन आगे बढ़ायेंगे तो सुख-शांति प्राप्त कर सकेंगे। इसी भावना के साथ...

अहंकृति का ऐसा चातुर्य है कि किसी ना किसी रूप में किसी ना किसी बहाने से वह जीव पर हावी हो जाती है। यह ऐसा मीठा जहर है- कि खाते वक्त अच्छा लगता है। उसमें किंचिद् भी खोट नजर नहीं आती- कान के माध्यम से जीव उसी (प्रशंसा) को सुनने को लालायित बना रहता है।

सतत जागृति बिना संभव ही नहीं कि इस दूषण को भी जीव जान सके, अतः कहा गया उवकसणं जलणं....पहले उत्कर्ष मान को कह दिया।

उत्कर्ष में पर का अपकर्ष निहित ही है और दूसरे को नीचा दिखाने के प्रयास में इस जीव को नीचे गिरना पड़ता है।

-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचन से संकलित

शोधालेख

जैन धर्म का उन्नायक : मौर्य नरेश 'सम्प्रति'

डॉ. एन.के. शर्मा

जैन और बौद्ध अनुश्रुतियों के अनुसार 'सम्प्रति' कुणाल का पुत्र था, लेकिन पुराणों में उसे दशरथ का पुत्र कहा गया है। क्योंकि अशोक के समय में सम्प्रति ने युवराज के पद पर कार्य किया था, अतः उसे दशरथ का पुत्र मानना युक्तियुक्त नहीं होगा। वस्तुतः सम्प्रति कुणाल का ही पुत्र था और चिरकाल से मौर्य साम्राज्य का संचालन कर रहा था। कुणाल के समय में वही साम्राज्य का वास्तविक शासक था। जैन ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि अशोक के बाद उसका पौत्र 'सम्प्रति' ही मगध साम्राज्य का प्रमुख सूत्रधार बना था। २२३ ई.पू. में वह मौर्य साम्राज्य का अधिपति बना।

जैन अनुश्रुतियों में सम्प्रति का वही स्थान है जो बौद्ध अनुश्रुतियों में अशोक का है। जैन साहित्य के अनुसार सम्प्रति जैन धर्म का अनुयायी था और उसने अपने धर्म का प्रचार करने के लिये बहुत प्रयत्न किया था। जैन ग्रन्थों में यह भी कहा गया है कि राजा सम्प्रति 'त्रिखण्डभरताधिप' था। उसके शासनकाल में मौर्यवंश अपने उत्कर्ष की चरम सीमा को पहुँच गया था। प्राचीन जैन अनुश्रुतियों में मौर्यवंश की तुलना यव (जौ) के दाने के साथ की गई है। जैसे यव का मध्य भाग मोटा होता है और उसके दोनों सिरे पतले होते हैं, वैसे ही मौर्यवंश प्रारम्भ और अन्त में शक्तिहीन था और मध्य के काल में बहुत अधिक शक्तिशाली था। जैन ग्रन्थों के अनुसार मौर्य राजाओं में 'सम्प्रति' सर्वश्रेष्ठ था। उसके पश्चात् मौर्यवंश की शक्ति क्षीण होने लगी। इस प्रकार यव के दाने में जो स्थिति मध्य भाग की होती है, वही मौर्यवंश के राजाओं में सम्प्रति की थी।[1] परन्तु सम्प्रति को जैन ग्रन्थों में जो 'सर्वोत्कृष्ट' तथा 'यवमध्यकल्प' कहा गया है, उसका कारण सम्भवतः उसके साम्राज्य की विशालता न होकर उसका जैनधर्म का प्रबल समर्थक एवं संरक्षक होना था। जहाँ जैन ग्रन्थों में सम्प्रति को 'सर्वोत्कृष्ट' कहा गया है, वहाँ अशोक कै लिये 'बृहत्तम' विशेषण का प्रयोग किया गया है। इससे यही परिणाम निकाला जा सकता है कि यद्यपि सम्प्रति मौर्य राजाओं में सर्वश्रेष्ठ था, पर साम्राज्य की दृष्टि

से अशोक का शासन बृहत्तम क्षेत्र में विस्तृत था।

जैनधर्म के प्रचार के लिये जो कार्य राजा सम्प्रति द्वारा किये गये, प्राचीन जैन ग्रन्थों में उनका उल्लेख विद्यमान है। सम्प्रति ने आचार्य सुहस्ति से जैनधर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। परिशिष्ट पर्व और बृहत्कल्प सूत्र जैसे जैन ग्रन्थों के अनुसार एक समय उज्जयिनी नगरी में जीवन्त स्वामी की प्रतिमा की रथयात्रा निकल रही थी और आचार्य सुहस्ति उसके साथ रथयात्रा में जा रहे थे। जब यह रथयात्रा राजप्रासाद के सम्मुख आयी, तो राजा सम्प्रति की दृष्टि सुहस्ति पर पड़ी। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सुहस्ति से भलीभाँति परिचित हैं, पर यह परिचय कब और कहाँ हुआ, इसका उन्हें स्मरण नहीं आया। सोचते-सोचते राजा सम्प्रति मूर्च्छित हो गया। जब उनकी मूर्च्छा भंग हुई, तो उसे स्मरण आया कि सुहस्ति से उसकी भेंट पिछले जन्म में हुई थी। सुहस्ति भी राजा को देखकर पहचान गया और उसने यह बताया कि पिछले जन्म में सम्प्रति कौशाम्बी में भीख माँगकर अपना निर्वाह किया करता था। सुहस्ति की प्रेरणा से उसने जैनधर्म को स्वीकार कर लिया था और मृत्यु के पश्चात् अब उस रंक ने कुणाल के घर में जन्म लिया है। कौशाम्बी का वह रंक ही अब सम्प्रति के रूप में उज्जयिनी के राजसिंहासन पर आरूढ़ है। सुहस्ति के बताने से सम्प्रति को भी अपने पूर्व जन्म की सभी बातें याद आ गयीं और उसने इस बात को स्वीकार किया कि इस जन्म में उसे जो भी सुख-समृद्धि एवं राजसुख प्राप्त हैं, वे सब आचार्य सुहस्ति की कृपा और जैनधर्म की महिमा के कारण हैं। उसने हाथ जोड़कर सुहस्ति से प्रार्थना की कि पिछले जन्म के समान इस जन्म में भी आप मेरे गुरु बनना स्वीकार करें और मुझे अपना धर्मपुत्र समझ कर कर्त्तव्य की शिक्षा दें। इस पर सुहस्ति ने सम्प्रति को जैन धर्म की दीक्षा दी और अणुव्रत, गुणव्रत आदि उन व्रतों का उपदेश दिया, जिनका पालन उसे श्रावक के रूप में करना चाहिये।[२]

जैनधर्म की दीक्षा लेकर सम्प्रति ने अपने धर्म के प्रचार के लिये जो प्रयत्न किये, उनका भी परिशिष्टपर्व आदि ग्रन्थों में वर्णन किया गया है। परिशिष्टपर्व के अनुसार एक बार रात्रि के समय सम्प्रति के मन में यह बात आयी कि अनार्य देशों में भी जैनधर्म का प्रचार किया जाना चाहिये, ताकि जैन साधु वहाँ भी स्वतन्त्र रूप से विचरण कर सकें। यह सोचकर उसने ऐसे अनार्य देशों

को, जो कि उसे कर प्रदान करते थे और उसके अधीन थे, यह आदेश दिया कि मेरे द्वारा भेजे गए पुरुष(राजपुरुष)जैसा मार्ग प्रदर्शित करें, वैसा किया जाय। यह आदेश प्रदान कर राजा सम्प्रति ने अपने राजपुरुषों को साधुओं के वेश में अनार्य देशों में भेजा। इन राजपुरुषों ने राजा सम्प्रति के प्रभाव से शीघ्र ही अनार्य देशों के निवासियों को जैनधर्म का अनुयायी बना लिया। इन लोगों को सम्प्रति के कोप का भय था और वे उसे संतुष्ट रखने के लिये पूर्णतया उद्यत थे। अतः उन्होंने वही किया, जिनका आदेश उन्हें राजपुरुषों द्वारा प्रदान किया गया था। ये अनार्य देश कौनसे थे, जहाँ सम्प्रति ने उद्योग किया था, इसका विवरण भी परिशिष्टपर्व में विद्यमान है। उसके अनुसार आन्ध्र और द्रमिल (द्रविड़)आदि देशों में सम्प्रति द्वारा धर्मप्रचारक भेजे गये थे।[३] दक्षिणी भारत में जैनधर्म का जो प्रसार हुआ, उसका प्रधान श्रेय राजा सम्प्रति को ही दिया जाता है।

जैनधर्म के प्रचार के लिये राजा सम्प्रति ने अन्य भी अनेक कार्य किये। उज्जयिनी नगरी के चारों मुख्य द्वारों पर उसकी ओर से महासत्रों की स्थापना की गई। कौन अपना है और कौन पराया, इसका कोई भी भेदभाव वहाँ नहीं किया जाता था और कोई भी इन महासत्रों से भोजन प्राप्त कर सकता था। सम्प्रति ने व्यापारियों को यह भी आदेश दिया कि साधु लोग तेल, अन्न, दधि, वस्त्र आदि जो कुछ भी ग्रहण करना चाहें, उन्हें मुफ्त दे दिया जाय और उसका मूल्य राजकोश से प्राप्त कर लिया जाय।[४]

जैनधर्म के उत्कर्ष और प्रचार के लिये जो कार्य राजा सम्प्रति द्वारा किये गये, उनका उल्लेख अन्य जैनग्रन्थों में भी पाया जाता है। विविध तीर्थकल्प ग्रन्थ के अन्तर्गत पाटलिपुत्र नगर-कल्प में राजा सम्प्रति के लिये निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग किया गया है- 'त्रिखण्डभरताधिप' या 'भारत के तीन खण्डों का स्वामी', 'परम अर्हत्', 'अनार्यदेशेष्वपिप्रवर्तितश्रमणविहार' अर्थात् जिसने अनार्य देशों में भी श्रमणों (जैन साधुओं) के विचरण को प्रवृत्त किया और महाराज आदि। निस्सन्देह ये विशेषण जैनधर्म के इतिहास में सम्प्रति के स्थान को स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त हैं।

बृहत्कल्पसूत्र और उसकी टीका में भी सम्प्रति के उन कार्यों का उल्लेख है जिन्हें उसने जैनधर्म के प्रचार के लिये किया था। ये कार्य निम्नलिखित थे- १. उसने नगर के चारों द्वारों पर दान की व्यवस्था की २.

वणिजों और विवणिजों द्वारा साधुओं को वस्त्रादि वस्तुएँ मूल्य के बिना देने का प्रबन्ध किया। जो दुकान पर बैठकर माल बेचते हैं, उनके लिये 'वणिज' शब्द प्रयुक्त किया गया है और जो दुकान न होने पर किसी ऊँचे स्थान पर बैठकर माल बेचें, उन्हें 'विवणिज' कहा गया है। ३. प्रत्यन्त या सीमान्त देशों के शासक राजाओं को बुलाकर उन्हें विस्तार के साथ धर्म को बताया गया और उनसे अनुरोध किया गया कि स्वदेश लौटने के अनन्तर वे भी श्रमणों के प्रति भक्तिभाव रखें। राजा सम्प्रति से ऐसी शिक्षा प्राप्त कर सीमान्त देशों के राजा अपने-अपने राज्यों में लौट गये। वहाँ जाकर उन्होंने चैत्यगृहों का निर्माण कराया और धर्म की घोषणा की। सीमान्त देश भी ऐसे हो गये, जिनमें साधु सुखपूर्वक विचरण कर सकते थे। सम्प्रति ने साधुओं से कहा- "आप सीमान्त देशों में जाइये और धर्मकथा प्रवचन करते हुए वहाँ परिभ्रमण कीजिये।" इस पर साधुओं ने कहा- "राजन्! इन देशों के निवासी यह नहीं जानते कि कौन-से वस्त्र, भोजन, पात्र आदि साधुओं के योग्य हैं और कौन-से नहीं। इस दशा में हम इन देशों में कैसे विचरण कर सकते हैं?" यह सुनकर सम्प्रति ने अपने भटों (सैनिकों) को साधुओं के वेश में प्रत्यन्त देशों में भेजा। उन्हें यह समझा दिया गया कि वहाँ जाकर उन्हें क्या करना है। श्रमणों का वेश धारण किये हुए उन सैनिकों ने प्रत्यन्त देशों में जाकर शुद्ध आहार आदि ग्रहण करना प्रारम्भ किया और वहाँ के निवासियों को साधुओं की विधि एवं मर्यादाओं का ज्ञान कराया। इसके परिणामस्वरूप ये सभी राज्य साधुओं के विचरण के योग्य हो गये। राजा सम्प्रति के काल से ही ये सब प्रत्यन्त देश 'भद्रक' (जिनमें भद्र आहार-व्यवहार प्रचलित हों) हो गये हैं।[५]

परिशिष्ट पर्व में केवल आन्ध्र और द्रविड़ देशों का ही ऐसे प्रत्यन्त राज्यों के रूप में उल्लेख है, जिन्हें राजा सम्प्रति ने विहार योग्य किया था। लेकिन बृहत्कल्पसूत्र की टीका में आन्ध्र और द्रविड़ के अतिरिक्त महाराष्ट्र और कुडुक्क को भी इन प्रत्यन्त देशों में परिगणित किया गया है। पहले ये प्रत्यन्त देश 'घोर' एवं 'प्रत्यपायबहुल' (जिनमें अनेक विपत्तियों का प्राचुर्य हो) थे, पर सम्प्रति के प्रयत्न से ये सब 'साधुसुखप्रचार' हो गये।[६]

राजशक्ति का प्रयोग कर राजा सम्प्रति ने साधुओं को इतनी अधिक सुविधाएँ दे दी थीं, जिसके कारण वे सम्प्रति के राज्य में प्रत्येक वस्तु

स्वेच्छानुसार व्यापारियों से प्राप्त कर सकते थे। प्रत्यन्त देशों में भी उनके लिये साधुवेश में रहते हुए सैनिकों द्वारा नानाविध सुख-सुविधाएँ जुटा दी गई थीं, जिसे अनेक जैन आचार्यों ने पसन्द नहीं किया। सुहस्ति के एक साथी महागिरि ने सुहस्ती से इसका कारण पूछा। यह जानते हुए भी कि इस ढग से अन्न-वस्त्र ग्रहण करना साधु के लिये अनुचित है, सम्प्रति से स्नेह होने के कारण सुहस्ति ने उसका समर्थन किया। इस पर महागिरि ने सुहस्ति से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।[७]

सम्प्रति ने अपने राज्य एवं प्रत्यन्त देशों में बहुत से जैन चैत्यों, मन्दिरों तथा मठों का निर्माण कराया था। परिशिष्ट पर्व के अनुसार राजा सम्प्रति ने त्रिखण्डभरतक्षेत्र (भारत) को जिनायतनों (जैन मन्दिरों) से मण्डित कर दिया था।[८] पाटलिपुत्र नगरकल्प में सम्प्रति का एक विशेषण 'प्रवर्तितश्रमणविहारः' दिया गया है, जिससे ज्ञात होता है कि उसके द्वारा श्रमणों के निवास के लिये बहुत-से विहारों का निर्माण कराया गया था। कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका के अनुसार राजा सम्प्रति ने सवा करोड़ जिनालयों (जैन मन्दिरों) का निर्माण कराया था।[९] इस कथन में अतिशयोक्ति अवश्य है, पर इसमें संदेह नहीं कि सम्प्रति के द्वारा बहुत-से जैन मन्दिरों का निर्माण करवाया गया था। आज भी ऐसे अनेक मन्दिर हैं जिनके निर्माण का श्रेय राजा सम्प्रति को दिया जाता है। स्मिथ ने लिखा है कि जिस किसी भी प्राचीन जैन मन्दिर एवं अन्य कृतियों की उत्पत्ति एवं निर्माण अज्ञात हो, लोग उसे सम्प्रति द्वारा निर्मित बता देते हैं। टॉड के अनुसार राजस्थान और सौराष्ट्र (काठियावाड़) में जितने भी प्राचीन जैन मन्दिर हैं, उन सबके विषय में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि उनका निर्माण राजा सम्प्रति द्वारा कराया गया था। लेकिन यह सत्य है कि सम्प्रति जैन धर्म का प्रबल समर्थक तथा संरक्षक था और उसने बहुत से जैन मन्दिरों का निर्माण कराया था।

संदर्भ

१. बृहत्कल्पसूत्र, गाथा ३२७८
२. परिशिष्ट पर्व ११.२३-६४
३. वही, ११.८९-९९
४. वही, ११.११०-१११
५. बृहत्कल्पसूत्र, गाथा ३२८३-८७

६. वही, ३२८९

७. परिशिष्ट पर्व, एकादश सर्ग

८. वही, ११/६५

९. कल्पसूत्र, सुबोधिनी टीका सूत्र ६

-एसोशिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

दीक्षा के अवसर पर

संयम का ये पथ

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

(तर्ज- बाबुल का ये घर...)

संयम का ये पथ भैया(बहना), तुम्हें प्राणों से निभाना है।
चलना है खांडे की धार, आगे बढ़ते ही जाना है।।टेर।।

गुरुओं की सेवा में, विनय भाव बढ़ाना है।
समता में रमे रहना, आगम आज्ञा निभाना है।।१।।

चौथे आरे जैसा ही, संयम दीपाना है।
धन्ना जम्बु की यादें, हर दिल में जगाना है।।२।।

हस्ती-हीरा-मान गुरु का, तुम्हें मान बढ़ाना है।
रत्नसंघ बगिया को, सद्गुण से महकाना है।।३।।

वीरों का मारग है, कायर का काम नहीं।
धन्य शत बार तुम्हें, संयम महिमा बढ़ाना है।।४।।

संयम ही जीवन है, संयम है मार्ग सच्चा।
गौतम से प्रभु कहते, संयम सुख का खजाना है।।५।।

-दिनांक ३.५.०६ को दीक्षा महोत्सव के अवसर पर उच्चरित भजन

जैनदर्शन की वैज्ञानिक समीक्षा और शोध की आवश्यकता

डॉ. जीवराज जैन

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद

ऐसा प्रतीत होता है कि विश्व का हर समाज अपने आपको आधुनिक कहलाने की होड़ में है। शिक्षा के प्रसार से तथा नये उपलब्ध होने वाले भौतिक उपकरणों से वैज्ञानिक क्रांति की संभावनाएँ बढ़ी हैं। युवा पीढ़ी न केवल आधुनिक बन रही है, बल्कि उसकी सोच भी वैज्ञानिक बन रही है। हमारी आसपास की घटानाओं को, हमारे दर्शन के चिन्तन को वैज्ञानिक तरीकों से देखने और परखने का प्रयास बढ़ा है। सामूहिक चेतना में जागृति बढ़ी है। सत्य के विभिन्न आयामों से साक्षात्कार करने का झुकाव बढ़ रहा है। यह सब शुभ संकेत है।

जैन दर्शन को परम्परागत तरीकों से समझने वाली पीढ़ी के बीच रहते हुए यदि हम उसको वैज्ञानिक आधार से समझने का प्रयास करते हैं तो यह जिनशासन की प्रभावना ही होगी, रूढिवादिता हटेगी, अज्ञान मिटेगा। दर्शन की गूढता को समझने और समझाने वाली पीढ़ी के लोग अपनी परम्परागत सीमाओं को भली प्रकार जानते हैं। उनकी तीव्र आकांक्षा रहती है कि 'विज्ञान' भी उनके दर्शन को भलीभाँति समझे, जिससे हम अपने दर्शन की सार्वभौमता तथा उसके सर्वज्ञों द्वारा कथित होने का प्रमाण सम्यक् रूप से प्रस्तुत कर सकें। इस सोच के फलस्वरूप 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' जैसा एक विषय उभर कर सामने आया है। इसको विश्व स्तर पर प्रसारित करने की प्रासंगिकता कई प्रबुद्ध मनीषियों ने महसूस की है। इससे न केवल आज के संत्रस्त राष्ट्रों को अपने ही बुने मायाजाल से निकलने की वैचारिक संबलता व मार्गदर्शन मिलेगा, बल्कि आधुनिक विज्ञान भी इस प्राचीन व शाश्वत दर्शन की सहायता से अपनी अस्पष्ट सीमाओं से बाहर आने में व अधूरी खोजों की भूल-भूलैया से निकलने में सहयोग लेते हुए अरूपी आत्म-तत्त्व के दर्शन करने का साहस जुटा सकेगा।

शोध संस्थाएँ व शोध के विषय

जैन जीव-विज्ञान और कर्म-सिद्धान्त का एक विशाल क्षेत्र जिज्ञासुओं का

आह्वान कर रहा है कि कर्म-सिद्धान्त की समीचीन वैज्ञानिक शोध और व्याख्या की जाय। मन और भावना के, व्यक्तित्व पर प्रभाव की प्रक्रिया को समझकर उसके नियंत्रण की वैज्ञानिक कुंजी अपने हाथ में ली जाये, जिससे व्यक्ति दूसरे के लिए सहायक व लाभप्रद बन सके।

जैन विज्ञान को समझने का प्रयास कई प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने शुरू किया है। जैसे-जैसे यह जैन दर्शन अन्य राष्ट्रों में खासकर जर्मन,इंग्लैण्ड व अमेरिका में प्रसारित होता है, वैसे-वैसे इसकी वैज्ञानिकता को समझने की उत्कंठा व प्रयास बढ़ रहा है। यह स्थिति एक बहुत बड़ी व सामयिक चुनौती प्रस्तुत करती है। आवश्यकता है समुचित एकीकरण और प्रोत्साहन की, जिससे ऐसे प्रयासों की व्यापकता बढ़ाने की गति तीव्र हो सके।

देश में बीसियों शोध संस्थान स्थापित हैं। जैनदर्शन के कुछ पहलुओं पर परम्परागत व ढांचागत शोध इनमें होती रहती है। लेकिन उसकी सामाजिक उपयोगिता पर कोई चिन्तन नहीं है। इनमें वैज्ञानिक शोध का सर्वथा अभाव रहता है। विज्ञान के छात्रों की भागीदारी नहीं के बराबर है। शोध संस्थानों को सरकारी अनुदान भी प्राप्त होता है। प्रायः सभी की इतनी समस्याएँ हैं- प्रशासनिक से लेकर, अच्छे शोधार्थियों की कमी तक, कि वे कोई वैज्ञानिक शोध के बारे में सोचते ही नहीं हैं। 'जैन विश्व भारती' (लाडनूँ) का प्रारूप इस दिशा में कुछ काम करने लायक प्रतीत होता है। पार्श्वनाथ विद्याश्रम, बनारस आदि तो उपर्युक्त समस्याओं से समान रूप से ग्रसित हैं। इस पर अलग से चिंतन और पुरुषार्थ की जरूरत है।

आगमविद् और वैज्ञानिक की सहभागिता

विज्ञान का कार्यक्षेत्र तथा उसके उपकरण व संसाधन पिछले कुछ दशकों में आशातीत रूप से बढ़ गये हैं। नयी क्षमता वाले, बहुत परिष्कृत उपकरण उपलब्ध हो रहे हैं। विश्वविद्यालयों व प्रयोगशालाओं में कार्यरत वैज्ञानिकों ने भी जैन-विज्ञान को समझने के प्रयास शुरू किये हैं। आवश्यकता है इन सबको योजनाबद्ध तरीके से, सामूहिक रूप से आगे बढ़ाने की। इसके दो पहलू हैं। पहला है आगम वर्णित दर्शन व विज्ञान तथा उनका सम्यक् ज्ञान होना। इनकी गूढता को समझने में एक विशिष्ट समुदाय की आवश्यकता है। इसके लिए गृहस्थ विशेषज्ञों के अलावा हमारे पास एक बहुत बड़ा साधु-समाज उपलब्ध है। ये विहार करते हुए भी शोधकर्ताओं को संदर्भ के रूप में उपलब्ध रहते हैं।

ऐसे पंडित साधु, जो आगमों का सूक्ष्म व सटीक विवेचन कर सकते हैं,

शायद संख्या में ज्यादा नहीं हैं। उनको चिह्नित कर श्रावक लोग, उनकी उपलब्धता ऐसी योजनाओं में बढ़ा सकते हैं। यह संभावना बराबर रहेगी कि आगम की पुरानी टीकाओं में जो आशय या विवेचन दिया गया है, वह आशय नई खोजों के परिप्रेक्ष्य में इन साधुओं की सम्मति से नया रूप ले सकता है।

दूसरा पक्ष है वैज्ञानिकों का। चूंकि वे अपने कार्यक्षेत्र में इतने व्यस्त हैं कि आगमों का सूक्ष्म व गहन ज्ञान प्राप्त करना उनके स्वयं के लिए मुश्किल रहता है। आगम में प्रतिपादित विषय साधारणतया विज्ञान के बहुआयामी व बहुसंकायिक विषय बनते हैं। अतः विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक जिस क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं, वे जब आगम के किसी विशेष पहलू का अध्ययन व विवेचन वैज्ञानिक ढंग से करना चाहते हैं, या नये परिप्रेक्ष्य में चिंतन करते हैं तो उनको आगमविद् साधुओं की आवश्यकता रहती है। उन साधुओं से अपेक्षा कर सकते हैं कि वे उस पहलू को विभिन्न दृष्टिकोणों से व विभिन्न 'नय' से समझाने में सक्षम रहेंगे। फिर संबंधित आगम की टीकाएँ भी उपलब्ध हो सकती हैं।

इस तरह आगमविदों व वैज्ञानिकों की प्रभावी सहभागिता अपेक्षित है। अवकाश प्राप्त (रिटायर्ड) होते ही ये वैज्ञानिक लोग ज्यादा समय दे सकते हैं तथा शोध-योजनाओं को तीव्र गति प्रदान कर सकते हैं। वैज्ञानिक लोग कम समय में कोई भी आगमिक जानकारी, सरल भाषा में, मर्मज्ञ साधुओं से प्राप्त कर सकते हैं। यह वैज्ञानिकों के लिए एक बहुत बड़ी सुविधा होगी। इसके उपयोग के लिए साधुवर्ग को अपना अमूल्य समय सहर्ष देना चाहिए। उनकी अपनी कुछ सीमाएँ जरूर हैं, लेकिन यदि उनके आसपास के श्रावक जागरुक रहकर अपना सहयोग व समय सही रूप से आगे बढ़कर दें तो यह काम आसानी से सफलतापूर्वक हो सकता है। समाज इसको अपने उत्तरदायित्व के रूप में समझे।

सहयोग के आयाम

१. आजकल बहुत सारे आगमिक विषयों पर प्रचुर साहित्य उपलब्ध हो रहा है। बहुत सारे संस्थानों ने अपने यहाँ उपलब्ध साहित्य को सूचीबद्ध कर रखा है। विषयवार सूचियाँ भी उपलब्ध कराते हैं। इससे सही जानकारी जल्दी हासिल करने में मदद मिलती है।

२. इंटरनेट इस क्षेत्र में क्रांतिकारी है। ये सूची पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध होने शुरु हो गये हैं। लेकिन शोध संस्थाओं को अगला कदम शीघ्र ही उठाना चाहिए और वह है हर साहित्य या ग्रन्थ के सारांश को संकेत शब्दों में उपलब्ध कराना। इसके माध्यम से

विश्व में कहीं भी अवस्थित शोधार्थी अपने विषय के साहित्य का निरीक्षण कर सकता है। इस विश्वस्तर के मानक को स्थापित करने में समाज को व शोधसंस्थाओं को पहल करनी चाहिए। ऐसी योजनाओं को प्रोत्साहन व परिबल प्रदान करने के लिए प्रबुद्ध चिंतकों को आगे आना चाहिए।

३. कुछ वैज्ञानिक लोग भी साधु बने हैं। यह न केवल गौरव का विषय है बल्कि ऐसी योजनाओं में विशेष स्तम्भ रूप हैं। ऐसे साधुवृंद परिष्कृत चिंतन के धनी रहते हैं। ये किसी दुराग्रह से दूर रहते हैं। यह एक मजबूत सहारा है। वे वैज्ञानिकों से, एक ही तरंग-दैर्घ्य पर होने के कारण, आपसी विचार-विमर्श ज्यादा प्रभावक ढंग से करके निष्कर्ष निकाल सकते हैं। वैज्ञानिकों को गूढ़ से गूढ़ तथ्य भी वैज्ञानिक रूप से समझ में आ सकता है। इससे वस्तु विषय के हर पहलू का वैज्ञानिक आधार खोजने में, उनके चिन्तन को सही दिशा मिलेगी। यह एक अनुभव आधारित व्यावहारिक व्यवस्था है।

आगे के कार्य संपादन के लिए एक सर्वोच्च मंच से निम्नोक्त पहलुओं पर देशव्यापी प्रयास प्रारम्भ हों-

१. विभिन्न साधुवर्गों से सम्पर्क कर श्रेष्ठ व धुरन्धर आगमविदों की नामावली बनाना। उनका विशिष्ट क्षेत्र भी चिह्नित करना।

२. देश के प्रसिद्ध व उच्चकोटि के वैज्ञानिकों का आह्वान करना, जिनको जैन विज्ञान में शोध करने की रुचि हो। उनको प्रोत्साहित कर उनकी योजनाओं को चिह्नित करना। उनको नियमानुसार एक मंच पर लाकर आपसी सहयोग करना, संपर्क व संबल प्रदान करने की योजना बनाना।

३. विषयों का चुनाव। हर विषय के लिए सक्रिय लोगों की नामावली बनाना। योजनाबद्ध तरीके से आपसी संवाद, विचार-विमर्श बढ़ाना। संगोष्ठियों का आयोजन। क्रमबद्ध तरीकों से प्रगति का आकलन तथा उस पर आधारित समुचित दिशा निर्देश व प्रोत्साहन देना।

४. शोध-लेखों की अभिजात्य वर्ग से समीक्षा कराना, उनको शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाना, अपनी वेबसाइट पर उपलब्ध कराना।

५. इस दिशा में आचार्य पूज्य कनकनंदी जी व महाप्रज्ञ जी ने कुछ प्रयास किये हैं। उनके अनुभव का लाभ लेते हुए एक संगठित, सर्वोच्च मंच से उपर्युक्त अभियान व्यापक रूप से शुरु हो, ऐसी अपेक्षा है। समाज के ट्रस्टी आगे आयें।

संयम पथ की राहों में

श्री मनमोहनचन्द बाफना

कदम बढ़े जो आत्मार्थी के, संयम पथ की राहों में।
धर्म पताका जिनशासन की, गूंजे जय-जयकारों से।।टेर।।

चंदनबाला धन्ना के पथ, बढ़े हो सत्व विचारों से,
संयम पथ पर कदम बढ़े, जो खांडों की धारों से।
अरज करे हम 'ललित', 'सीमा' से, दीक्षार्थी वैरागी से,
गुरु सेवा में विनय भाव से, स्व आतम उद्धारों से।
बड़लू का है नाम दिपानां, पा रत्न भूमि की माटी से।।१।।

संयम के व्रत नियम लेकर, जीवन निर्मल जीना है,
नीरस सरस मिले जो गोचरी, दोष टाल कर लेना है।
कर्म काटते, जप-तप करके, आतम साज सजाना है,
राग-द्वेष की जंजीरों से, जीवन मुक्त बनाना है।
नई बयारे काँटे बिखरे, काँटे बुहार के चलने से।।२।।

पंच महाव्रत धारी बन के, हिंसा से दूर ही रहना है,
सत्य अचौर्य को जीवन में, पालन करते रहना है।
चौथे व्रत की प्रतिपालना, मन से कर दिखलाना है,
मूर्च्छा मन की हटा सभी से, अपरिग्रह मन रखना है।
चमक उठे ये जीवन, दर्शन-ज्ञान-चारित्र-तप चारों से।।३।।

भँवर हस्ती बड़लू के ये,कांकरिया कुल पाये हैं,
फिर प्रकाश पा भाई बहन ने, हीरा मान दुलारे हैं।
'ललित' बने गुरु मान शिष्य जो, गजब चमक मुख पाई है,
'सीमा' पाकर पुण्य प्रबल जो गुरु मैनासुन्दरी जी पाई है।
चन्द्रकला की छटा अनोखी, जोधपुर में छाँनें से।।४।।

प्रबल पुण्योदय भाई-बहन का, गुरु से अमृत पीना तुम,
हीरा-मान व संत-सती के, सेवाभाव में रहना तुम।
गणी रत्न की मर्यादा में, समिति-गुप्ति के धारक तुम,
'मन में मोह न' वास करे तो, जिनशासन चमकाना तुम।
आत्म चमक व त्रिरत्नों से, गुरु 'हस्ती' उपकारों से।।५।।

-प्रमोद दाल मिल, ११२/१०९, पोखरपुर, कानपुर(उ.प्र.)

सर्वाङ्गीण विकास का साधन : सामायिक व्रत(५)

श्री प्रेमचन्द कोठारी

सामायिक सविधि व निर्दोष करने से ही सामायिक का पूर्ण लाभ प्राप्त हो सकता है। जैसे सविधि काश्तकारी करने वाला काश्तकार खेती से पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकता है, सविधि हलवा या अन्य खाद्य पदार्थ बनाने वाली महिला सुस्वादिष्ट भोजन बनाती है। अगर हलवा बनाने में चीनी, आटा, घी, पानी आदि सब मिलाकर चूल्हे पर चढ़ा दें तो शायद सब खाद्य सामग्री ही विकृत व अखाद्य बन सकती है, हलवा बनाने के लिए पहले घी में आटा सेकना होगा, फिर उष्ण जल एवं चीनी मिलानी होगी। अतः हर कार्य की पूर्ण सफलता के लिए विधि का निर्वहन आवश्यक है। निर्दोष विधियुक्त सामायिक के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की अपेक्षा से विचार करना चाहिए-

द्रव्य से- सामायिक करने वाला व्यक्ति स्वयं एक द्रव्य है, अतः उसे सामायिक के पूर्व चंचलता, विषमता आदि से हटकर मन को शान्त, सरल एवं निर्मल बना लेना चाहिए। सामायिक में सहायक द्रव्य, वस्त्र, आसन, मुँहपत्ति, पूँजनी, पुस्तकें, माला आदि हैं, वस्त्र सादे सफेद हों (बहिनों के लिए सफेद संभव नहीं भी हों तो सादे अल्प मूल्य के हों, रेशमी चटकीले-भड़कीले नहीं होना चाहिए) चोलपट्टा या धोती में ही सामायिक करनी चाहिए। पेन्ट, पाजामा आदि में सामायिक नहीं हो (विवशता की परिस्थिति में अपवाद रूप करना पड़े तो वह अलग बात है, लेकिन विधि रूप तो धोती, चोलपट्टा ही होना चाहिए।) आवश्यक निर्युक्ति गाथा ८०२ में सामायिक करते समय श्रावक को साधु के समान बताया है। अतः हमारी वेशभूषा भी साधु जैसी ही होनी चाहिए अर्थात् एक मुहूर्त के लिए मैं भी अस्थायी साधु हो गया हूँ ऐसी मानसिकता प्राप्त करने में वेशभूषा भी सहायक होती है। सामायिक के प्रति अगर श्रद्धा होगी तो वेशभूषा एवं विधि विधानों की निर्दोषता पर भी पूरा ध्यान केन्द्रित रहेगा। जैसे कामदेव श्रावक को सामायिक-साधना पर पूर्ण श्रद्धा थी तो देव के कठोर एवं भयंकर उपसर्गों के सामने प्राणों की बाजी लगाकर भी उन्होंने निर्दोषता सुरक्षित रखी।

मुस्लिम भाई मस्जिद में मस्तक पर कपड़ा डाले बिना नहीं जाते,

गुरुद्वारे, गिरिजाघर में प्रवेश करने वालों को वहाँ की मर्यादा का ध्यान रखना होता है, ऐसे ही हमें अपनी मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए। आसन जहाँ तक हो रोएँदार, एवं रंगीन न हों, क्योंकि इनमें प्रतिलेखन होना कठिन होता है। मुँहपत्ति अपनी अंगुलियों से १६ अंगुल चौड़ी एवं २१ अंगुल लम्बी नाप की सफेद वस्त्र की हो, डोरा भी सफेद ही हो, पूँजनी सफेद ऊन की हो ताकि जीवों को पूँजते समय उन्हें क्लेश नहीं हो, पुस्तकें आगमोक्त हों, माला जहाँ तक हो सूत की हो (चाँदी आदि की नहीं हो)।

क्षेत्र से- सामायिक के लिए निर्दोष, शान्त, एकान्त स्थान का चयन होना चाहिए, स्थानक इसके लिए अति उत्तम स्थान है। वहाँ के वातावरण में विषमता से बचने की अधिक संभावना रहती है, घर पर कभी बच्चे का रोना, कभी दूध वाले का आना, कभी टेलीफोन की घंटी सुनाई देना आदि प्रसंग उपस्थित होने पर चंचलता आना संभव होता है। जब मन पूरा परिपक्व हो जाए, सध जाए, फिर तो कोई भी क्षेत्र हो कोई बाधा नहीं होती, लेकिन सामान्य साधक के लिए निर्दोष, एकान्त, शान्त स्थान का चयन अत्यन्त आवश्यक है। अगर किन्हीं कारणों से स्थानक नहीं पहुँचा जा सके तो घर पर भी एकान्त स्थान देखने का ध्यान किया जा सकता है। सामायिक में लाइट जल रही हो, उस स्थान से बचना चाहिए। सामायिक में बिजली, दीपक आदि के प्रकाश में नहीं पढ़ना चाहिए। जहाँ तक हो निश्चित स्थान पर ही प्रतिदिन सामायिक करना चाहिए। इससे मन स्थिर होने में सुविधा रहती है।

काल से- जैसे दवा, भोजन, ऑफिस, अदालत, दुकान आदि के लिए समय निश्चित होता है वैसे ही सामायिक के लिए समय की सुनिश्चितता अत्यन्त आवश्यक है। निश्चित समय पर सामायिक करने से कुछ दिनों में मन अपने आप स्थिर रहने लग जाता है। जैसे निश्चित समय पर रोज सोने वाले भाई को उस समय अपने आप नींद सताने लगती है, निश्चित समय पर रोज चाय पीने वाले को उस समय चाय नहीं मिलने पर अपने आप उबासी व सुस्ती आने लग जाती है, ठीक इसी तरह निश्चित समय पर दैनिक सामायिक करने पर मन उस समय अपने आप शांत रहने लगता है। जो एक से अधिक सामायिक करते हैं उन्हें भी एक सामायिक तो निश्चित समय पर अवश्य करना चाहिए। गृहस्थावस्था के दायित्व के कारण कभी यात्रा, कभी सेवा, कभी अन्य

आवश्यक कार्य उपस्थित हों, घर में कभी कोई बीमार की सेवा का या मेहमानों की सेवा का या अन्य कार्य उपस्थित हो तथा उस समय दूसरा इस दायित्व को निभाने वाला नहीं हो तो ऐसी स्थिति में सामायिक का आग्रह करना उचित नहीं है, क्योंकि इससे सामायिक बदनाम होती है। ऐसे प्रसंगों पर हमें विवेकपूर्वक ऐसी व्यवस्था बिठानी चाहिये जिससे हमारे गार्हस्थिक कार्य भी व्यवस्थित हो जाएँ और सामायिक भी हो जाए। जैसे अदालत की पेशी का दिन हो, पेशी भी ऐसी हो कि व्यक्तिगत अनुपस्थित होने पर गिरफ्तारी वारंट निकल सकता है, उस समय हम सब कार्यों को व्यवस्थित करने अथवा आये हुए अतिथि को अपनी विवशता से अवगत करा कर क्षमा माँग कर अदालत जाने की अनुमति प्राप्त करते हैं इसी प्रकार भगवान के दरबार में येन केन प्रकारेण निश्चित समय पर उपस्थित होने रूप सामायिक का लक्ष्य रखा जाए, किन्तु सामायिक बदनाम न होने का व आश्रित परिजन की सुव्यवस्था का ध्यान भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

यदि निर्धारित समय पर सामायिक करना संभव न हो तो उस समय कुछ देर का संवर कर लेना चाहिए, ताकि उस समय का महत्त्व हमारे ध्यान में बना रहे। आदरणीय केवलमल जी बरमेचा, चेन्नई निवासी से एक बार चर्चा करने पर उन्होंने बताया- "मैं सुबह छः बजे नित्य सामायिक करता हूँ, अगर उस समय किसी कारण सामायिक नहीं कर पाऊँ तो उपवास कर लेता हूँ।" आदरणीय श्रावकरत्न तत्त्वज्ञ सुश्रावक श्री धींगड़मल जी गिड़िया जोधपुर निवासी के साथ एक बार यात्रा में साथ रहने का प्रसंग उपस्थित हुआ। उस दिन लगभग बारह बजे दोपहर तक सामायिक की अनुकूलता नहीं बैठी तो उन्होंने पानी भी मुँह में नहीं लिया। पहले सामायिक करके ही मुँह में पानी, आहार आदि का प्रयोग किया। भारत आजादी के क्रांतिकारी पहले अमर शहीद श्री अमीरचन्द जी बांठिया के लिए आचार्य नरेन्द्र देव, काका कालेलकर अपनी पुस्तकों में लिखते हैं, "अमर शहीद अमीरचन्द बांठिया को आजादी के आन्दोलन से नहीं हटने पर अनेक दानवीय यातनाएँ (पैशाब पिलाना, स्वयं का मल खिलाना, घसीटना, चाबुकों से मारना आदि) दी गई, अन्त में अदालत से हुक्मरानों ने फाँसी की आज्ञा सुना दी। फाँसी के पूर्व जब उनसे अपनी अन्तिम इच्छा पूछी गई तो उन्होंने कहा कि मुझे सामायिक करनी है। वे सामायिक कर प्रसन्नता से नवकार स्मरण करते हुए फाँसी के फन्दे पर झूम गये। ऐसे अनेक

श्रद्धालु साधकों के उदाहरण दिये जा सकते हैं जो सामायिक करने तथा उसके लिए समय की पाबन्दी के प्रति पूर्ण सजग थे, सजग हैं। प्रसंगवश यह बताना आवश्यक है कि कई बार मृत्यु आदि प्रसंगों पर सामायिक करना, स्वाध्याय करना, व्याख्यान सुनना, सन्त-सतियों के दर्शन करना छोड़ देते हैं, यह प्रथा अनुचित है, ऐसे प्रसंगों पर तो धार्मिक कार्य और अधिक मात्रा में होने चाहिए। घरवालों की अनुपस्थिति के कारण कुटुम्बी जन धार्मिक कार्यों से वंचित होते हैं, बिना कारण अन्तराय कर्म की बंधक इस कुपरंपरा को बिल्कुल त्याग देना चाहिए।

यह पूर्ण अनुभवसिद्ध बात है कि निश्चित आसन, निश्चित स्थान, निश्चित वेशभूषा, निश्चित समय पर पूर्ण विश्वास पूर्वक सविधि सामायिक करने की निरन्तरता से जीवन में अवश्य आशातीत समता भाव, सजगता, एकाग्रता, निर्मलता आदि की उपलब्धि होती है।

Proper place, proper dress, proper time, proper method are the great helper for meditation. ***(क्रमशः)***

(भाव की अपेक्षा सामायिक का विवेचन आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।)

विश्व के सबसे अमीर बिल गेट्स के विचार

माइक्रोसोफ्ट कॉर्पोरेशन के चेयरमेन बिल गेट्स ने यह कहकर सबको आश्चर्य में डाल दिया कि काश वे दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति नहीं होते। कंपनी के विज्ञापन कार्यक्रम के दौरान सैकड़ों लोगों की मौजूदगी में सीएनबीसी के रिपोर्टर से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि सबसे अमीर होने से कोई अच्छी बात निकल कर नहीं आती।

बिल गेट्स से कहा- "बफेट दुनिया को इतने साधरण नजरिये से देखते हैं कि मेरी नजर में वे सबसे अमीर हैं। मुझे बफेट ने अनेक बार सीख दी है, लेकिन ईमानदार रहने की सीख को मैं सबसे अहम मानता हूँ।" गेट्स से जब पूछा गया कि क्या वे हमेशा धन्ना सेठों से घिरे रहते हैं तो उन्होंने मजाकिया लहजे में कहा, 'नहीं मैं अकेला रहता हूँ।'

-दैनिक भास्कर, दिनांक ५ मई २००६ से साभार

चेतना का ऊर्ध्वीकरण

श्रीमती विमला जोटा

मानव विकासशील प्राणी है। जीवन में सतत विकास करना मानव का परम उद्देश्य है। इस अमूल्य देह को पाकर चेतना का ऊर्ध्वीकरण नहीं किया तो यह जीवन पशु तुल्य बन कर रह जायेगा।

अगर हम केवल पदार्थवादी और देहवादी ही बने रहेंगे तो हमारे जीवन का अधिकांश समय पदार्थो का संग्रह करने में, भौतिक सुखों की खोज में और देह तथा देह से सम्बन्धित सगे-सम्बन्धियों के पालन-पोषण में ही व्यतीत हो जायेगा।'' हम दो हमारे दो'' की भावना में ही जीवन सिमट कर रह जायेगा। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना लुप्त हो जायेगी। हम कूपमण्डूक बन जायेंगे और सागर की विशाल तरंगें हमें तरंगित नहीं कर सकेंगी। विशालता, उदारता और सहिष्णुता को बढाने के लिये चेतना का विकास बहुत जरूरी है।

जितना अधिक चेतना का ऊर्ध्वीकरण होगा, उतना ही हमारे भीतर सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक् चारित्र का विकास होगा। हमारा सम्यक् दर्शन पवित्र होगा तो संसार को देखने की दृष्टि ही बदल जायेगी। विकारों का स्थान पवित्रता ले लेगी। स्वार्थमय सम्बंध से परे हटकर मैत्रीपूर्ण सम्बंध स्थापित होंगे। हमारी वृत्तियाँ पूर्ण सात्त्विक होंगी जीवन की सभी दिशाएँ ज्योतिर्मय हो जायेंगी। हमारे भीतर निर्णयात्मक बुद्धि का विकास होगा। प्रत्येक कार्य न्याय-नीति और प्रामाणिकता से होगा। सम्पूर्ण जीवन सत्य, शील, सदाचार के गुणों से सजता जायेगा। जीवन तनावमुक्त, अहंकार-मुक्त, ईर्ष्यामुक्त, कषायमुक्त, भयमुक्त और ग्रन्थिमुक्त होता जायेगा।

विकसित चेतना वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व गुलाब की तरह खिला हुआ होता है, जिसकी सुमधुर सौरभ समाज में चारों तरफ फैलती रहती है। वह व्यक्ति पूजनीय और आदरणीय बन जाता है। वह समाज में एक आदर्श स्थापित करता है, जिससे प्रेरित होकर प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक क्षण प्रमाद रहित होकर चेतना का विकास करना चाहिये।

चेतना को ऊर्ध्वगामी बनाने के लिये बहुत अधिक शिक्षित या डिग्रियाँ हासिल करने की आवश्यकता नहीं है। प्रायः देखा गया है कि एक मामूली व्यक्ति अपनी चेतना का विकास कर लेता है, और कितने ही डॉक्टर और शिक्षित अध्यापक बलात्कार के जुर्म में हिरासत की हवा खाने पहुँच जाते हैं। चेतना का

विकास साधारण से साधारण व्यक्ति कर सकता है, परन्तु उसकी दृष्टि पवित्र होनी चाहिए। वह सदाचारी होना चाहिये। इसके लिये ध्यान, साधना और अभ्यास की आवश्यकता है। मन की चेष्टाओं पर पहरा लगाना पड़ता है, चित्त की चंचलताओं पर नियंत्रण करना पड़ता है।

इस तरह अगर हम चेतना को ऊर्ध्वगामी बनाने में सफल हो गये तो हमें आत्मस्थ और धर्मस्थ बनने में समय नहीं लगेगा। जीवन सुन्दर, सफल और सम्मानित बन जायेगा। मन वश में होकर मोक्षगामी बन जायेगा।

ज्ञान शिविर : चार मुक्तक

डॉ. दिलीप धींग

(१)

संस्कारहीनता के बादल घने हैं,
टूटते परिवार देखे सुने हैं।
बचपन बचाया सँवारा जिसने,
शिविर से अनेक जीवन बने हैं।।

(२)

संस्कार निर्माण की पाठशाला शिविर है,
स्वयं को परखने की प्रयोगशाला शिविर है।
अनूठा अवसर है जीवन रूपान्तरण का,
सुनहरी भोर का उजाला शिविर है।।

(३)

प्रेम के दीपों की दीवाली शिविर है,
सद्गुणों के रंगों की होली शिविर है।
पर्व, उत्सव, मेला है ज्ञान का,
धर्म-ध्यान की रंगोली शिविर है।।

(४)

कृपा आपकी हम बलिहारी हो गये,
पिछलग्गू बने थे, अगाड़ी हो गये।
जीने की कला सिखाई शिविर ने,
हम तो अनाड़ी थे, खिलाड़ी हो गये।।

-बम्बोरा, उदयपुर (राज.)

मृत्यु

डॉ. सागरमल जैन

मृत्यु
शरीर के कारागृह से
मुक्ति का पर्व है।
यह तो
'स्व' का संकुचित घेरा तोड़
विराट् में समाने का
उत्सव है।
बीज मिटकर ही
वृक्ष बन पाता है
स्वयं को मिटाकर ही
व्यक्ति-
अनन्त को जीवन दे पाता है।
मित्रों-
मौत से घबराने की
क्या बात है?
यह तो
अनन्त के साथ
शादी की बारात है।
मिटकर बनना
और बनकर मिटना.
यही तो जीवन यात्रा का अनोखा है खेल
यह यात्रा तो पहुँचती वहाँ है
जहाँ 'स्व' नहीं 'सर्व' है।
आना जाना तो लगा ही रहता है
इसमें डरने की क्या बात है?
नये नये रूपों को धरने का
यही तो एक अन्दाज है।
यदि पहनने की चाह है

नये कपड़े,
बदलने ही होंगे पुराने
यदि पाना है नव जीवन
मरण से मित्रता करनी ही होगी।
होना ही होगा आलिंगनबद्ध मृत्यु से
मृत्यु यात्रा की समाप्ति नहीं है।
यह तो
नई यात्रा का
प्रस्थान पर्व है।
समझ नहीं आता कि
लोग मृत्यु से कतराते क्यों है?
अनन्त यात्रा पर निकलने से
घबराते क्यों हैं?
मृत्यु एक शाश्वत सत्य है
इससे मुखातिब होने में
क्या घबराना।
सत्य को जानकर
उससे जी चुराना क्यों?
तरह तरह से
बहाना बनाना क्यों?
जीवन-धारा को
अनन्त महासागर में मिलना ही है।
फिर, किनारों के छूटने का भय कैसा?
किनारे छूटने पर ही तो मिलन संभव है-
किनारे कभी मिलते नहीं
बस महासागर बनने में छूट जाते हैं।
मृत्यु समग्र विनाश नहीं
यह तो रूपान्तरण है
यह जीवन की समाप्ति नहीं
यह तो नवजीवन की नवचेतना का उत्सव है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(काय स्थिति-४)

❀ श्री धर्मचन्द जैन

प्र.१९३ तीन समय की कायस्थिति किसकी होती है?

उत्तर सयोगी केवली अनाहारक की कायस्थिति तीन समय की होती है। जब कोई तेरहवें गुणस्थानवर्ती केवली भगवान् केवली समुद्घात करते हैं तब उसमें तीसरे, चौथे, पाँचवें समय में जीव अनाहारक रहता है अर्थात् इन तीन समयों में सयोगी केवली किसी भी प्रकार का आहार नहीं करते, इस कारण से इन तीन समयों में वे अनाहारक रहते हैं।

प्र.१९४ केवली समुद्घात किसे कहते हैं?

उत्तर जब सयोगी केवली अपने आत्म-प्रदेशों को शरीर से बाहर निकाल कर सम्पूर्ण लोकव्यापी बना देते हैं तो इसे केवली समुद्घात कहते हैं। इसमें उन्हें आठ समय लगते हैं। प्रथम समय में वे अपने आत्म-प्रदेशों को दण्डाकार (ऊपर-नीचे), दूसरे समय में कपाटाकार (पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दिशा में), तीसरे समय में मथानी आकार (विदिशाओं में आत्म प्रदेश फैलाना) और चौथे समय में लोकपूरित अर्थात् सम्पूर्ण लोक के एक-एक आकाश प्रदेश पर अपना एक-एक आत्म-प्रदेश फैला देते हैं। पाँचवें समय में पुनः मथानी आकार, छठे समय में कपाटाकार, सातवें समय में दण्डाकार और आठवें समय में अपने आत्म-प्रदेशों को शरीरस्थ कर लेते हैं। केवली समुद्घात से अघाति कर्मों की अत्यधिक निर्जरा होती है।

प्र.१९५ केवली समुद्घात क्यों करते हैं?

उत्तर जब किसी केवली के चार अघाति कर्मों में से वेदनीय, नाम व गोत्र कर्म की जितनी स्थिति है, उसके अनुपात में आयु कर्म की स्थिति कम हो तो वे केवली समुद्घात करते हैं। आठ समय में ही केवली समुद्घात पूर्ण हो जाता है। यद्यपि कतिपय लोगों का ऐसा भी मन्तव्य

है कि केवली समुद्घात होता है, करते नहीं हैं। तथापि व्यवहार की अपेक्षा से करने की बात कही जाती है।

प्र.१९६ कौन-कौन से केवली, केवली समुद्घात करते हैं?

उत्तर १. जिन सामान्य केवलियों की केवलज्ञान प्राप्ति के समय आयु छः माह अथवा उससे कम शेष है, वे सभी केवली, केवली समुद्घात करते हैं।

२. साथ ही तीर्थंकर केवली भी केवली समुद्घात करते हैं। तीर्थंकर के केवली समुद्घात करने का उल्लेख छठे कर्मग्रन्थ में मिलता है। तीर्थंकर के लिये छः माह अथवा उससे कम आयु शेष रहने का उक्त नियम लागू नहीं होता है।

आवश्यक चूर्णि में भी उक्त दोनों मान्यताओं का उल्लेख मिलता है।

प्र.१९७ केवली समुद्घात के आठ समयों में कब-कब, कौन-कौनसा योग होता है?

उत्तर केवली समुद्घात के आठ समयों में पहले व आठवें समय में औदारिक काययोग होता है। दूसरे, छठे व सातवें समय में औदारिक मिश्र काययोग होता है तथा तीसरे, चौथे, पाँचवें समय में कार्मण काय योग होता है। कार्मण काय योग के इन तीन समयों में ही सयोगी केवली अनाहारक रहते हैं, अन्य समयों में नहीं।

प्र.१९८ केवली समुद्घात करने के कितने काल बाद जीव मोक्ष में जाता है?

उत्तर केवली समुद्घात से उपरत होने के बाद अन्तर्मुहूर्त तक जीव सयोगी रहता है। उपदेशादि की प्रवृत्ति भी कर सकता है। अन्तर्मुहूर्त बाद नियमा अयोगी बन जाता है तथा मोक्ष में चला जाता हैं। यद्यपि सयोगी का अन्तर्मुहूर्त तथा चौदहवें गुणस्थान का अन्तर्मुहूर्त इस प्रकार दो अन्तमुहूर्त होते हैं, किन्तु दोनों को मिलाकर भी अन्तर्मुहूर्त ही होता है। अन्तर्मुहूर्त के भी छोटे-बड़े की अपेक्षा असंख्यात भेद हो सकते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि केवली समुद्घात करने के अन्तर्मुहूर्त बाद जीव मोक्ष में चला जाता है।

प्र.१९९ सचित्त महास्कन्ध किसे कहते हैं?

उत्तर केवली भगवान जब केवली समुद्घात करते हैं तब चौथे समय में अपने आत्म-प्रदेशों को सम्पूर्ण लोक में फैला देते हैं, इस स्थिति को सचित्त महास्कन्ध कहते हैं। इसकी स्थिति एक समय की होती है।

प्र.२०० अचित्त महास्कन्ध किसे कहते हैं?

उत्तर जब किसी चतुस्पर्शी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की अवगाहना (लम्बाई, चौड़ाई व ऊँचाई) बढ़ते-बढ़ते सम्पूर्ण लोकव्यापी हो जाती है, तब उसे अचित्त महास्कन्ध कहते हैं। इसके बनने तथा बिखरने की प्रक्रिया में केवली समुद्घात के समान आठ समय ही लगते हैं। चौथे समय में यह भी लोकपूरित (सम्पूर्ण लोकव्यापी) हो जाता है। इसकी भी स्थिति एक समय की ही होती है। प्रज्ञापना सूत्र के पाँचवें पद में उल्लिखित अजीव पज्जवा के थोकड़े में उत्कृष्ट अवगाहना वाले पुद्गल की स्थिति एक समय की बतलायी है, जो इसी अचित्त महास्कन्ध की अपेक्षा से समझनी चाहिये।

यह ज्ञातव्य है कि केवली के आत्म-प्रदेशों के लोकव्यापी फैलने पर सचित्त महास्कन्ध तथा चतुःस्पर्शी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के लोकव्यापी फैलने पर अचित्त महास्कन्ध बनता है। 'अचित्त महास्कन्ध' अनन्त प्रदेशी चतुस्पर्शी पुद्गल स्कन्ध में विस्रसा परिणमन (स्वाभाविक रूप से परिणमन होना) से समय-समय पर स्वतः ही बनता-बिखरता रहता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

सुभाषित

१. बर्फी की मिठास से जीभ थक सकती है, परन्तु प्रशंसा की मिठास से कान नहीं थकते।

२. आराधना पथ के तीन अवरोधक हैं- १. आकुलता २. अस्थिरता और ३.उकताहट

३. सूर्य का प्रकाश पाने के लिए कोई शर्त अथवा शुल्क नहीं है, परन्तु खिड़की, दरवाजे स्वयं के खोलेंगे तब प्रकाश मिलेगा। इसी प्रकार वीतराग वाणी सन्तमुख से बिना किसी शुल्क के प्राप्त होती है, परन्तु अपने अन्तरंग की खिड़की खोलेंगे तब उसका लाभ मिलेगा। *श्रीमती मदनदेवी बुरड़, १८/१८४, वकील कॉलोनी, भीलवाड़ा*

धारावाहिक (क्रमशः२८)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः-समुद्रश्री द्वारा दिये गये बग के उदाहरण को संसारी जीवों के अनुरूप बताते हुए जम्बूकुमार ने कई तर्क-सम्मत वैराग्यपूर्ण विचारों के साथ अपनी बात कही थी। समुद्रश्री को आगे भोगों में भुलावे की दृष्टि से कौए का उदाहरण देते हुए जम्बूकुमार समझा रहे हैं-

---

नर्मदा नदी का नाम तुमने सुना होगा। उस नदी के किनारे एक हाथी मर गया। उसे खाने के लिए बहुत दूर-दूर के काग, गिद्ध, बाज आदि पक्षी इकट्ठे हुए। दिन को आते, अपना पेट भरते और संध्या होने पर अपने-अपने बसेरे की ओर चल देते। एक दिन एक कौवा हाथी के मल-द्वार के रास्ते, उसके पेट में घुस गया। भीतर का कोमल माँस खाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। सायंकाल होने पर कौओं की काँव-काँव शुरु हुई और चलने का यह संकेत पाकर सब चलने को तैयार हो गए। पेट में घुसे हुए कौए ने सोचा- इससे अधिक सुरक्षित स्थान ठहरने के लिए दूसरा कहाँ मिलेगा ? इसके अतिरिक्त दूर जाना-आना भी बड़ी झंझट है। अतएव दूसरे कौओं के तुमुल काँव-काँव शब्द को सुनकर भी वह बाहर नहीं निकला। उसके साथी सब कौए चल दिए। झुण्ड के मुखिया कौवों ने उसे साथ चलने का आग्रह भी किया और कहा- देखो, तुम यहीं रहोगे तो बड़ी विपत्ति में पड़ जाओगे। पर उस लोभी कौए ने उसकी बात पर कान नहीं दिया।

ग्रीष्म के दिन आ चले थे। गर्मी कुछ तेज होने से एक दिन मलद्वार सिकुड़ गया। अब कौआ निकलने का प्रयत्न करके भी निकलने में असमर्थ था। ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु आई। मूसलाधार वर्षा होने पर तमाम-नदी-नाले एकमेक हो गए। हाथी का कलेवर बह गया। बहते-बहते, न जाने कितनी लम्बी यात्रा के बाद वह अन्त में समुद्र में पहुँचा। लगातार कई दिनों पानी में रहने के बाद हाथी का चमड़ा कुछ नरम हुआ-ढीला पड़ गया और कौआ बाहर निकला। बाहर निकल कर उसने चारों ओर पानी ही पानी देखा तो उसकी घबराहट का पार न रहा।

सौभाग्य से वहाँ होकर एक जहाज निकला। जहाज का नियामक दयालु हृदय का था। उसने कौए को मुसीबत में पड़ा देखा तो उसकी जान बचाने के खयाल से उसने जहाज हाथी के कलेवर के पास से निकाला। कौआ अत्यन्त लोलुप तो था ही, उसने सोचा जहाज का आश्रय लेने से आत्मरक्षा हो सकती है, पर माँस इस समय मुलायम है थोड़ा-बहुत खाकर फिर जहाज पर सवार हो जाऊँगा। ऐसा सोचकर वह भीतर घुसा और इधर जहाज आगे निकल गया। जब वह बाहर आया तो जहाज अदृश्य हो चुका था। थोड़ी देर बाद एक मत्स्य ने हाथी का कलेवर पकड़ कर जल में डूबो लिया। कौआ अब इधर से उधर और उधर से इधर उड़ता-उड़ता अन्त में थक गया। उसे कहीं पानी का अन्त आता नहीं दिखाई दिया। आखिर पंख फैलाकर जल में गिर पड़ा और तड़पते-तड़पते काल का ग्रास बन गया।

जम्बूकुमार ने आगे कहा- समुद्रश्री! चार गति रूप यह संसार समुद्र के समान है। कौआ जीव के समान और नारीजन मृतक हाथी के समान हैं। भोग रूप माँस का लोलुप कौआ रूप यह प्राणी अत्यन्त गृद्ध हो रहा है। जैसे कौए ने अपने झुण्ड के मुखिया का कथन न मानकर समुद्र में डूबकर प्राण गवाएँ, उसी प्रकार सद्गुरु का कथन न मानकर मनुष्य संसाररूपी सागर में डूबते हैं और अनेक कष्ट भुगतते हैं। इस सागर में जन्म-मरण रूपी जल की कहीं सीमा दृष्टिगोचर नहीं होती। समुद्र में जैसे भयंकर जलचर मत्स्य आदि होते हैं उसी प्रकार संसार में रोग, शोक आदि सब सदा विद्यमान रहते हैं। कौए के पुण्योदय से जैसे उस समय अचानक जहाज आ पहुँचा था। उसी प्रकार श्री सुधर्मा स्वामी धर्म रूप जहाज लेकर यहाँ पधारे हैं। ऐसे पुण्य -प्रसंग पर भी इस सुयोग को पाकर के भी यदि कोई धर्म-विमान पर आरूढ़ नहीं होता और विषय रूपी माँस के भक्षण करने में आसक्त बना रहता है तो वह विवेकशील नहीं है।

समुद्रश्री! मैं ऐसी लम्पटता को पास नहीं फटकने देना चाहता। मैं इस दिव्य धर्म-पान की उपेक्षा नहीं करूँगा। मैं पापी कौए की मौत मरकर अपने जन्म-मरण की असीम परम्परा चालू नहीं रखूँगा। मैं अपने दुःखों का प्रक्षय कर के अनन्त सुखों का भाजन बनना चाहता हूँ।

प्रिये! संसार का स्वरूप तुम्हें मैंने स्पष्ट करके समझा दिया है। निस्संदेह संसार एकान्त दुःखों का परमधाम है। मोह की लीला के कारण यह सुख जैसा

प्रतीत होता है और इसी कारण और ज्यादा दुःख भोगने पड़ते हैं। उसका त्याग करने वाली आत्मा ही अजर-अमर होकर दुःखों से सदैव के लिए छुटकारा पाती है। मेरी इच्छा है कि तुम भी आत्मकल्याण के पथ की पथिक बनो और तुच्छ एवं जघन्य वासनाओं से नाता तोड़ो।

जम्बूकुमार का वस्तु स्वरूप का यथार्थ चित्रण करने वाला कथानक सुनकर समुद्रश्री को भी संसार की निस्सारता का आभास हुआ। उसने मुक्ति के सुख की वास्तविकता को स्वीकार किया। उसे भी वैराग्य का रंग चढ़ गया और वह दीक्षा ग्रहण करने को तैयार हो गई। (क्रमशः)

(जम्बूकुमार को पुनः संसार के राग-रंग की ओर मोड़ने की कोशिश करते-करते स्वयं समुद्रश्री को भी संसार की निस्सारता का आभास हो गया। यह देखकर जम्बूकुमार की दूसरी स्त्री पद्मश्री किस प्रकार से उन्हें रोकने की कोशिश करती है, पढ़ेंगे अगले अंक में)

हित-मित भोजन

श्री नितेश नागोता

कब और कितना खाना चाहिए? क्यों खाया जाए, यह एक बुनियादी प्रश्न है जिसका उत्तर अंततः यह निर्णय करेगा कि आप स्वस्थ रहेंगे या नहीं, बनेंगे या नहीं। यदि भोजन स्वाद के लिए किया जा रहा है तब तो जाहिर है कि बुद्धि काम नहीं कर रही है, क्योंकि भोजन का संबंध जिह्वा के स्वाद से केवल इतना है कि जिह्वा यह बता दे कि खायी जाने वाली सामग्री का स्वाद कैसा है। फिर जब हम उससे कहें, ठीक है कि नमक कम है, हमें कम ही खाना है, इसे खाओ, तब जिह्वा को हमारे आदेश का पालन करना चाहिए और मन को जिह्वा के चटोरेपन का समर्थन नहीं वरन् शरीर के हित का ध्यान रखना तथा आवश्यकता के अनुसार सीमित भोजन करना चाहिए।

भोजन को जिह्वा का अथवा जिह्वा के दास मन का भोग नहीं, वरन् शरीर की भौतिक शक्ति और आवश्यकता की पूर्ति का साधन समझना चाहिए। भोजन हित-मित होना चाहिए। मित अर्थात् सीमित मात्रा में, स्वाद लगने पर अधिक नहीं और स्वादहीन लगने पर कम नहीं खाया जाए। हित का अर्थ है शरीर को लाभ पहुँचाने वाला भोजन ही खाया जाए। यदि इस नियम का पालन कड़ाई से किया जाए तो अस्वस्थ होने से ही नहीं कंगाल होने से भी बचा जा सकता है। अहितकर भोजन से शरीर अस्वस्थ हो जाता है, जिसके फलस्वरूप १. शरीर में दुर्बलता आती है और २. काम का समय नष्ट होता है।

-भवानीमण्डी (राज.)

दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(८)

प्रश्न १६. साधु-साध्वी को कैसे स्थानक में ठहरना चाहिए?

उत्तर- दशवैकालिक ८/५२ में कहा गया कि साधु गृहस्थ के लिए लयन-मकान जो मलमूत्रादि उत्सर्ग भूमि से युक्त एवं स्त्री, पशु व नपुंसक रहित हो। स्त्रियों की दृष्टि नहीं पड़े, साधु वैसे स्थान में ठहरे तथा साधु के उद्देश्य से कृत उपाश्रय एवं आधाकर्म दोष युक्त स्थान में नहीं ठहरे। गृहस्थ के अतिसंसर्ग के कारण आसक्ति तथा आचार-शैथिल्य आदि दोषों की संभावना रहती है और स्त्री के लिये तो यहाँ तक कह दिया कि उसका मृतक शरीर भी भयकारी है। अतः साधु को चाहिए कि वह स्त्री, पशु, नपुंसक रहित स्थानक में ठहरे तथा अन्यार्थकृत पाट-पाटिए का उपयोग करे।

प्रश्न १७. उत्तराध्ययन सूत्र की कौन-कौन सी गाथाएँ दशवैकालिक सूत्र में उपलब्ध है?

उत्तर- **अक्षरशः मिलने वाली गाथाएँ**

१. दशवैकालिक सूत्र के दूसरे अध्ययन की ६ से ११वीं गाथा- उत्तराध्ययन सूत्र के बाईसवें अध्ययन की ४२ से ४५, ४७ व ५१वीं गाथा।

२. दशवैकालिक सूत्र के ५वें अध्ययन, दूसरे उद्देशक की चौथी गाथा- उत्तराध्ययन सूत्र प्रथम अध्ययन की ३१वीं गाथा।

३. दशवैकालिक सूत्र सातवें अध्ययन की ४१वीं गाथा- उत्तराध्ययन सूत्र प्रथम अध्ययन की ३६वीं गाथा।

४. दशवैकालिक सूत्र द्वितीय चूलिका की १०वीं गाथा- उत्तराध्ययन सूत्र ३२वें अध्ययन की ५वीं गाथा।

तुलनात्मक रूप से मिलने वाली गाथाएँ

१. दशवैकालिक सूत्र दूसरे अध्ययन की ११वीं गाथा-उत्तराध्ययन सूत्र नवम अध्ययन की ६२वीं गाथा।

२. दशवैकालिक सूत्र तीसरे अध्ययन की १५वीं गाथा की पहली पंक्ति- उत्तराध्ययन सूत्र २५वें अध्ययन की ४५वीं गाथा की प्रथम पंक्ति व अठाईसवें अध्ययन की ३६वीं गाथा।

३. दशवैकालिक सूत्र तीसरे अध्ययन की १५वीं गाथा की दूसरी पंक्ति-

उत्तराध्ययन सूत्र अठाईसवें अध्ययन की ३६वीं गाथा

४. दशवैकालिक सूत्र ८वें अध्ययन की ४५वीं गाथा- उत्तराध्ययन सूत्र प्रथम अध्ययन की १८वीं गाथा।

५. दशवैकालिक सूत्र नवमें अध्ययन की २० वीं गाथा- उत्तराध्ययन सूत्र प्रथम अध्ययन की २१वीं गाथा।

६. दशवैकालिक सूत्र छठे अध्ययन की १४वीं गाथा-उत्तराध्ययन सूत्र २५वें अध्ययन की २५वीं गाथा की पहली पंक्ति।

प्रश्न १८. मास-चातुर्मास कल्प की मर्यादा क्या है?

उत्तर- **'संवच्छरं वावि परं पमाणं, बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा।'**

-चूलिका द्वितीय, गाथा ११वीं

जिस गाँव में मुनि मर्यादानुसार उत्कृष्ट प्रमाण तक रह चुका हो अर्थात् जिस स्थान पर वर्षाकाल में ४ मास, शेषकाल में २९ दिन रह चुका हो तो वहाँ दुगुना (२ चातुर्मास ५८ दिन) का अंतर किये बिना वापस न आये, कारणवश २ रात रहा जा सकता है। अगर किसी गाँव में १० दिन रुके और विहार कर २ दिन उपनगर में चले गये तो वापस आकर १९ दिन ही रुका जा सकता है।

साध्वी के लिये शेषकाल में ५८ दिन रुक सकना कल्प मर्यादा है। वह उससे दुगुना समय बाहर पूरा करे तो उस क्षेत्र में वापस जा सकती है। पड़ौस के उपनगर जिसमें आहार पानी ग्रहण नहीं किया हो तो वहाँ पूरा कल्प जितने समय रुका जा सकता है।

त्रैमासिक प्रतियोगिता(९) का शेष परिणाम

४६ अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी- मंगला चौरडिया-जलगाँव, राकेश जैन-चौरू, निशा लुंकड़-कोटा, कल्पना धाकड़-गुडगाँव, इन्द्रा देवी गुणधर-दल्ली राजहरा, उपमा चौधरी-अजमेर, मोहित चौधरी-अजमेर, विकास जैन-जयपुर, किरण चोरडिया-इच्छापुर, शंकुतला बोहरा-जयपुर, विमलाबाई खींवसरा-धुलिया, महावीरचन्द तातेड़-चेन्नई, डॉ. अरूणा सिंगी-नागपुर, शांतिलाल महात्मा-चित्तौडगढ़, धर्मचन्द्र जैन-हिण्डौन सिटी, सुभद्रा जैन-अलवर, विमला जैन-जयपुर, सुनीता नवलखा-कोटा, प्रमिला मेहता-दूदू, मधु जैन चपलावत-जयपुर, ज्योति धोका-पीपाड़, अशोक कुमार जैन-जयपुर, पवनदेवी ओस्तवाल-नागपुर, सरला प्रकाशचन्द जी रांका-नागपुर, रीतेश सुराणा-जलगाँव, शकुंतला रूपचन्द जी कटारिया-जलगाँव, सुमन जैन-होशियारपुर, मगनलाल रतनलाल जैन-बौलियाँ, ऋषभ जैन-सुमेरगंजमण्डी, सरिता भण्डारी-भोपालगढ़, अशोक भण्डारी-भोपालगढ़, आर.आर. कोठारी-धुलिया, आरती कवाड़-धुलिया, कुसुम जैन-फगवाड़ा, पिस्ता गोलेछा-जयपुर, प्रकाश इण्डस्ट्रीज-जोधपुर, मंजू पालावत-अलवर, मंजू जैन-मैसूर, कुशल संचेती-अलवर, संजय संचेती-अलवर, बिन्दु मेहता-जोधपुर, दिव्या डागा-जयपुर, मधुबाला नन्दावत-उदयपुर, सरला कांकरिया-जलगाँव, मंजुला जैन-भायंदर, राजेन्द्र कुमार जैन-मुण्डोत, जनेश सुराणा-पाली, कल्पेश धारीवाल-पाली, श्वेता प्रशांत वेदमूथा-नासिक, पुष्पा तातेड़-धुलिया, भारत कुमार जैन-जयपुर, अजय अरूण कुमार भण्डारी-अहमदाबाद, जयमाला जैन-पाली, हेमंत डागा, नयनतारा बाफना-जलगाँव, गुणमाला जैन-चित्तौड़गढ़, मीत्तल निलेश जैन-औरंगाबाद, सीमा जैन-बजरिया,

वर्तमान का सदुपयोग

आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरि जी

पुत्र ने पिता से पूछा-

"पप्पा, एक बात पूछूँ?"

"पूछो।" "सबको मरना ही पड़ता है?"

"हाँ।" "मुझे और आपको भी मरना पड़ेगा?"

"हाँ।" मुझे एक बात समझ में नहीं आ रही है।"

"क्या?" "आप समझाएँगे?"

"पहले बताओ तो सही कि तुम्हें क्या समझ में नहीं आ रहा है?"

"पप्पा! जो सबसे अन्त में मरेगा ना उसे श्मशान में कौन ले जाएगा?"

घर में शांति का ठिकाना न हो और विश्वशांति किस प्रकार हो सकती है इसकी चिंता करने वालों की यहाँ कमी नहीं है। स्वयं की कमाई से घर के एक महीने का खर्च न निकलता हो और शेयरबाजार का इन्डेक्स कैसे ऊपर उठ सकता है इसका विचार करने वालों की यहाँ कमी नहीं है। हाथ आया जीवन अच्छी तरह कैसे जीना इसकी बजाय मृत्यु के पश्चात् कहाँ जन्म लेंगे इसकी चर्चा करने वालों की यहाँ कमी नहीं है। अनंतज्ञानियों ने एक ही संदेश दिया है-

"केवल दो चीजें आपके हाथ में हैं, एक है वर्तमान समय और दूसरी है इस वर्तमान समय का सदुपयोग करने के लिए आपके द्वारा किया जाने वाला पुरुषार्थ। इनके अलावा और कुछ भी आपके हाथ में नहीं है। भूतकाल आपके हाथ में नहीं है, क्योंकि वह बीत चुका है। भविष्यकाल आपके वश में नहीं है, क्योंकि वह अब तक आया नहीं है। एक ही चीज आपके हाथ में है और वह है वर्तमानकाल।"

दूसरी बात,भूतकाल में आपके द्वारा किये गये गलत पुरुषार्थ के लिए अभी आँसू बहाने का कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि यह पुरुषार्थ तो धनुष से छूटे हुए तीर का प्रतिनिधित्व करता है। भविष्य में मैं ऐसा प्रबल पुरुषार्थ करूँगा" आज चाहे आप ऐसी कल्पना कर रहे हैं, किन्तु भविष्य में कैसे कर्म उदित होंगे तथा उस समय पुरुषार्थ करने का सामर्थ्य आपमें कैसा होगा, होगा कि नहीं इस विषय में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। यथार्थ में यदि आप परलोक को सुधारना चाहते हैं तो हाथ आये वर्तमान समय का सत्पुरुषार्थ द्वारा सुन्दर उपयोग कर लीजिए-श्रेयस्कर यही है।

प्रश्न-मंच

मोहनीय कर्म

श्री पी.एम. चोरडिया

(१)

प्रश्न १. मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर १. जो मोहित करता है, या जिसके द्वारा मोहा जाता है, वह मोहनीय कर्म है।-सर्वार्थसिद्धि

२. जिन कर्म पुद्गल परमाणुओं से आत्मा की विवेक शक्ति विचार-आचार की कार्यक्षमता कुण्ठित, मन्द और अवरुद्ध हो जाती है तथा जिससे अकृत्य-दुष्कृत्य की प्रवृत्ति होती है,उसे मोहनीय कर्म कहते हैं।

३. जो कर्म आत्मा में मूढता उत्पन्न करता है, वह मोहनीय कर्म है।

प्रश्न २. मोहनीय कर्म के लक्षण क्या हैं?

उत्तर क्रोध, मान, माया एवं लोभ इस कर्म की देन हैं। आसक्ति के कारण समझ विपरीत हो जाती है। हास्य आदि नौ नो-कषायों की विकृति भी इसी कर्म का फल है। आठों कर्मों में यह कर्म प्रबलता की दृष्टि से सबसे खतरनाक है।

प्रश्न ३. मोहनीय कर्म कितने प्रकार का होता है?

उत्तर मोहनीय कर्म दो प्रकार का है- १. दर्शन मोहनीय २. चारित्र मोहनीय।

(२)

प्रश्न १. दर्शन मोहनीय कर्म क्या करता है?

उत्तर दर्शन मोहनीय कर्म आत्मा के सम्यक्त्व को विकृत बना देता है, जैसे शराबी बेसुध होकर विवेकहीन बन जाता है, वैसे ही दर्शन मोहनीय के उदय से जीव पर-पदार्थों को अपना समझने लगता है।

प्रश्न २. दर्शन मोहनीय कर्म के उदय से वस्तु के यथार्थ स्वरूप का दर्शन क्यों नहीं होता?

उत्तर संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय, मूढता आदि के कारण ऐसा होता है।

प्रश्न ३. नौ नो-कषाय कौन-कौन से हैं?

उत्तर १. हास्य २. रति ३. अरति ४. भय ५. शोक ६. जुगुप्सा ७. पुरुषवेद ८. स्त्रीवेद ९. नपुंसक वेद।

(३)

प्रश्न १. 'एवं विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ' (आचारांग १.३.४) इस पंक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर जो मोहनीय कर्म को क्षय करता है, वह अन्य कर्म-विकल्पों को क्षय करता है।

प्रश्न २. मुक्कमूले जहा रुक्खं, सिंचमाणे ण रोहति।
एवं कम्मा ण रोहंति मोहणिज्जे क्खयंगते॥
इसका अर्थ बताइये।

उत्तर जिस वृक्ष की जड़ सूख जाती है, वह सिंचित होने पर भी नहीं बढ़ता। उसी प्रकार मोहनीय कर्म के नष्ट होने पर अन्य कर्म भी नहीं पनपते।

(४)

प्रश्न १. नो-कषायों से मन को बचाना कठिन क्यों है?

उत्तर नो-कषायों में मनुष्य कुछ को तो बुरा समझता ही नहीं है। जैसे हँसने में और सुखी-दुःखी होने में। उसी प्रकार भय में, शोक करने में और जुगुप्सा करने में 'मैं पाप कर रहा हूँ' यह बात मनुष्य को याद नहीं आती है। इन नो-कषायों को मनुष्य स्वाभाविक समझता है। इन कारणों से नो-कषायों से मन को बचाना कठिन काम है।

प्रश्न २. चारित्र मोहनीय कर्म कितने प्रकार का होता है?

उत्तर चारित्र मोहनीय कर्म दो प्रकार का होता है- १. कषाय मोहनीय २. नो-कषाय मोहनीय। कषायों के उदय से कषाय-मोहनीय कर्म बंधता है। नो कषायों के उदय से नो-कषाय मोहनीय कर्म बंधता है।

प्रश्न ३. चारित्र मोहनीय कर्म का क्या कार्य है?

उत्तर चारित्र मोहनीय कर्म आत्मा के चारित्र गुण को आच्छादित करता है। जिससे वह अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि साधु और श्रावक संबंधी व्रतों का पालन नहीं कर पाता है।

(५)

प्रश्न १. मिथ्यात्व का क्या अर्थ है?

उत्तर जीव द्वारा तत्त्व के प्रति विपरीत श्रद्धा या रुचि होना, उसके प्रति यथार्थ रूप में न तो श्रद्धा करना, न ही रुचि रखना मिथ्यात्व है।

प्रश्न २. मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के प्रभाव से क्या होता है?

उत्तर इसके प्रभाव से जीव को तत्त्व-रुचि और देव, गुरु एवं धर्म के प्रति श्रद्धा नहीं होकर शंका-कुशंका होती है। वह झूठा पूर्वाग्रह पकड़े रखता है। सत्य को जानते हुए भी स्वीकार नहीं करता। अपने मिथ्याग्रह को प्रतिष्ठा का प्रश्न बताकर उसे नहीं छोड़ता।

प्रश्न १. मोहनीय कर्म को आत्मा का अरि (शत्रु) क्यों कहा गया है?

उत्तर मोहनीय कर्म जीव का सबसे बड़ा शत्रु है, क्योंकि उसके रहते जीव को भव-भ्रमण से मुक्ति नहीं मिल सकती। वह दुःखों का अन्त नहीं कर सकता। मोहनीय कर्म के रहते सभी कर्म विद्यमान रहते हैं।

प्रश्न २. मोहनीय कर्म को आगमों में सेनापति क्यों कहा गया है?

उत्तर जिस प्रकार सेनापति के चले जाने या भाग जाने से सेना में भगदड़ मच जाती है, वैसे ही मोह कर्म के नष्ट हो जाने पर शेष सारे घातिकर्म (ज्ञानावरण, दर्शनावरण एवं अन्तराय) भी टूट जाते हैं। शेष रहे चार अघाति कर्म भी आयुष्य कर्म की समाप्ति होते ही समाप्त हो जाते हैं।

प्रश्न ३. मोहनीय कर्म किस प्रकार दोहरा कार्य करता है?

उत्तर मोहनीय कर्म दोहरा कार्य करता है- एक ओर वह आत्मा के सम्यक्त्व को प्रकट नहीं होने देता अथवा उसे विकृत करता है तथा दूसरी ओर वह चारित्र को विकृत और कुण्ठित करता है।

(७)

प्रश्न १. ***मोह महा दुःख रूप है, ताको मार निकार।***
प्रीत जगत की छोड़ दे, तब होवे निस्तार॥

उपर्युक्त दोहे के रचयिता कौन है?

उत्तर संत चरनदास

प्रश्न २. ***अष्ट कर्म नो राजवी हो, मोह प्रथम क्षय कीध।***
शुध समकित चारित्रनी हो परम क्षायक गुण लीध॥

उपर्युक्त पद्य के लेखक कौन है?

उत्तर कवि विनयचन्द्र जी।

प्रश्न ३. माधव मोह पाश किम छूटे?
बाहर कोटि उपाय करिये, अभ्यंतर ग्रंथि न टूटे।।
उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने क्या कहा है?

उत्तर हे कृष्ण! इस मोह रूपी जबर्दस्त पाश से मैं किस प्रकार छूट सकूँगा? बाहर से करोड़ों उपाय करता हूँ, किन्तु यह मोह रूपी आंतरिक ग्रंथि तो खुल ही नहीं पा रही है।

(८)

प्रश्न १. 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः' इन शब्दों में क्या बतलाया गया है?

उत्तर विनाश का समय समीप हो तो मनुष्य की बुद्धि विपरीत चलने लगती है अर्थात् वह मोह ग्रस्त हो जाता है।

प्रश्न २. उन्मार्ग का उपदेश देने, सच्ची बात का अपलाप करने और जिन, मुनि, शास्त्र, संघ आदि की निन्दा करने से कौन से कर्म का बंधन होता है?

उत्तर दर्शन मोहनीय कर्म का।

प्रश्न ३. क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों की तीव्रता से कौनसे कर्म का बंध होता है?

उत्तर चारित्र मोहनीय कर्म का।

(९)

प्रश्न १. मोहनीय कर्म को मदिरा के समान क्यों कहा गया है?

उत्तर मोहनीय कर्म मदिरा के समान है, जैसे शराब मनुष्य की बुद्धि को मूढ़ बना देती है, उसका विवेक नष्ट कर देती है, जिससे उसे कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का भान नहीं रहता। वैसे ही मोहनीय कर्म जीव के स्वभाव को विकृत कर देता है जिससे वह अपना वास्तविक स्वभाव भूलकर स्त्री-पुरुष, पुत्र, धन-सम्पत्ति आदि पर-पदार्थों को अपना समझ लेता है। उनकी प्राप्ति होने पर वह अपने को सुखी और छिन जाने पर दुःखी अनुभव करता है।

प्रश्न २. मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट एवं जघन्य स्थिति कितनी है?

उत्तर उत्कृष्ट स्थिति- ७० कोटाकोटि सागरोपम, जघन्य स्थिति- अंतर्मुहूर्त

प्रश्न ३. दशवैकालिक सूत्र में 'जयं चरे' का मूल मंत्र किस तथ्य को उजागर करता है?

उत्तर यदि व्यक्ति सावधान (अप्रमत्त) एवं ज्ञाता द्रष्टा होकर तथा अलिप्त-अनासक्त होकर कोई भी कार्य करता है तो वहाँ भाव हिंसा नहीं होगी, द्रव्य हिंसा कदाचित् हो सकती है, परन्तु उससे भाव कर्म का बंध नहीं होगा।

(१०)

प्रश्न १. 'मोहनीय कर्म के आगे अनेक महान् पुरुष पराजित हो गए' इस कथन की पुष्टि हेतु कुछ उदाहरण दीजिए।

उत्तर १. चार ज्ञान के धनी, अनेक लब्धि निधान तपोधनी श्री इन्द्रभूति गौतम गणधर भी मोह के कारण भगवान महावीर के जीवन काल में केवलज्ञान प्राप्त नहीं कर सके।

२. शालिभद्र मुनि को जरा से मोह के कारण एक जन्म और लेना पड़ा।

प्रश्न २. "जितने भी अविद्यावान पुरुष हैं, वे सब अपने लिये दुःख पैदा करते हैं, वे मूढ़ बनकर अनन्त जन्म-मरण रूप संसार में भटकते रहते हैं।" दर्शन मोहनीय कर्म के प्रभाव को व्यक्त करते हुए कौनसे आगम में उपर्युक्त बात कही गई है?

उत्तर उत्तराध्ययन सूत्र में यथा-

जावंतऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा।
लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए॥ -उत्तराध्ययन सूत्र ६.१

प्रश्न ३. 'सांसारिक सुख-दुःखों के करण्ट का पावर हाउस मोहनीय कर्म है।' यह कथन किस प्रकार सही है?

उत्तर लोगों द्वारा राग-द्वेष करके एक को अच्छा, एक को बुरा, एक पर प्रीति, दूसरे पर अप्रीति, एक पर मनोज्ञता और दूसरे पर अमनोज्ञता मोहनीय कर्म के वशीभूत होकर ही जीव करता है, इसीलिए सांसारिक सुख-दुःखों के करण्ट का पावर हाउस मोहनीय कर्म है।

-89, Audiappa Naicken Street, Chennai(T.N.)

जल का उपयोग कब, क्यों, कितना और कैसे करें?

श्री चंचलमल चोरडिया

शरीर में जल के कार्य

हवा के पश्चात् शरीर में दूसरी सबसे बड़ी आवश्यकता पानी की होती है। पानी के बिना जीवन लम्बे समय तक नहीं चल सकता। शरीर में लगभग दो तिहाई भाग पानी का होता है। शरीर के अलग-अलग भागों में पानी की आवश्यकता अलग-अलग होती है। जब पानी के आवश्यक अनुपात में असंतुलन हो जाता है तो शारीरिक क्रियाएँ प्रभावित होने लगती हैं।

हमारे शरीर में जल का प्रमुख कार्य भोजन पचाने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं में शामिल होना तथा शरीर संरचना के सहयोगी अवयवों का निर्माण करना होता है। जल शरीर के भीतर विद्यमान गंदगी को पसीने एवं मलमूत्र के माध्यम से बाहर निकालने, शरीर के तापक्रम को नियंत्रित करने तथा शारीरिक शुद्धि के लिए बहुत उपयोगी एवं लाभकारी होता है। शरीर में जल की कमी से कब्ज, थकान, ग्रीष्म ऋतु में लू आदि की अधिक संभावना रहती है। जल के कारण ही हमें, छः प्रकार के रसों-मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा, तीखा, कषैला आदि का अलग-अलग स्वाद अनुभव होता है। अतः हमें यह जानना और समझना आवश्यक है कि पानी का उपयोग हम कब और कैसे करें? पानी कितना, कैसा और कब पीयें? उसका तापमान कितना हो?

पानी कैसा पीयें?

स्वच्छ, शुद्ध, हल्का, छना हुआ अथवा उबला हुआ पानी स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होता है। छने हुए पानी में भी जलवायु एवं वातावरण के अनुसार निश्चित समय पश्चात् जीवों की उत्पत्ति की पुनः संभावना रहती है। अतः उपयोग लेते समय इस तथ्य की छानबीन कर लेनी चाहिए एवं आशंका होने पर जल को पुनः छानकर ही पीना चाहिए। परन्तु आजकल पश्चिम के अन्धानुकरण एवं भ्रामक विज्ञापनों से प्रभावित स्वयं की रोग-प्रतिरोधक क्षमता ठीक न होने के कारण मिनरल वाटर के नाम से पुराना अनछना, हानिकारक, प्लास्टिक

बोतलों में बंद महँगा पानी पीने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, जो सबके लिए आवश्यक नहीं है। इस तथ्य पर पूर्वाग्रह छोड़ समग्र दृष्टिकोण से चिन्तन आवश्यक है।

पानी कैसे पीयें?

पानी को धीरे-धीरे, घूँट-घूँट करके, बैठकर, चन्द्र स्वर में पीना लाभप्रद होता है। घूँट-घूँट पानी पीने से पानी के साथ थूक मिल जाने से वह पानी पाचक बन जाता है। खड़े-खड़े पानी पीने से गैस, वात-विकार, घुटने तथा अन्य जोड़ों का दर्द, दृष्टि दोष एवं श्रवण विकार पनपने की संभावना रहती है।

पानी कब पीयें?

आमाशय में भोजन-पाचन की प्रारम्भिक क्रिया के पश्चात् पानी पीना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। भोजन पाचन से पूर्व पानी पीने से आंव की वृद्धि, अपच और कब्ज होने की संभावना रहती है। भोजन के दो घंटे पश्चात् जितनी आवश्यकता हो खूब पानी पीना चाहिए, जिससे शरीर में पानी की कमी न हो। भोजन के डेढ़ से २ घंटे पहले पर्याप्त मात्रा में जल पीना उत्तम रहता है। ऐसा करने से पेट के अन्दर अपचित आहार जो सड़ता रहता है, पानी में पूर्णतया घुल जाता है। पाचन संस्थान एवं पाचक रस ग्रन्थियाँ सबल एवं स्वस्थ बनती हैं। दिन में दो-तीन घंटे के अन्तर पर पानी अवश्य पीना चाहिए, क्योंकि इससे अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का स्राव पर्याप्त मात्रा में होता रहता है। उच्च अम्लता में भी अधिक पानी पीना चाहिए, क्योंकि वह पेट तथा पानी नली के अन्दर की कोमल सतह को जलन से बचाता है। पर्याप्त मात्रा में जल पीने से पित्ताशय व गुर्दे की पथरी तथा जोड़ों की सूजन व दर्द ठीक होते हैं। रक्त में मिश्रित विकार घुलकर बाहर निकल जाते हैं।

भय, क्रोध, मूर्च्छा, शोक व चोट लग जाने के समय अन्तःस्रावी ग्रन्थियों द्वारा छोड़े गये हानिकारक स्रावों के प्रभाव को कम करने के लिये पानी पीना लाभप्रद होता है। डायरिया, हैजा व उल्टी-दस्त के समय उबाल कर ठंडा किया हुआ पानी पीना चाहिये। उपवास के समय पाचन अंगों को भोजन पचाने का कार्य नहीं करना पड़ता, अतः अधिक पानी पीने से शरीर से विजातीय तत्वों के निष्कासन में मदद मिलती है।

स्वास्थ्यवर्द्धक उषापान

प्रातःकाल बिना कुछ खाये-पीये एवं बिना दातुन व कुल्ला किए भरपेट पानी पीने की प्रक्रिया को उषापान कहते हैं। रात भर में निःश्वास के साथ जीभ पर विजातीय तत्त्व जमा हो जाते हैं। इसी कारण दिन भर कार्य करने के बावजूद मुँह में जितनी बदबू नहीं आती, उतनी निद्रा में बिना कुछ खाये ही आती है। ये विजातीय तत्त्व जब पानी के साथ घुलकर पेट में पुनः जाते हैं तब औषधि का कार्य करते हैं। अतः उषापान का पूर्ण लाभ बिना दातुन पानी पीने से ही मिलता है। उसके पश्चात् टहलने अथवा पेट का हलन-चलन वाला व्यायाम (संकुचन और फैलाना) करने से पेट में आँतें एकदम साफ हो जाती हैं, जिससे पाचन संबंधी सभी प्रकार के रोगों में शीघ्र राहत मिलती है। पानी पीने का श्रेष्ठतम समय प्रातःकाल भूखे पेट होता है। रात्रि के विश्राम काल में चयापचय क्रिया द्वारा जो विजातीय अनावश्यक तत्त्व शरीर में रात भर में जमा हो जाते हैं, उनका निष्कासन गुर्दे, आँतों, त्वचा अथवा फेफड़ों द्वारा होता है। अतः उषापान से ये अंग, सक्रिय होकर समस्त विजातीय पदार्थों को बाहर निकालने में तत्पर हो जाते हैं। जब तक रात भर का एकत्रित विष भलीभाँति निष्कासित नहीं होता और ऊपर से आहार किया जाये तो विभिन्न प्रकार के रोग होने की संभावना रहती है। उषापान से बवासीर, सूजन, संग्रहणी, ज्वर, उदर रोग, कब्ज, आंत्ररोग, मोटापा, गुर्दे संबंधी रोग, यकृत रोग, नासिका आदि से रक्त स्राव, कमर दर्द, आँख, कान आदि विभिन्न अंगों के रोगों से मुक्ति मिलती है। इससे नेत्र ज्योति में वृद्धि होती है, बुद्धि निर्मल बनती है तथा सिर के बाल जल्दी सफेद नहीं होते अर्थात् अनेक रोगों में लाभ होता है।

पानी कब नहीं पीना चाहिए?

चिकनाई वाले पदार्थ अथवा मीठा खाने के तुरन्त बाद पानी पीने से खाँसी और गले के रोग होने की संभावना रहती है। धूप में चलकर आने पर अथवा व्यायाम के पश्चात् जब तक पसीना पूरा सूख न जाये पानी नहीं पीना चाहिये, अन्यथा जुकाम होने की संभावना रहती है। चिकित्सकों की दृष्टि से शौच के तुरन्त पश्चात् भी पानी नहीं पीना चाहिये। सोने के लगभग दो घंटे पूर्व तक पानी नहीं पीना चाहिये। विशेषकर ऐसे व्यक्तियों को जिन्हें रात्रि में पेशाब के लिए बार-बार उठना पड़ता है। सोते समय पानी पीने से निद्रा में पेशाब की

शंका बनी रहने के कारण गहरी निद्रा आने में बाधा पहुँचती है। एक बार निद्रा भंग होने के पश्चात् पुनः निद्रा सरलता से नहीं आती। अतः ऐसे व्यक्तियों को अधिक समय तक सोये रहना पड़ता है। परिणामस्वरूप प्रातः समय पर जल्दी नहीं उठ पाते।

खाना खाने के पश्चात् आमाशय में लीवर, पित्ताशय, पेन्क्रियाज आदि के स्राव और अम्ल के मिलने से जठराग्नि प्रदीप्त होती है। अतः प्रायः जनसाधारण को पानी पीने की इच्छा होती है। परन्तु पानी पीने से पाचक रस पतले हो जाते हैं, जिसके कारण आमाशय में भोजन का पूर्ण पाचन नहीं हो पाता। फलतः भोजन से जो ऊर्जा मिलनी चाहिए, प्रायः नहीं मिलती। आहार के रूप में ग्रहण किये गये जिन पौष्टिक तत्त्वों से रक्त, वीर्य आदि अवयवों का निर्माण होना चाहिये, नहीं हो पाता। अपाचित भोजन, आमाशय और आँतों में ही पड़ा रहता है, जिससे मंदाग्नि, कब्ज, गैस आदि विभिन्न पाचन संबंधी रोगों के होने की संभावना रहती है। दूसरी तरफ अपाचित भोजन को मल द्वारा निष्कासित करने के लिये शरीर को व्यर्थ में अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। भोजन के पश्चात् पानी पीना अति आवश्यक हो तो गर्म-गर्म पीने योग्य थोड़ा पानी घूँट-घूँट कर पी सकते हैं, जिससे आमाशय की पाचन क्षमता कम नहीं होती।

गर्म पानी औषधि है

ठण्डा पेय तथा फ्रीज में रखा अथवा बर्फ युक्त पानी स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है। स्वस्थ अवस्था में हमारे शरीर का तापक्रम ९८.४ डिग्री फारहनाइट के लगभग होता है। जिस प्रकार बिजली के उपकरण एयर कंडीशनर, कूलर आदि चलाने से बिजली खर्च होती है उसी प्रकार ठण्डे पेय पीने अथवा खाने से शरीर को अपना तापक्रम नियन्त्रित रखने के लिये अपनी संचित ऊर्जा व्यर्थ में खर्च करनी पड़ती है। अतः पानी यथासंभव शरीर के तापक्रम के अनुकूल पीना चाहिये। आजकल सामूहिक भोज में भोजन के पश्चात् आइसक्रीम और ठण्डे पेय पीने का जो प्रचलन है, वह स्वास्थ्य के लिये बहुत हानिकारक होता है।

गर्मी स्वयं एक प्रकार की ऊर्जा है और शारीरिक गतिविधियों में उसका व्यय होता है। अतः जब कभी हम थकान अथवा कमजोरी का अनुभव करते हैं

तब कुछ गर्म पानी पीने से शरीर में स्फूर्ति आती है। जिन व्यक्तियों को लगातार अधिक बोलने का अर्थात् भाषण अथवा प्रवचन देने का कार्य पड़ता है, जब वे थकान का अनुभव करें, तब ऐसा पानी पीने से पुनः ऊर्जा का प्रवाह सक्रिय हो जाता है। लम्बी तपस्या करने वालों के लिये ऐसा पानी विशेष उपयोगी होता है, जिससे शक्ति का संचार होता है। गर्म पानी कफ एवं सर्दी संबंधी रोगों में ऊर्जा को पुनः प्राप्त करने का सरलतम उपाय होता है।

गर्म पानी पीने से पेट में भारीपन, खट्टी डकारें आना बन्द होता है, पेट की जलन दूर होती है तथा पाचन सुधरता है। गर्म जल सूखी खाँसी की प्रभावशाली औषधि है। एक गिलास गर्म जल में थोड़ा सेंधा नमक डालकर पीने से कफ पतला हो जाता है और अंत में खासी का वेग बहुत कम हो जाता है। खाली पेट गर्म पानी पीने से मूत्र का अवरोध दूर हो जाता है। हृदय की जलन कम होती है। जिनके मूत्र पीला अथवा लाल आता हो, मूत्र नली में जलन हो, उनको गर्म जल पीने से लाभ होता है।

पानी की दवा कैसे बनाएँ?

पानी विभिन्न प्रकार की ऊर्जाओं को सरलता से अपने अन्दर समाहित कर लेता है। अतः आजकल विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियों में पानी में आवश्यक ऊर्जा संचित कर रोगी को देने से उपचार को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शरीर में जिस रंग की आवश्यकता होती है, उस रंग की काँच की बोतल या बर्तन में पानी को निश्चित विधि तथा धूप में रखने से पानी में उस रंग के गुण आ जाते हैं। चुम्बक पर पानी को रखने से पानी चुम्बकीय ऊर्जा वाला बन जाता है। इसी प्रकार पिरामिड के अन्दर अथवा पिरामिड के ऊपर रखने से पानी में स्वास्थ्यवर्द्धक गुण उत्पन्न हो जाते है। पानी को रेकी, रत्नों, मंत्रों, विभिन्न प्रकार के रंगों के प्रकाश, अलग-अलग धातु के सम्पर्क में रखने से पानी में उनसे संबंधित गुणों का समावेश हो जाता है। उस पानी को विभिन्न पद्धतियों के चिकित्सक उपचार हेतु दवा के रूप में उपयोग में लेने का परामर्श देते हैं। पानी को जैसे बर्तन अथवा धातु के सम्पर्क में रखा जाता है, उसमें उस धातु के गुण उत्पन्न होने लगते हैं। प्रत्येक धातु का स्वास्थ्य की दृष्टि से अपना अलग प्रभाव होता है। सोने के पात्र में रखा जल पीने से श्वसन प्रणाली के रोग, जैसे- दमा, श्वास फूलना, फेफड़ों संबंधी रोग, हृदय और मस्तिष्क संबंधी रोगों में लाभ

होता है। चाँदी से पाचन क्रिया के अवयवों, जैसे- आमाशय, लीवर, पित्ताशय, आंतों के अनेक रोग एवं मूत्र प्रणाली के रोगों में आराम मिलता है। तांबे में ऊर्जित जल के सेवन से जोड़ों के रोग, कुष्ठरोग, पोलियो, रक्तचाप, घुटनों का दर्द, मानसिक तनाव आदि में काफी लाभ होता है। स्नायु संस्थान शक्तिशाली होता है। इसी कारण पीने के पानी को प्लास्टिक बर्तनों में संग्रह नहीं करना चाहिए, क्योंकि उसमें हानिकारक रसायनों के प्रभाव की संभावना रहती है।

सारांश यही है कि पानी के विवेकपूर्ण एवं आवश्यकतानुसार सही उपयोग से हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं, रोगों से बच सकते हैं तथा रोग की स्थिति में पुनः स्वस्थ हो सकते हैं।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर (राज.)

सजग रहें हम

श्री गणपत सुराणा

किसी भी घर, परिवार, समाज के पतन के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

१. प्रेम की कमी **२. विश्वास की कमी**

३. त्याग की कमी **४. स्वार्थ की अधिकता**

५. लालच की प्रधानता

इन कारणों से विचार संकुचित होते हैं तथा संकुचित विचार प्रगति के मार्ग में बाधा पहुँचाते हैं, विकास अवरुद्ध हो जाता है तथा स्वयं में अपराध बोध होता है।

अतः ऐसा कोई काम मत करो, जिस काम को करने के बाद आँखों में आँसू भर कर यह कहना पड़े कि काश! यदि मैं ऐसा न करता तो कितना अच्छा होता।

अतः समय रहते ही सजग हो जाएँ और जीवन को प्रेम, विश्वास, प्रभु आस्था तथा संतोष से जोड़ दें तभी हमारे जीवन में यही वाक्य गूँजते रहेंगे-

गुण सौरभ से रहे महकता, जहाँ जीवन सुखकर हो,
ऐसा अपना घर हो॥
कथनी करनी रहे एक सी, नहीं जिसमें अन्तर हो।
ऐसा अपना घर हो॥

-१६/२१४, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

युवा-स्तम्भ

अहिंसा का तात्पर्य

श्री चतरसिंह मेहता

अहिंसा पर सीधा विचार करना कठिन है। विचार तो हिंसा का हो सकता है। यदि किसी चिकित्सक से स्वास्थ्य की परिभाषा पूछें तो वह कहेगा, जहाँ बीमारी न हो। यह तो बीमारी की बात हुई, पर स्वास्थ्य को बीमारी न होने से आसानी से समझा जा सकता है। चर्चा बीमारी की हो सकती है, स्वास्थ्य की नहीं। यही बात अहिंसा के बारे में है। अहिंसा को भी हिंसा से ही समझा जा सकता है।

हिंसा के कई रूप हैं, कई चेहरे हैं, कई आयाम हैं। हिंसा का अर्थ है ऐसा चित्त जो लड़ने को आतुर है, जिसमें वैमनस्य भरा है, जो दूसरों को दुःख पहुँचाए बिना सुख अनुभव नहीं करता है। यदि सही रूप से समझें तो हिंसा दूसरे को दूसरा मानने से शुरू होती है। किसी भी क्षण किसी को अपना समझें तो उसी क्षण दोनों के बीच अहिंसा की धारा बहनी चालू हो जाती है। परन्तु जिसे हम अपना समझते हैं वह भी गहरे में दूसरा बना रहता है। कभी वह अपना हो जाता है, कभी दूसरा। अपना कहने में भी दूसरे का भाव मौजूद रहता है। दूसरा जब तक दूसरा है हिंसा की बुनियाद कायम है। असल में दूसरे से जो हमारा फासला है, दूरी है, वह शरीर की ही दूरी है। चेतना की कोई दूरी नहीं है। हम जब चींटी से बचकर चलते हैं तो इसलिये कि चींटी के मरने से पाप न लगे। चींटी से कोई प्रयोजन नहीं, प्रयोजन अपने से है, पर महावीर कहेंगे कि अपने पर पैर कैसे रखा जा सकता है। जब दूसरापन का भाव मिट जाए तभी अहिंसा फलित होती है।

दूसरापन दूर होता है 'मैं' के समझने से। मैं कौन हूँ, मैं कहाँ से आया? यदि स्वयं को जान लिया तो दूसरेपन का भाव मिट जाएगा। स्वामी रामतीर्थ अमेरिका में गये। कुछ लोगों ने उन्हें गालियाँ दीं। रामतीर्थ ने कहा उन्होंने राम को गालियाँ दीं और हम हँस रहे थे, भीतर खुश हो रहे थे कि देखों, राम को कैसी गालियाँ पड़ रही हैं। हम बाहर थे। मैं भी झूठ और दूसरा भी झूठ है। जिस दिन दोनों गिर जाएँ तब न प्रशंसा का असर न निन्दा का, न सम्मान का न अपमान का। मैं और तू गिर जाए तभी अहिंसा का बीज फूटा। महावीर के शब्दों में 'आत्मज्ञान अहिंसा है और आत्म-अज्ञान हिंसा।' अपने को न जानना हिंसा

का आरम्भ है। जो स्वयं को जान लेता है उसके लिए दूसरेपन का भाव मिट जाता है और दूसरेपन का भाव मिटते ही हिंसा के सभी द्वार बंद हो जाते हैं।

रोग की बुनियाद 'हिंसा'

शरीर के जितने रोग हैं उनमें नब्बे प्रतिशत से ज्यादा मन के रोग हैं जो शरीर तक फैलते हैं। मन का बुनियादी रोग है- हिंसा। जो चित्त को दुःख पहुँचायेगा वह स्वयं दुःखी होगा। जब भीतर दुःख होता है, हिंसा होती है तभी वह बहकर दूसरों तक पहुँचती है। इसलिये हिंसक कभी स्वस्थ नहीं हो सकता। जब हिंसा का बीज भीतर होता है तो वह अन्तर्द्वन्द्व, अन्तर-संघर्ष, अन्तर पीड़ा बन जाती है। भीतर एक लड़ाई आरम्भ हो जाती है। जिसकी भीतरी लयबद्धता समाप्त हो जाती है वह स्वस्थ नहीं रहता। अंग्रेजी के शब्द 'डिसीज' का अर्थ है- डिस-ईज अर्थात् भीतर का संतुलन खो गया। फिर शरीर अधिक दिनों तक स्वस्थ नहीं रह सकता। इसीलिये तो कहा गया है कि हिंसा एक रोग है और अहिंसा रोगमुक्ति अर्थात् स्वास्थ्य।

जीव-रसायन की दृष्टि से समझें तो हिंसा रुग्णता है। जैसे ही चित्त हिंसा से भरता है, शरीर विषाक्त द्रव्यों से भर जाता है और फिर रोगों की शुरुआत। जब व्यक्ति के चित्त से हिंसा विदा हो जाती है तो जिन ग्रन्थियों ने हिंसा को सहयोग दिया था, जिसके विष और मादक तत्त्व मनुष्य को विक्षिप्त कर रहे थे, उनके स्थान पर वे ही ग्रन्थियाँ मनुष्य के जीवन में नई तरह की रासायनिक क्रांति लानी शुरु कर देती है। दुर्ग्रन्थ के स्थान पर सुगन्ध फैलनी आरम्भ हो जाती है।

एक ही चेतना के विभिन्न रूप

भगवान् महावीर ने कहा है- **तुमं सि नाम तं चेव, जं हंतव्वं ति मन्नसि। तुमं सि नाम तं चेव, जं अज्जावेयव्वं ति मन्नसि।** अर्थात् जिसे तू हनन योग्य मानता है, वह तू ही है। जिसे तू मारने चला है, जिसको तू मारने की योजना बनाई है वह तू ही है। जिसे तू आज्ञा में रखने योग्य मानता है वह भी तू ही है। वह एक ही आत्मा का विस्तार है। तेरे जैसा चैतन्य दूसरे में भी है। देह अलग-अलग है, शैली व्यवस्था अलग है, रंग-ढंग अलग-अलग है, पर यह सब ऊपर-ऊपर की बात है। भीतर जो ज्योति जल रही है, वह एक है। ज्योति का स्वभाव एक है। इस ज्योति को नुकसान पहुँचाना, अपने आपको नुकसान पहुँचाना है।

एक युवक निकोदेमस ने जीसस से वह सूत्र पूछा जो जीवन को बदल दे। जीसस ने कहा- दूसरे के साथ वह मत करना, जो तुम चाहते हो कि दूसरा तुम्हारे साथ न करे। महावीर भी यही समझाते हैं कि दूसरा, दूसरा नहीं है, तुम्हारे जैसा ही चैतन्य, तुम्हारे जैसी ही आत्मा, ठीक तुम्हारे जैसा ही सुख-दुःख का आकांक्षी है। यदि इतना समझ में आ जाए तो हिंसा से मुक्ति और अहिंसा का प्रादुर्भाव हो सकता है।

परम धर्म : अहिंसा

समणसुत्तं में कहा गया है कि "जैसे जगत् में मेरुपर्वत से ऊँचा और आकाश से विशाल कुछ भी नहीं है वैसे ही अहिंसा के समान कोई धर्म नहीं है।" महावीर की देशनाओं में पंच महाव्रत केन्द्रीय स्थान रखते हैं। इन पाँचों में अहिंसा शीर्ष स्थन पर है। यों देखा जाए तो अहिंसा में ही अन्य चारों महाव्रत समाहित हो सकते हैं। सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह में अहिंसा के ही अंग या आयाम हैं। 'अहिंसा' शब्द से यदि स्थूल हिंसा का निषेध अभिव्यक्त होता है तो सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह शब्दों से सूक्ष्म हिंसा का भी निषेध हो जाता है। इसीलिये तो अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। कुन्दकुन्द ने कहा कि राग की उत्पत्ति हिंसा है और अनुत्पत्ति अहिंसा। यह अहिंसा का सूक्ष्मतम विश्लेषण है। दूसरों को दुःख पहुँचाना, चोट पहुँचाना तो दूर की बात है। यह तो विचार का स्थूल रूप हो जाता है। यदि मन में ऐसी बात उठ जाए तो वह भी हिंसा है। फिर करने या न करने का सवाल नहीं है। धर्म कहता है कि गलत मत सोचो, क्योंकि आगे वही विचार घना होकर वस्तु बन जाता है। अपराध व पाप में यही तो भेद है। जब पाप कानून की पकड़ में आ जाए तो अपराध है। जब तक वह विचार में रहता है, व्यक्त नहीं होता, पुलिस नहीं पकड़ सकती। यदि भाव आ गया तो कब तक रुकेगा, घना होकर अवश्य बरसेगा। किसी को मारना, किसी का दिल दुःखाना तो हिंसा है ही, पर उसका विचार भी आरम्भ हुआ तो हिंसा हो गई। हिंसा का यह सूक्ष्मतम विवेचन ज्ञान में आ जाए तभी अहिंसा का सही स्वरूप प्रकट हो सकता है।

साक्षीभाव का जागरण

श्रीकृष्ण ने भी गीता में अहिंसा को दैवी सम्पदा को प्राप्त हुए पुरुष का लक्षण बताया है। अहिंसा के साथ उन्होंने सत्य, अक्रोध, त्याग, निन्दा न करना, शांति, अलोलुपता आदि कई गुणों को जोड़ा है, पर सबसे पहले अहिंसा

को रखा है। जब कोई दूसरा सुखी हो तो सुख का अनुभव करे और जब कोई दुःखी हो तो दुःख का अनुभव करे तो अहिंसा आरम्भ होती है। यह सहानुभूति नहीं, समानुभूति है। दूसरों की जगह अपने को समझे चाहे सुख हो या दुःख। यों ये दोनों ही बातें कठिन हैं। दूसरों को सुखी देखकर बिरले ही सुखी होते हैं, सामान्यतः तो दूसरे के सुख से पीड़ा होती है। अपने ही दुःख से बहुत परेशान हैं तो दूसरे के दुःख से दुःखी होकर अपनी परेशानी और क्यों बढ़ाना चाहेगा। सही रूप से लें तो बात कुछ दूसरी ही हो जाती है। दूसरे के दुःख में समानुभूति करेंगे तो चूंकि दुःख दूसरे का है, अतः स्वयं का आन्तरिक आत्यन्तिक हिस्सा बाहर खड़ा देखता रहेगा। दूसरे के सुख में उतनी उत्तेजना भी नहीं आएगी जितनी उत्तेजना स्वयं के सुख से आती है। जो व्यक्ति इस प्रकार दूसरे के सुख-दुःख का साक्षी हो गया, वह धीरे-धीरे अपने सुख-दुःख में भी साक्षी हो सकेगा। इस प्रकार अहिंसा का समानुभूति-भाव व्यक्ति में साक्षी भाव बढ़ाकर पूरे जीवन को नैतिक, पूरे जीवन को धार्मिक बनाने में सहायक हो जाएगा।

आन्तरिक परिष्कार

आचारांग में नैतिकता के दो रूप बताए गये हैं- आन्तरिक और बाह्य। इन्हें नैश्चयिक और व्यावहारिक भी कहा जाता है। नैश्चयिक साधना में आन्तरिक वृत्तियों के परिष्कार का प्रयत्न रहता है तथा साधना के व्यावहारिक स्वरूप में आचार के अनेक विधि-विधानों, परम्पराओं और लोकमर्यादाओं का सम्यक् पालन करना होता है। कई लोग आचार को, बाहरी क्रियाओं को नैतिकता की संज्ञा देते हैं और जो नैश्चयिक साधना है, भीतरी बदलाव है उसे धार्मिकता कहते हैं। उनका मानना है कि यह जरूरी नहीं है कि नैतिक व्यक्ति धार्मिक ही हो, पर धार्मिक व्यक्ति नैतिक भी होगा। इसी कारण आचारांग की दृष्टि में नैश्चयिक साधना अर्थात् धार्मिकता ही अन्तिम लक्ष्य माना गया है, यही साध्य माना गया है। यह हो सकता है कि कोई व्यक्ति किसी भय या दबाव के कारण नैतिक आचरण करे और स्वेच्छा से वैसा नहीं करे तो उस आचरण को नैतिक आचरण की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। भगवान् महावीर ने कहा है- **हयं नाणं कियाहीणं, हया अण्णाणओ किया**। अर्थात् क्रियाहीन ज्ञान व्यर्थ है और अज्ञानियों की क्रिया व्यर्थ है। क्रिया का उद्गम ज्ञान से होना चाहिये। यदि आचरण भीतर से नहीं उपजा है तो उसका कोई अर्थ नहीं है, वह पाखंड है। संत दादूदयाल ने भी कहा है- **ऊपरि आलम सब करै, साधु जन घट मांहि। दादू ऐसा अंतरा, ताथै बनती नाहिं**। ऊपर से दिखावा सभी करते हैं, भीतर खाली

होते हैं। अहिंसा में इस बात पर जोर है कि जो अहिंसक बनने का आचरण करे, वह नैश्चयिक हो, भीतरी धार्मिकता से, आत्मज्ञान से निकले। अहिंसा के लिये बाहरी क्रियाओं की तालिका हमारा मार्गदर्शन अवश्य करे, नैतिक समाज के निर्माण में सहयोगी जरूर बनें पर मूल बात है, चेतना निर्मल कैसे हो जिसके कारण सारी क्रियाएँ स्वस्फूर्त हों, सोच कर न करनी पड़ें। अहिंसा की संकल्पना आत्मज्ञान जगाएगी, भीतर की अग्नि के ऊपर छाया धुआँ हटाएगी, तब जरूर नैतिक समाज की नींव पड़ेगी और उस पर ऐसा भवन निर्मित होगा जो स्थायी सुख व आनन्द का खजाना बने।

दुर्लभ भी, सुलभ भी

डॉ. राधाकृष्णन का विचार है कि लोग अहिंसात्मक जीवन पद्धति को अपनाने में इसलिये हिचकते हैं कि वे समझते हैं कि इस लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह मनोवृत्ति ही प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है- एक ऐसी बाधा जिसे हर एक मनुष्य यदि वह दृढ़ संकल्प करले तो दूर हटा सकता है। वे कहते हैं कि हमें इस दृष्टिकोण को परे हटा देना होगा कि परिवेश अधिक बलशाली है और हम असहाय हैं।

पर मूल प्रश्न यह है कि ऐसे अहिंसक समाज की नींव कैसे पड़े। दुःख विजातीय है, आनन्द मनुष्य का स्वभाव है। दुःख विजातीय है इसीलिये इसे कोई नहीं चाहता। आनन्द स्वयं का स्वभाव है, सभी चाहते हैं पर मिलता सभी को दुःख है। महात्मा बुद्ध ने कहा है- "दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख दूर किया जा सकता है, इसके उपाय हैं।" एक कारगर उपाय है धर्म का श्रवण और धर्म का अध्ययन। पर यह आसान नहीं है। भगवान् महावीर ने कहा है- "ऐसे धर्म का श्रवण दुर्लभ है जिसे सुनकर तप, क्षमा और अहिंसा को प्राप्त किया जाए। कदाचित् धर्म का श्रवण हो भी जाए तो उस पर श्रद्धा होना परम दुर्लभ है। बहुत से लोग श्रवण करके भी विचलित हो जाते हैं। धर्मश्रवण व श्रद्धा हो जाने पर भी पुरुषार्थ होना और भी दुर्लभ है। बहुत से लोग संयम में रुचि रखते हुए भी उसे सम्यक्रूपेण स्वीकार नहीं कर पाते।" भगवान् की यह वाणी संसार के सत्य को प्रकट करती है और यह भी दिशा देती है कि मनुष्य के इस स्वभाव को ध्यान में रखकर काम किया जाए, निरन्तर प्रयत्न किया जाए तो मनुष्य के मूल स्वभाव से उसे परिचित किया जा सकता है। कहा गया है कि कुएँ के कठोर पत्थर पर निरन्तर रस्सी जैसी कोमल चीज की चोट पड़ने पर उस पर भी निशान पड़ जाते

हैं।

श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं- **''असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥''** हे महाबाहो! निस्सन्देह मन चंचल और कठिनता से वश में आने वाला है, परन्तु हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! मन अभ्यास के द्वारा बारम्बार यत्न करने से और वैराग्य से वश में होता है। अभ्यास का अर्थ सभी जानते हैं। अभ्यास का अर्थ है कि भीतर पुराना जमा प्रवाह है उसको बदल देना। जो अंग्रेजी नहीं जानते उन्हें अभ्यास करा दिया जाए तो वे अंग्रेजी बोल सकते हैं। श्रीकृष्ण ने अभ्यास के साथ वैराग्य जोड़ दिया। वैराग्य का अर्थ है विषयों से मुक्ति और स्वयं की ओर यात्रा। चित्त दो यात्राएँ कर सकता है- १. पदार्थ की तरफ या २. पदार्थ से स्वयं की तरफ। पदार्थ पर जाती चेतना राग और पदार्थ से स्वयं की ओर आती चेतना वैराग्य। राग का तो खूब अभ्यास है, पर वैराग्य का नहीं है जिसे किए बिना अहिंसा की ओर प्रवृत्त ही नहीं हुआ जा सकता है। यदि यह प्रतीति हो जाए कि जगत् में बाहर कोई सुख नहीं है, दिखता भी हो तो वह क्षणभंगुर है, दूसरे से किसी प्रकार की शांति संभव नहीं है, तो परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त हो गया। यह संभव हो सकता है- सद्साहित्य के अध्ययन से, संतो के श्रवण से, ध्यान और अपने जीवन या अध्यात्म में रुचि से। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसमें परमात्मा की संभावना न हो, कठिनाई को हल करने की क्षमता न हो। यह संभावना है, क्षमता है पर जगाने से ही पता लगेगा, साहस व संकल्प करना होगा। तब दुर्लभ भी सरल व सुलभ हो जाता है।

-सेक्टर २, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

वचनामृत

- विषयों की चर्चा ही नरक है।
- स्वयं से बढ़कर स्वयं को कोई नहीं जानता।
- भगवान के गुणों के प्रति अनुराग भक्ति है।
- गुण ग्राहकता का भाव विशेष रूप से मानव में ही आता है।
- मैं क्या था? यह मरने के बाद ही प्रमाणित होता है।
- सबके भले में ही अपना भला है।
- वासना का त्याग ही सुख की जड़ है।

-संकलन : त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर

मत मारो माता मुझको तुम

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

(१)

तेरी कुक्षि में मैं आई,
धन्य भाग्य है मेरा माता।
मुझको तेरी गोद मिलेगी,
सोच सोच यह मन हर्षाता।।

(२)

ममता की मूरत है तू माँ,
सेवा की तू अमर कहानी।
कितना कोमल मन है तेरा,
मैं भी तेरी एक निशानी।।

(३)

किलकारी मेरी आंगन में,
पा कर सबका प्यार मिलेगा।
मुझको देख देखकर माता,
तेरा चेहरा खूब खिलेगा।।

(४)

गर्भ काल में मैं हूँ लेकिन,
कितना मेरा ध्यान है तुमको।
कदम कदम पर संभल संभल कर,
पाल रही माता तू मुझको।।

(५)

दुनियाँ में आने वाले का,
पहला रिश्ता माँ से होता है।
जिसको माँ का प्यार मिला ना,
वह जीवन भर रोता है।।

(६)

हाय अचानक तेरे मन में,
क्यों ऐसी यह बात आ गई।
मुझको मार डालने की माता,
क्यों तूने है की अगुवाई।।

(७)

क्यों निष्ठुर बन गई हो माता,
ममता तेरी कहाँ खो गई?
अपनी ही बेटी के ऊपर,
क्यों ऐसा तू जुल्म ढा रही?।।

(८)

मत मारो माता मुझको तुम,
फफक फफक वह रो पड़ी थी।
नहीं कष्ट मैं दूँगी माता,
महारुदन की वह घड़ी थी।।

(९)

मत बन अपराधी तू माता,
जग में रुस्वाह हो जायेगी।
कौन पुकारेगा माँ कहकर,
सुनने को तू तरस जायेगी।।

(१०)

पुण्यवानी से मैंने माता,
नर तन का चोला पाया है।
तेरे मन में मेरे खातिर,
क्यों खयाल ऐसा आया है?।।

(११)

मत घबराओं माता मुझसे,
रोशन तेरा नाम करूँगी।
तेरा गौरव बढ़ते जाये,
ऐसा ही मैं काम करूँगी।।११।।

(१२)

मत पुत्रों से पीछे समझो,
बेटी धन पेटी होती है।
नहीं बाप कर्मी है बेटी,
बेटी आप कर्मी होती है।।

(१३)

सब कुछ तुमको है यह मालूम,
फिर क्यों मेरा घात चाह रही।
क्यों पत्थर दिल बनी हो माता,
क्यों मुझ पर नहीं दया आ रही?।।

(१४)

सोचो, सोचो, सोचो माता,
मेरी यह फरियाद सुनो तुम।
तू जननी जगदम्बा है माँ,
अपने मन कुछ रहम करो तुम।।

(१५)

ममता का तुम स्रोत बहाओ,
मेरे ऊपर दया करो माँ।
तेरी कोख में पल रही हूँ,
आने का इन्तजार करो माँ।।

(१६)

सुन बेटी की करुण पुकार को,
माता पिघल पिघल जाती है।
हाय! क्यों मैं अनर्थ कर रही?
छाती उसकी भर जाती है।।

(१७)

बेटी माफ करो मुझको तुम,
जो मन मेरे पाप आ गया।
नहीं करूँगी ऐसा अब मैं,
सद्बुद्धि से ध्यान आ गया।।

(१८)

भटक गई थी मैं राहों से,
ममता अपनी भूल गई थी।
थोड़े से सुख चैन की खातिर,
फर्ज मैं अपना भूल गई थी।।

मैं जग की जननी कहलाती,
नहीं बनूँगी हत्यारिन मैं।
कहलाऊँगी प्रेम पुजारिन,
तुम पर प्रेम लुटाऊँगी मैं।।१९।।

-स्टेशन रोड़, दुर्ग-४९१००१(छत्तीसगढ़)

अपने शत्रु या मित्र से, पुत्र या संबंधियों से झगड़ने में या दोस्ती करने में अपनी शक्ति बर्बाद मत करो। अपने को सर्वत्र (सब जीव और प्राणी में) देखो और अज्ञान से उत्पन्न अनेकत्व की भावना को त्याग दो।

बाल-स्तम्भ

परदेशी राजा

उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० जून २००६ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों **का चौक**, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को **श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर** द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। **पुरस्कारों की परिवर्तित राशि निम्नानुसार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। प्रतियोगिता में अब १० वर्ष से २१ वर्ष तक के छात्र-छात्रा भाग ले सकते हैं।**

लगभग २७०० वर्ष पहले सिताम्बिका (पेशावर) में परदेशी राजा राज्य करता था। वह बड़ा नास्तिक था। दया धर्म क्या होता है इस बात को वह जानता ही नहीं था। आत्मा-परमात्मा, पुण्य-पाप, स्वर्ग-नरक आदि को वह कोरी कल्पना ही समझता था। उसका चित्त नाम का प्रधानमंत्री था। एक बार राजा परदेशी ने अपने परममित्र अजितशत्रु को कुछ बहुमूल्य वस्तुएँ भेंट करने के लिये अपने प्रधानमंत्री 'चित्त' को भेजा। अजितशत्रु की नगरी में संयोगवश केशीश्रमण नाम के मुनि विराजमान थे। उनके उपदेशों को सुनने के लिये हजारों की भीड़ लगी रहती थी। चित्त को अनायास ही मुनि का उपदेश सुनने को मिल गया। चित्त के हृदय पर मुनि का अमिट प्रभाव पड़ा। उसने पूर्ण आस्तिक बन गृहस्थ धर्म धारण किया और मुनि से सिताम्बिका पधारने की विनति की।

एक बार मुनिश्री भी जगह-जगह विचरण करते हुए सिताम्बिका पधारें। मंत्री को इस बात की सूचना मिली। सारी जनता मुनि के दर्शनार्थ जा रही थी। मंत्री भी घूमने के बहाने राजा को लेकर भ्रमण के लिए निकला। उद्यान में लोगों की भीड़ देखकर राजा ने मंत्री से पूछा- आज यहाँ इतनी भीड़ क्यों है? मंत्री ने कहा- आज यहाँ निर्ग्रन्थ मुनि पधारे हुए हैं। वे स्वर्ग-नरक आदि को मानने वाले हैं। उन्हीं के दर्शनार्थ आज यहाँ भीड़ लगी हुई है। राजा ने कहा- तब तो हम भी चलें और मुनि से पूछें कि स्वर्ग-नरक कहाँ हैं? मंत्री तो चाहता ही यही था। वह

राजा को मुनि के पास ले गया।

राजा ने मुनि से पूछा- महाराज! क्या स्वर्ग और नरक हैं? अगर हैं तो मेरे दादा मुझ से भी अधिक पापी थे। आपकी मान्यतानुसार वे अवश्य नरक में गये होंगे और महान् दुःखों का सामना कर रहे होंगे। वे क्यों नहीं आकर मुझे अपना हाल सुनाते? जिससे मैं फिर हिंसा न करूँ।

मुनि ने कहा- राजन्! अगर तुम्हारी रानी के साथ कोई दुर्व्यवहार करे तो तुम क्या करोगे?

राजा- मैं तत्काल उसे जान से मार दूँगा।

मुनि- अगर वह कुछ समय का अवकाश चाहे तो क्या जाने दोगे?

राजा- नहीं, कदापि नहीं। मैं उसे तत्क्षण मार डालूँगा।

मुनि- जब तुम अपने अपराधी को एक मिनट भी छोड़ना नहीं चाहोगे *तो तुम्हारे दादा को, जिन्होंने अनेक पाप किये हैं, नरक से उन्हें कौन यहाँ आने* देगा?

राजा ने फिर दूसरा प्रश्न पूछा- महाराज! मेरी दादी बड़ी धर्मात्मा थी। वह अवश्य स्वर्ग में गई होगी। वह क्यों नहीं आकर मुझे पाप कर्म से रोकती है?

मुनि ने कहा- राजन्! कोई मनुष्य नहा धोकर संध्या-वन्दन आदि शुभ कृत्यों के लिये जा रहा हो और उस समय यदि एक भंगी पाखाने में उसे बातचीत करने को बुलावे तो क्या वह वहाँ जाना पसन्द करेगा?

राजा- नहीं।

मुनि- बस यही हाल अपनी दादी का भी समझ लो।

राजा ने फिर मुनि से तीसरा प्रश्न किया- महाराज! क्या आप आत्मा को दिखा सकते हैं?

मुनि ने कहा- राजन्! ये सामने पेड़ के पत्ते किससे हिल रहे हैं?

राजा- हवा से।

मुनि- क्या तुम हवा को देख सकते हो?

राजा- नहीं।

मुनि- जब तुम ऐसी स्थूल चीज को भी अपनी आँखों से नहीं देख सकते, तब आत्मा जैसी अरूपी चीज को कैसे देख सकते हो?

राजा- अच्छा महाराज! ये हाथी की आत्मा चींटी के शरीर में कैसे चली जाती है?

मुनि- राजन्! जिस तरह एक कमरे में एक दीपक के जलने से सारा कमरा प्रकाशमान हो जाता है और उसी दीपक पर यदि एक बर्तन ढाँक दिया जाय तो उसका वह प्रकाश बर्तन में ही समा जाता है उसी प्रकार हाथी की आत्मा के संबंध में भी जान लेना चाहिये।

इस प्रकार अनेक प्रश्नोत्तर कर राजा ने अन्त में अपनी हार मंजूर की और आस्तिक बनकर जैन धर्म को स्वीकार किया।

प्रश्न

१. सिद्ध कीजिए कि पुण्य एवं पाप का फल अवश्य मिलता है।

२. चित्त प्रधान परदेशी राजा को कहाँ और क्यों ले गया?

३. क्या आप स्वर्ग या नरक को मानते हैं? कारण सहित उत्तर दीजिये।

४. हाथी की आत्मा और चींटी की आत्मा में क्या कोई अन्तर है?

५. इस कहानी में नास्तिक किसे कहा गया है और क्यों?

६. राजा, मुनि, हवा एवं स्वर्ग के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

बाल-स्तम्भ [मार्च-२००६] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-२००६ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'भूल की भयंकरता' कहानी के प्रश्नों के उत्तर २१ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। प्राप्तांक २० में से दिए गए हैं। इस अंक की प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	कमलेश कुमार जैन-पादरु	१९.५
द्वितीय पुरस्कार-१५०/-	यशवन्त गोलेछा-ब्यावर	१९.५
तृतीय पुरस्कार- १००/-	सौरभ भण्डारी-पीपाड़ सिटी	१९
सान्त्वना पुरस्कार-५०/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	१८.५
	नीरज कुमार जैन-चौथ का बरवाड़ा	१८
	ममता जैन-बालोतरा	१७.५
	पारुल जैन-आगरा	१७

स्वाध्यायी परिचय

सरल स्वभावी, विनयवान, सेवाभावी वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमान् रिखबचन्द जी मेहता, जोधपुर

रत्नवंश के प्रति समर्पित, गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति पूर्ण श्रद्धा से युक्त, सरलता, सौम्यता, सहयोग एवं सेवाभावना से ओतप्रोत, विनयवान, सादा जीवन उच्च विचारों के धनी वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमान् रिखबचन्द जी मेहता का जन्म सूर्यनगरी के धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्रीमान् कवलचन्द जी मेहता की सहधर्मिणी महिलारत्न श्रीमती सदाकंवर जी मेहता की रत्नकुक्षि से जोधाणा की पावन धरती पर दिनांक ४.१०.१९२९ को हुआ।

आपकी प्रारम्भिक और उच्च शिक्षा जोधपुर में हुई। जोधपुर के जसवंत कॉलेज से आपने बी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण कर फर्टीलाइजर कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया में सर्विस की। लगभग ३३ वर्ष राजकीय सेवा कर आप सेल्स ऑफिसर पद से सेवानिवृत्त हुए।

स्वाध्यायी बने तब से आप यथासंभव प्रत्येक स्वाध्यायी-शिविर में भाग लेकर ज्ञानार्जन करते रहे। थोकड़ों में आपकी विशेष रुचि होने से आपने २५ बोल, ६७ बोल, गति-आगति, कर्म-प्रकृति, अठानवे बोल, जीवधड़ा, लघुदण्डक, बत्तीस बोल का बासठिया, १४ गुणस्थान का बासठिया आदि छोटे-बड़े कई थोकड़ों को कण्ठस्थ कर तलस्पर्शी अध्ययन किया। स्वाध्यायी शिविर हो या महिला शिविर या बालक-बालिकाओं के आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार निर्माण शिविर हों, आप सहर्ष अपनी सेवाओं द्वारा सभी को लाभान्वित करते हैं।

आपको अपनी माताश्री से धार्मिक संस्कार बचपन से ही मिले। फलस्वरूप सन् १९८९ में आप स्वाध्याय संघ के सदस्य बने, तब से निरन्तर संघ में अपनी अमूल्य सेवाएँ दे रहे हैं। आप प्रतिदिन कम से कम चार सामायिक करते हैं। प्रातः तथा दोपहर जब भी आपको समय मिलता है, आप सामायिक-स्वाध्याय एवं थोकड़ों पर तत्त्वचर्चा कर समय का सदुपयोग करते हैं।

गत कई वर्षों से आप श्रावक के १२ व्रत एवं पूर्ण ब्रह्मचर्य-व्रत अंगीकार कर चुके हैं। सम्पूर्ण जमीकन्द का त्याग, पैंतीस हरी सब्जी के अलावा समस्त लिलोती का त्याग कर चुके हैं। वर्षों से आप चौविहार व्रत रखते हैं। प्रतिमाह कम

से कम सात दयाव्रत-संवर, प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन आयम्बिल तप, पर्युषण के सात दिन दयाव्रत तथा संवत्सरी को अष्टप्रहर पौषध व्रत रखते हैं।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सचिव पद को आप ६ वर्षों तक सुशोभित कर चुके हैं। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के मंत्री पद पर भी लगभग ५ वर्ष तक अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ दी हैं। सन् १९८७ से निरन्तर आप बालशोभागृह, जोधपुर के कोषाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

पर्युषण में आप प्रतिवर्ष संत-सती विहीन क्षेत्रों में पधार कर जन-जन में प्रभु महावीर के संदेश का प्रचार-प्रसार करने के साथ अन्तकृद्दशा सूत्र तथा कल्पसूत्र का वाचन, सूत्रों की व्याख्या तथा प्रश्नोत्तरी के माध्यम से लोगों में तप-त्याग व धर्म करणी के प्रति रुचि जागृत करते हैं। दोनों समय प्रतिक्रमण तथा शेष समय में थोकड़ों से सम्बन्धित चर्चा के माध्यम से लोगों को जिनधर्म के प्रति प्रेरित करते हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण में आप फलीचड़ा, लक्ष्मीनगर-दिल्ली, बनेड़िया, भानसोल गढवाड़ा, बेगू, खण्डप, उमरगाँव, रोड़, मावली जं., ठाणा, धनारीकला, पाड़ी, आगोलाई और भोपालगढ़ आदि क्षेत्रों में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाओं द्वारा जिनवाणी की प्रभावना करते रहे हैं।

स्वाध्याय-संघ परिवार आपकी सुदीर्घ आयु तथा उज्ज्वल भविष्य की मंगल-कामना करता हुआ जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता है कि आप स्वस्थ रहें तथा जिनवाणी की प्रभावना करते रहें। ***–श्रीमती मोहनकौर बैन्द, सचिव***

चौबीसवें तीर्थंकर के २४ नाम

१. वर्द्धमान	२. महावीर	३. वीर
४. अतिवीर	५. सन्मति	६. काश्यप
७. ज्ञातपुत्र	८. विदेह	९. वैशालिक
१०.त्रिशलानन्दन	११.सिद्धार्थनन्दन	१२.अन्तिम तीर्थंकर
१३.चरम तीर्थंकर	१४.गौतम गुरु	१५.वैशाली राजकुमार
१६.अहिंसा के अवतार	१७.अनुत्तर योगी	१८.देवाधिदेव
१९.वर्तमान शासनेश	२०.अनन्त ज्ञानी	२१. अनन्तदर्शी
२२. महाश्रमण	२३. निर्ग्रन्थ	२४. वीर जिनेश्वर

-प्रेषक : उमरावदेवी धींग, बम्बोरा, उदयपुर

हम स्वयं दुःख-सुख के कारण

श्री कस्तूरचन्द जैन 'अष्टम'

अपने दुःख के कारण हम स्वयं, दुःख बाहर से नहीं आता है,
आकांक्षा, अभीप्सा, कल्पना में, खुद ही मानव खो जाता है।
वासना, कामना दोनों को चंचल, चित्त स्वयं जगाता है,
मन को हम नहीं रोक पाते, दुःख का कारण बन जाता है॥

सब दुःखी, दुःखी बतलाते हैं, क्योंकि अभाव में जीते हैं,
अपने को छोड़ पड़ौसी के, सुख से दुःखी हो जाते हैं।
जो कुछ मिल रहा भूल करके, जो नहीं मिला चिंतित होते,
उसकी नहीं हमें आवश्यकता, किन्तु उसके बिन नहीं जीते॥

जो वस्तु हमें मिल जाती है, उसका महत्त्व घट जाता है,
जब तक नहीं मिलती वस्तु, तभी तक मानव दुःख उठाता है।
अपने अभीष्ट को श्वान सदृश, नर ढूँढ-ढूँढ मर जाता है,
मिलने पर कुत्ते की भाँति, बस सूँघ उसे भग जाता है॥

इच्छा और चाह रूप दुःख से, मन तृप्त नहीं हो पाता है,
अतृप्त हमेशा रहता है, आकांक्षाओं में खो जाता है।
क्योंकि मन अनंत, असीम इच्छा, अनगिनत कामनाएँ होती,
इनकी पूर्ति करते जाओ, बढ़ती फिर पूर्ति नहीं होती॥

आकांक्षा दौड़ाती, तड़फाती और भगाती जाती है,
कुछ देती नहीं पास में होता, उसे छीन ले जाती है।
लेकिन आशा में बंधा मनुज, थक चूर-चूर हो जाता है,
मिटता, मर जाता जीवन का, तब पटाक्षेप हो जाता है॥

दुःख-सुख नभ से नहीं आता है, पाताल से नहीं प्रकट होता,
अपने ही मन के अन्दर से, इसका उद्गम स्थल होता।
सुख आत्मा की उपलब्धि है, आत्मा से ही यह आता है,
आत्मा आनंद का सागर है, जो अक्षय है, लहराता है॥

सुख के उद्गम स्थल भी तुम, चित्त शांत हुआ सुख पाते हैं,
इच्छा, वासना मरी मन की, अमृत के स्रोत बहाते हैं।
आनन्द हिलोरें लेता है, मन-व्यथा दफन कर पाते हैं,
सुख का सूरज अब चमक रहा, जब मन पर काबू पाते हैं॥

-मास्टर कॉलोनी, वार्ड नं. ११, खेरली (अलवर)

कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

कुलक कथाएँ:-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., प्रकाशक-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. १८२-१८३ के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर(राज.)३०२००३, फोन नं. ०१४१-२५७५९९७ पृष्ठ १०+१६६, मूल्य १५ रुपये, तृतीय संस्करण २००६

दान, शील, तप और भाव को मोक्ष का मार्ग कहा गया है। प्राकृत भाषा में इन दानादि के महत्त्व का कथन उदाहरणों के साथ 'कुलक संग्रह' में किया गया है। प्राकृत की इन गाथाओं के हिन्दी अनुवाद एवं इनमें निर्दिष्ट कथानकों का हिन्दी में प्रस्तुतीकरण वर्षों पूर्व आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा किया गया था। इन कथानकों का सर्वप्रथम प्रकाशन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा सन् १९६६ में हुआ था। तृतीय संस्करण सन् २००६ में 'कुलक कथाएँ' नाम से हुआ है। पुस्तक में कुल ४८ कथाएँ हैं, जिनमें ८ कथाएँ दान से सम्बद्ध हैं। १७ कथाएँ शील से, १३ कथाएँ तप से तथा शेष १० कथाएँ भाव से सम्बद्ध हैं। कथाओं के माध्यम से दान, शील, तप और भाव का महत्त्व सहज हृदयंगम होता है।

जीवन-अमृत की छाँव-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. प्रकाशक-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. १८२-१८३ के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर(राज.)३०२००३, फोन नं. ०१४१-२५७५९९७ पृष्ठ १६८, मूल्य १५ रुपये, प्रथम संस्करण २००६

स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के रत्नसंघ में साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के १२ प्रवचनों के संकलन से युक्त पुस्तक 'जीवन अमृत की छाँव' में स्वाध्याय, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, सत्संस्कार, समयज्ञता, रक्षाबंधन, स्वतंत्रता, कारणता और कषाय-विजय का सुन्दर विवेचन हुआ है। प्रवचन शैली में ओजस्विता, सरलता, हृदयंगमता, सरसता आदि अनेक गुण हैं, जो श्रोताओं को आकृष्ट कर सम्यक् दिशा प्रदान करते हैं। प्रवचन जैन-अजैन सबके लिए समान रूप से उपयोगी हैं।

समाचार-संकलन

अब तक स्वीकृत चातुर्मास

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा घोषित चातुर्मास की सूचना जिनवाणी के अप्रेल अंक में प्रकाशित हो चुकी है। जिसमें पीपाड़ सिटी, घोड़ों का चौक-जोधपुर, जावला, जबलपुर, कानपुर, देई, कोटा, काचीगुड़ा-हैदराबाद, गदग, आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर के चातुर्मास की स्वीकृति के अतिरिक्त भोपालगढ़ क्षेत्र खाली नहीं रहने का आश्वासन दिया गया था। अक्षय तृतीया के दिन आचार्यप्रवर ने निम्न चातुर्मासों की घोषणा की है-

१. पाली मारवाड़ - व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा

२. भोपालगढ़ - महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा

विचरण विहार एवं विहार दिशाएँ

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति के पथ-दर्शक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सेवामूर्ति श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ९ साहूकारपेठ स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन से विहार करके अयनावरम् पधारे हैं। चेन्नई उपगनरों में विचरण-विहार से धर्म की महती प्रभावना हो रही है। आचार्यप्रवर के सान्निध्य में भगवान् महावीर जन्म-कल्याणक आलन्दुर में मनाया गया। चेन्नई में इस अवसर पर श्री मदनराज जी उगमराज जी मुथा के प्रांगण में श्रावक-श्राविकाओं ने १००० से अधिक सामायिक की एवं अन्य व्रत-प्रत्याख्यान लिए। मूथा परिवार ने सभी श्रावक-श्राविकाओं का उचित मान-सम्मान पूर्वक स्वामीवत्सल का लाभ लिया। १६ अप्रेल को सैदापेट पधारने पर आबाल-वृद्ध सबने सत्संग सेवा और संत-समागम का लाभ लिया। २० अप्रेल को मैलापुर पधारने पर वहाँ धर्म-ध्यान के प्रति अच्छा उत्साह रहा। २६ अप्रेल को चिंतादरी पेठ, २८ अप्रेल को वेपेरी और २९ अप्रेल को वेंकुट अपार्टमेंट जहाँ तप और दान का विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया समारोह का भव्य कार्यक्रम रहा। १ मई को आचार्यप्रवर सामायिक-स्वाध्याय भवन, साहूकारपेठ पधारे। जहाँ ज्ञान-

ध्यान, त्याग-तप और साधना-आराधना में श्रावक-श्राविकाओं ने अपूर्व लाभ लिया। आचार्यप्रवर के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में कुछ सुधार चल रहा है। चेन्नई के उपनगरों में विचरण की संभावना है। आचार्यप्रवर ने अभी तक अपना चातुर्मास नहीं खोला है, चातुर्मास खुलने पर विहार-दिशा का अनुमान हो सकेगा।

१. **Shri Goutamchand Ji Hundiwal, 4/29, Shandy Road, Pallavaram, Chennai-43(T.N.) Ph. 044-22641554/22640915/ Mob.98401-12346/ 944388565, Fax : 044-22641569**

२. **Shri Mahendra Ji Kankaria, Mahendra Jewllers, 1000-1001, T.H. Road, Kaladipet, Chennai-19(T.N.) Ph. 044-25991313/25994466 Mob.94440-51313**

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परमश्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ घोड़ों का चौक स्थानक में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। महावीर जयन्ती आगोलाई करके उपाध्यायप्रवर बम्बोर, लोरड़ी, बड़ली, सूरसागर, प्रतापनगर आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों में ज्ञान गंगा प्रवाहित करते हुए १९ अप्रेल को घोड़ों का चौक पधारे। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर ने अक्षय तृतीया और दीक्षा महोत्सव जैसे विशिष्ट प्रसंगों को ध्यान में रखकर सूर्यनगरी के हृदयस्थल सरदारपुरा-नेहरूपार्क में उपाध्यायप्रवर के जोधपुर पदार्पण के पूर्व व्यवस्थाओं का निर्धारण कर लिया था। संघ व्यवस्था का समादर करते उपाध्यायप्रवर २८ अप्रेल को सामायिक-स्वाध्याय भवन नेहरू पार्क पधारे। साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा ९ जो घोड़ों का चौक विराजमान थे, नेहरूपार्क क्षेत्र पधारे। दीक्षार्थी भाई-बहिन एवं हुण्डीवाल परिवार भी उपाध्यायप्रवर के नेहरू पार्क क्षेत्र पधारने के कारण घोड़ों का चौक से २१, नेहरू पार्क भवन पधार कर दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति में सक्रिय हो गया। अक्षय तृतीया पर जोधपुर में १९ तप साधकों के पारणक हुए एवं दीक्षा महोत्सव के दिन शोभायात्रा, अभिनन्दन समारोह एवं दीक्षाभिषेक जैसे सभी कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ संघ की गौरव गरिमा के अनुरूप विशाल जनमेदिनी के बीच सम्पन्न हुए। अक्षय तृतीया दीक्षा महोत्सव की रिपोर्ट अलग से दी जा रही है।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से नवदीक्षित संत एवं नवदीक्षित संत एवं नवदीक्षित साध्वी की बड़ी दीक्षा ९ मई २००६ को चौपासनी हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र में सम्पन्न होगी। अध्यात्मयोगी युगमनीषी प्रतिपल स्मरणीय आचार्य भगवन्त का १५वाँ पुण्यदिवस वैशाख शुक्ला अष्टमी शुक्रवार, दिनांक ५ मई को घोड़ों का चौक स्थानक में त्याग-तप के साथ मनाया। उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के आचार्य

भगवन्त के गुण-कीर्तन, गुण-स्मरण करते हुए उस दिव्य दिवाकर के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डाला। सामूहिक सामायिक, दया-संवर, उपवास-पौषध के कार्यक्रमों में आबाल वृद्ध सबका उत्साह प्रशंसनीय रहा। आत्मार्थी, सरल स्वभावी उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का १६वाँ पद ग्रहण दिवस पर भी घोड़ों का चौक स्थानक में अच्छी उपस्थिति रही और व्रत-नियमों में श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह दर्शाया। संघाध्यक्ष सहित वक्ताओं ने उपाध्यायप्रवर की सरलता, गंभीरता और ज्ञान-दर्शन-चारित्र की निर्मलता पर प्रमोद व्यक्त किया।

७ मई २००६ को उपाध्यायप्रवर समता भवन पधारे तथा ८ मई को चौपासनी हाउसिंग बोर्ड पधार गये हैं। उपाध्यायप्रवर का चातुर्मास पीपाड़ सिटी खुल चुका है, अतः जोधपुर के विभिन्न क्षेत्रों में उपाध्यायप्रवर के विचरण की संभावना प्रतीत होती है।

सम्पर्क सूत्र-(१) डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, अध्यक्ष, फोन नं. ०२९१-२५४४१०९/ २५४५१०५, (२) श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, मंत्री, फोन नं. ०२९१-२७२२१३६, २७४२१३८, २६३६७६३, (३) ३. श्री नवरतन जी डागा, महामंत्री, फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६५४६७२, २६५४४२७, ९८२८०-३२२१५

महासती मण्डलों के स्वीकृत चातुर्मास स्थलों की ओर सुख-शांति पूर्वक विहार

卐 साध्वीप्रमुखा, परमविदुषी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा १० जोधपुर में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। घोड़ों का चौक विराजते समय साध्वीप्रमुखा के स्वास्थ्य में कुछ प्रतिकूलता रही फिर भी आत्मबल से साध्वीप्रमुखा नेहरूपार्क क्षेत्र पधारीं और नेहरूपार्क से व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ घोड़ों का चौक पधारीं, आचार्य भगवन्त की १५वीं पुण्यतिथि, उपाध्यायप्रवर का पद ग्रहण दिवस पर यहाँ विराजित महासती रतनकंवर जी म.सा. प्रवचन पश्चात् नेहरू पार्क साध्वीप्रमुखा जी की सेवा में पधारीं। स्वास्थ्य की अनुकूलता रहने पर साध्वीप्रमुखा सहित सभी महासतियाँ जी म.सा. के चौ. हाउसिंग बोर्ड बड़ी दीक्षा के अवसर पर पधारने की संभावना है।

卐 सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ लाखन कोटड़ी स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन, अजमेर में सुख शांतिपूर्वक विराजमान हैं। महासती मण्डल का चातुर्मास 'जावला' जिला-नागौर खुला है। अतः अजमेर से जावला

की ओर विहार की संभावना है।

卐 शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ सकारण पीपाड़ शहर में विराजमान हैं। आचार्यप्रवर ने महासती मण्डल का चातुर्मास पीपाड़ खोल दिया है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ का विचरण-विहार जबलपुर की ओर सुखशांति पूर्वक चल रहा है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय एवं गुरु हीरा के व्यसन त्याग जैसे संदेशों की प्रभावी प्रेरणा कर अप्रेल के प्रथम सप्ताह में बरेली पधारीं। बरेली का नाहर परिवार महासती मण्डल की सेवा-भक्ति में सक्रिय रहा। भोपाल से बरेली पधारने पर नाहर परिवार ने रत्नसंघीय महासती मण्डल के अपने पैतृक नगर पधारने पर हर्षित-उल्लसित भावों से सेवा का लाभ लिया। महासती मण्डल का अक्षय तृतीया के पूर्व गाडरवाड़ा पदार्पण हो गया था। गाडरवाड़ा से जबलपुर की ओर विहार में संघसेवी बागमार परिवार के साथ जबलपुर श्रीसंघ के पदाधिकारियों की सार-संभाल प्रेरणादायी है। महासती मण्डल का चातुर्मास जबलपुर स्वीकृत हुआ है।

卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ सकारण वेल्लूर विराजमान हैं। वेल्लूर के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं की सेवा-भक्ति अनुकरणीय हैं। आचार्यप्रवर ने अभी चातुर्मास घोषित नहीं किया है।

卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ ने आगरा से कानपुर के रास्ते में पड़ने वाले ग्राम-नगरों में धर्म-प्रभावना करते हुए अप्रेल माह के तीसरे सप्ताह में कानपुर सीमा में प्रवेश किया। कानपुर के सेवाभावी श्रावकों ने विहार-सेवा में अच्छा उत्साह दिखाया। आचार्यप्रवर ने विदुषी महासती जी का चातुर्मास कानपुर घोषित कर दिया है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा ११ का कभी दो संघाड़ों में तो कभी तीन संघाड़ों में आगे-पीछे और आसपास के क्षेत्रों को संभालने के लक्ष्य से अजमेर-किशनगढ़-नसीराबाद-आगूचा-धनोप-विजयनगर-गुलाबपुरा क्षेत्रों में विचरण रहा। महासती श्री समर्पिता जी म.सा. का पूर्व में किशनगढ़ शहर में तथा बाद में गुलाबपुरा से विहार के पश्चात् स्वास्थ्य में प्रतिकूलता हो जाने से पुनः गुलाबपुरा पधारना पड़ा। गुलाबपुरा के सुज्ञ श्रावकों ने सेवा-लाभ लिया वहीं क्षेत्रीय प्रधान श्री प्रतापचन्द जी

सांड ने वैद्यजी को ले जाकर स्वास्थ्य की जाँच करवाई। विहार में स्वास्थ्य की अनुकूलता नहीं हो तब भी सती मण्डल और श्राविका मण्डल के सहयोग से विहार की क्रमबद्धता बनाए रखकर गुलाबपुरा से आगूचा, अरवड़ होते हुए धनोप पहुँचा।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ चेन्नई महानगर में गुरु सेवा का लाभ ले रहे हैं। चातुर्मास अभी नहीं खुला है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ५ सिन्धनूर से ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए २४ अप्रेल को रायचूर पधारे। रायचूर कुछ दिन विराज कर चातुर्मासार्थ हैदराबाद की ओर विहार की संभावना है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३ बीकानेर से गंगाशहर, उदयरामसर, पलाना, देशनोक, रासीसर, सुरपुरा क्षेत्र पावन करते हुए २८ अप्रेल को मोरखाना पधारीं। जहाँ अक्षयतृतीया करके अणखीसर मुकाम होते अलाय पधार गई हैं। अलाय से गोगेलाव होते हुए महासती-मण्डल ८ मई को नागौर पधारी हैं। महासती मण्डल का अक्षय तृतीया के दिन आचार्यप्रवर ने चातुर्मास पाली खोल दिया है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ हुबली पधार गये थे। महासती मण्डल का चातुर्मास गदग खुला है। अतः धीरे-धीरे गदग की ओर बढ़ने की संभावना है।

卐 सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.आदि ठाणा ३ का नाशिक के उपनगरों में विचरण चल रहा है। आचार्यप्रवर ने अभी चातुर्मास नहीं खोला है।

सूर्यनगरी 'जोधपुर' में विरक्त बन्धु श्री ललित जी एवं विरक्ता बहिन सीमा जी हुण्डीवाल की भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में विरक्त बन्धु श्री ललित कुमार जी हुण्डीवाल एवं विरक्ता बहिन सुश्री सीमा हुण्डीवाल की भागवती दीक्षा आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से श्री महाराजा माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में बुधवार दिनांक ३ मई २००६ को मध्याह्न १.४५ बजे प्रत्याख्यान एवं मंगलपाठ के साथ सानन्द सम्पन्न हुई। दीक्षा-महोत्सव के पावन प्रसंग पर परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी

म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनि जी म.सा., सेवाभावी श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. के साथ ज्ञानगच्छीय तपस्वी श्रद्धेय श्री बसन्तमुनि जी म.सा. का पावन सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा., महासती श्री दर्शनलता जी म.सा., महासती श्री शशिकला जी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा., महासती श्री समता जी म.सा., महासती श्री उषा जी म.सा., महासती श्री निरंजना जी म.सा. आदि ठाणा की सन्निधि में समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों ने एवं श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने दीक्षा महोत्सव के कार्यक्रमों में हर्षित-उल्लसित भाव से दीक्षा की अनुमोदना का लाभ उठाया।

प्रातः ८.१५ बजे २१, नेहरू पार्क से शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। जिसमें सबसे आगे प्रतीक चिह्न जैन ध्वज, नगारे-निशान, बैण्ड, बालिकाओं के हाथों में तख्तियों पर संयम के महत्त्व पर महापुरुषों के अनमोल-वचन, भजन रसिक भक्तों की वाद्य यंत्रों के साथ भजन-मण्डली, श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति के बीच सुसज्जित रथों पर सवार दीक्षार्थी भाई-बहिन शोभायात्रा में सम्मिलित जनमेदिनी का हाथ जोड़कर अभिवादन कर रहे थे। शोभायात्रा का मनोरम दृश्य देखते ही मन को मोह लेता था। अतः राहगीर सड़क के किनारे वाहन खड़े कर दीक्षार्थी भाई-बहिन की शोभायात्रा आदि से अन्त तक बिना देखे नहीं रह सके। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की जय, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय , उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की जय, निर्ग्रन्थ मुनिराजों की जय, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की जय जैसे जयनादों के साथ ''गुरु हस्ती के दो संदेश- सामायिक-स्वाध्याय विशेष'', ''गुरु हीरा का है आह्वान-निर्व्यसनी हो हर इन्सान'', ''जैन जगत के दिव्य सितारे- हस्ती, हीरा, मान हमारे'' जैसे नारे गुंजित हो रहे थे। ''दीक्षार्थी बन्धु कैसा हो- ललित हुण्डीवाल जैसा हो'' ''दीक्षार्थी बहिन कैसी हो- सीमा हुण्डीवाल जैसी हो'' जैसे उद्घोषों के साथ संयम साधना के जयघोष गुंजायमान हो रहे थे। आबाल-वृद्ध सब दीक्षार्थी भाई-बहिनों के साहस की सराहना करते हुए उनके त्याग को अनुकरणीय बताते हुए चर्चाएँ कर रहे थे। करीब दो घंटे की यात्रा में कई स्थानों पर संघसेवी श्रावकों ने शीतल पेय एवं नाश्ते के पैकेट प्रदान कर शोभायात्रा में चल रहे भाई-बहिनों का आत्मीयता से सत्कार किया।

दो घंटे पश्चात् शोभायात्रा ओसवाल कम्यूनिटी सेन्टर पहुँच कर अभिनन्दन

समारोह में परिवर्तित हो गई। ओसवाल कम्यूनिटी सेन्टर के हॉल, बरामदें, गैलरियों के भर जाने के पश्चात् बाहर मैदान तक में उत्साही भाई-बहिनों ने खड़े-खड़े अभिनन्दन समारोह की कार्यवाही देखी-सुनी।

अभिनन्दन समारोह में अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि तथा सम्माननीय अतिथियों के साथ हुण्डीवाल परिवार के कई सदस्य समारोह स्थल पर पधारे। दीक्षार्थी भाई-बहिनों के जय-जयकार के जयघोष कर्णगोचर होते ही कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। समारोह के अध्यक्ष माननीय श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने मंच को सुशोभित किया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया, विशिष्ट अतिथि माननीय श्री प्रसन्नचन्द जी मेहता, माननीय श्री नरपतमल जी लोढ़ा, माननीय श्री प्रदीप जी गांग, सम्माननीय अतिथि माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत, माननीय श्री रतनलाल जी बाफना भी मंच पर आसीन हुए। स्थानीय संघाध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, संघमंत्री श्री अमरचन्द जी सदावत, रत्नसंघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, महामंत्री श्री नवरतन जी डागा ने मंच पर विराजकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। हुण्डीवाल परिवार के प्रमुख वीरपिता एवं मुमुक्षु भाई-बहिनों के दादासा आदरणीय श्री भंवरलाल जी, श्री सोहनलालजी के साथ श्री गौतमचन्द जी, श्री प्रसन्नचन्द जी, श्री सुभाषचन्द जी, श्री अशोक कुमार जी, श्री अभयकुमार जी, श्री नरेश जी, श्री नितिन जी, वीर पिता श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल, वीर माता सुश्राविका श्रीमती निर्मला जी हुण्डीवाल, भाभी श्रीमती नीता जी ने भी संचालक के अनुरोध पर मंच पर स्थान ग्रहण किया। वीर परिवार के दादीसा श्रीमती पारसबाई जी, कोलकाता वाली भुआजी श्रीमती बादामबाई जी बाघमार भी वहाँ उपस्थित थीं।

अतिथियों व दीक्षार्थी परिवारजनों के मंचासीन होने के अनन्तर कार्यक्रम के संचालक श्री रंगरूपमल जी डागा ने मंगलाचरण हेतु श्रीमती मीता मुल्तानी एवं श्रीमती चन्द्रकला मुल्तानी को आमंत्रित किया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ तीर्थंकर भगवन्तों की समवेत स्वर में स्तुति की प्रभावी प्रस्तुति से समारोह स्थल पर शांति छा गई। स्वागत-गीत की प्रस्तुति देने के लिए सुश्री खुशबू कुम्भट को आमंत्रित किया गया। "आज रंग बरसे रे, मन म्हारो हरसे रे' मारवाड़ी भाषा में स्वागत के बोल इतने प्रभावी थे कि समारोह में उपस्थित जन समुदाय ने भी स्वर में स्वर मिला कर सूर्यनगरी की खुशियों पर एवं दीक्षा के अवसर पर भावना को शब्दों में बोलकर हर्ष व्यक्त किया।

स्वागत गीत के पश्चात् डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न

हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि विशिष्ट अतिथियों के स्वागत में अपनी अन्तर्मन की भावना व्यक्त करते कहा कि हमारे निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार कर आप हमारे बीच में पधारे, मैं अपनी ओर से एवं संघ की ओर से आपका भावभीना स्वागत करता हूँ। उन्होंने अपने वक्तव्य में हुण्डीवाल परिवार की संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा के साथ संघ के प्रति निष्ठा और शासन सेवा के प्रति समर्पण के भाव की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि २५ वर्ष पूर्व महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. की दीक्षा के बाद आज विरक्त बन्धु ललित जी एवं विरक्ता बहिन सुश्री सीमा जी की दीक्षा में हुण्डीवाल परिवार का योगदान अनुकरणीय-अनुमोदनीय है। स्वाध्यायी श्रावक वीरपिता श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल एवं वीरमाता श्रीमती निर्मला जी के त्याग को अविस्मरणीय बताते हुए विरक्त भाई ललित -विरक्ता बहिन सीमा के ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप पर प्रसन्नता प्रकट की। दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम की सफलता में रात-दिन एक करने वाले संघसेवी श्रावक-श्राविकाओं के प्रति सम्मान के दो शब्द रखकर भाण्डावत साहब ने दीक्षा महोत्सव पर पधारे श्रीसंघों व श्रद्धालुओं का हृदय से स्वागत किया।

स्वागत भाषण के पश्चात् कार्यक्रम संचालक श्री डागा जी ने समारोह के अध्यक्ष माननीय श्री कैलाशचन्द जी हीरावत का माल्यार्पण से स्वागत करने और शॉल ओढ़ाकर बहुमान हेतु संघ-संरक्षक एवं पूर्व न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा को आमंत्रित कर उनके कर-कमलों से संघाध्यक्ष महोदय का स्वागत करवाया। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत ने मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया का स्वागत किया। विशिष्ट अतिथि सर्व श्री प्रसन्नचन्द जी मेहता, श्री नरपतराज जी लोढ़ा एवं श्री प्रदीप जी गांग का स्वागत संघ के पदाधिकारियों ने किया।

हुण्डीवाल परिवार के वीरपिता सुश्रावक श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल का माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर बहुमान और वीरता का प्रतीक साफा पहनाकर सम्मान करने के अनन्तर सुश्रावक श्री सोहनलाल जी हुण्डीवाल, श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, श्री प्रसन्नचन्द जी, श्री सुभाषचन्द जी, श्री अशोक कुमार जी, श्री अभयकुमार जी, श्री नरेश जी, श्री नितिन जी का माल्यार्पण से स्वागत और शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया।

वीर पिता श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल का संघ की ओर से माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर बहुमान और वीरता का प्रतीक साफा पहनाकर सम्मान किया।

वीरमाता श्रीमती निर्मला जी को चून्दड़ी ओढ़ाकर स्वागत किया गया। विरक्त-विरक्ता की भाभी का भी चुन्दड़ी ओढ़ाकर सम्मान किया गया। स्वागत-सत्कार के अनन्तर वीरमाता-पिता को संयुक्त रूप से मुख्य अतिथि के कर-कमलों से रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन समर्पित किया गया।

मुमुक्षु श्री ललित हुण्डीवाल के कर-कमलों में अभिनन्दन पत्र विशिष्ट अतिथि श्री प्रसन्नचन्द जी मेहता द्वारा प्रदान किया गया। अभिनन्दन पत्र का वाचन संघ महामंत्री श्री नवरतन जी डागा ने किया। मुमुक्षु सुश्री सीमा हुण्डीवाल के कर-कमलों में भी अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया।

स्वागत-सत्कार-अभिनन्दन के पश्चात् मुमुक्षु श्री ललित जी ने समारोह में उपस्थित विशाल जनमेदिनी के समक्ष विचार व्यक्त करते कहा कि आपने अभी हमारा जो स्वागत-सत्कार किया है वह वस्तुतः त्याग का सम्मान है। संयम की महिमा रेखांकित करते हुए विरक्त बन्धु ने बताया कि आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के जलगाँव चातुर्मास में मेरी भावना बनी कि मैं रत्नसंघ में प्रव्रजित हो शासन सेवा में अपना योगदान करूँ। आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त आदि संत-सतीवृन्द की कृपा, पूज्य दादासा, पिताजी-माताजी एवं परिवारजनों के स्नेहपूर्ण आशीर्वाद और आप सबकी शुभ भावना से मेरा सपना आज साकार हो रहा है, मैं आज हर्षित-पुलकित हो आप सबसे हार्दिक क्षमायाचना करता हूँ और अपेक्षा रखता हूँ कि आप मेरे ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि में सहयोग प्रदान करते रहेंगे। ''हे नाथ मेरे चित्त में समता सदा भरपूर हो'' भजन की कड़ियों के साथ मुमुक्षु ने अपनी भावना को विराम दिया।

मुमुक्षु बहिन सुश्री सीमा हुण्डीवाल ने अपने मनोभाव व्यक्त करते कहा कि मैं विगत पाँच वर्षों से साध्वीप्रमुखा परमविदुषी शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. , तत्त्वचिन्तिका व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा की सन्निधि में रह रही हूँ। गत कई वर्षों से शारीरिक रूप से अशक्त होने पर भी अपनी भुआ महाराज (महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा.) के अटूट साहस और संयम में धैर्य की पराकाष्ठा को देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुई। अतः मैंने माता-पिता और पूज्य दादा साहब से साध्वी बनने का प्रस्ताव रखा किन्तु मोह के कारण मुझे काफी समय तक आज्ञा नहीं मिली। आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त एवं गुरुणी जी महाराज की कृपा से मेरे माता-पिता और परिवारजनों ने इस विश्वास पर कि मैं परीषहों से घबराने वाली नहीं हूँ, मुझे आज्ञा प्रदान की। मैं पूज्य पिताश्री, माताश्री एवं परिवारजन का हृदय से आभार मानती हूँ। संयम सुख का राज मार्ग है, आप सबकी

आशीष से गुरु भगवन्त, गुरुणी जी महाराज की कृपा से मैं साध्वीजीवन में आज प्रवेश कर रही हूँ। मैं आज्ञा-अनुशासन में रहकर पूर्ण निष्ठा से संघ-सेवा में समर्पित रहूँगी। आप-सब मुझे संयम-पालन में, ज्ञान-दर्शन-चारित्र के विकास में सहयोग प्रदान करें। मैं रत्नसंघ की उज्ज्वल परम्परा में अपना जीवन-निर्माण कर मोक्ष पथगामी बनूँ। इस भावना से मैं मेरे द्वारा विगत में हुई ज्ञात-अज्ञात भूलों के लिए विशुद्ध अन्तःकरण से क्षमायाचना चाहती हूँ।

आशीर्वाद के वचनों में वीरपिता श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल ने कहा कि मुझे अपने सुपुत्र-सुपुत्री पर गर्व है कि इन पुण्यात्माओं ने हमारे परिवार में जन्म लिया। मैं इनकी भावना का विगत पाँच-छः वर्षों से बराबर अंकन करता रहा हूँ, मैं पूरी तरह से संतुष्ट होकर इन्हें रत्नसंघ व जिनशासन की सेवा में समर्पित करता हूँ। अपनी धर्म सहायिका के विचारों को उद्धृत करते वीरपिता ने कहा- एक माता अपने पुत्र को देश-रक्षा के लिए भेजती है तो कहती है- बेटा! तू रणभूमि में जा रहा है तो पीठ दिखाकर मत आना। मैं मंगल भावना के साथ अपनी सद्सीख में यही कहूँगा कि शेर की तरह दीक्षा ली है तो शेर की तरह से ही संयम का पालन करना। जोधपुर संघ की आत्मीयता एवं सुन्दर व्यवस्था के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए वीरपिता ने अपनी बात समाप्त की।

हुण्डीवाल परिवार की ३ वर्ष की नन्हीं सी बच्ची ने समारोह में बोलते हुए कहा कि मैंने दादाजी से माताजी से पूछा कि मेरे भैय्या और मेरी बहिना क्या मेरे साथ खाना नहीं खायेंगे? क्या मैं इनके साथ केरम नहीं खेलूँगी? क्या मैं भैया की कलाई पर राखी नहीं बाँधूगी? प्रश्न और प्रश्नों के उत्तर भले ही सहज-सामान्य हों, बच्ची का निडरतापूर्वक प्रस्तुतीकरण इतना प्यारा था कि समारोह में उपस्थित हर व्यक्ति ने ध्यान से सुना और सराहा।

अन्त में मुख्यातिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री टाटिया साहब ने अपने मंगल आशीर्वचन से दीक्षार्थियों को एवं उपस्थित सदस्यों को लाभान्वित किया। न्यायाधिपति टाटिया साहब ने अभिनन्दन का हार्द समझाते हुए कहा कि वीरपथ पर चलने वाले अभिनन्दनीय होते हैं। दीक्षार्थी भाई-बहिन के साहस की सराहना करते हुए न्यायाधिपति महोदय ने संयम-साधना में इनकी सफलता की कामना की। जय-जयकारों के जयनादों के साथ अभिनन्दन समारोह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्री महाराजा माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में श्रमण भगवान महावीर स्वामी एवं तदनन्तर आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि चारित्रात्माओं की जय के जयकारों के साथ दीक्षाभिषेक प्रारम्भ हुआ। विद्यालय परिसर खचाखच भरा हुआ था, इसलिए

बरण्डों में, दूसरी मंजिल के कमरों के आगे गैलरियों में, चबूतरियों पर एवं दरवाजों तक कहीं खाली स्थान नजर नहीं आ रहा था। जिन्हें बैठने का स्थान सुलभ नहीं हुआ, उन्होंने खड़े-खड़े दीक्षाभिषेक देखा। कुछ भाई-बहिनों में धूप तक की परवाह नहीं की और दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम समाप्ति तक धूप में खड़े रहने का साहस दिखाया। नित्यप्रति ए.सी., कूलर और पंखों में रहने वाले श्रावक-श्राविकाओं ने मध्याह्न की भीषण गर्मी और धूप की परवाह किए बिना दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना का लाभ उठाया।

हुण्डीवाल परिवार के कुल दीपक एवं कुलज्योति का दीक्षा स्थल पर आगमन हुआ तो जन-समुदाय ने उल्लास के साथ जय-जयकार के जयनाद कर आत्मशक्ति सम्पन्न दीक्षार्थियों का स्वागत-अभिनन्दन किया। दीक्षार्थी भाई-बहिन की माताश्री एवं भाभी सिर पर वस्त्राभूषण की टोकरी लिए चल रही थी और उनके परिवारजन पीछे-पीछे चल रहे थे। उपस्थित विशाल जनमेदिनी अपलक मुमुक्षुओं को और वीर परिवार को निरख-निरख हर्षित हो त्याग-त्यागियों के प्रति नत-मस्तक थी।

मुमुक्षु भाई-बहिन ने उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द को वन्दन नमन किया और उपाध्यायप्रवर के संकेतानुसार दीक्षार्थी श्री ललित जी ने जनसमुदाय के समक्ष विचार प्रस्तुत करते कहा कि मैं आज जिस महान् संयम को धारण करने जा रहा हूँ वह पूज्य आचार्य भगवन्त-पूज्य उपाध्याय भगवन्त की कृपा से भव-भ्रमण मिटाने वाला बने ऐसी कामना करता हूँ। मैं आप सब सुज्ञजनों से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि संयम-मार्ग में आप मुझे अपना सहयोग प्रदान करें। मुमुक्षु भाई ने अपने द्वारा अनुचित व्यवहार, बर्ताव और किसी के प्रति कभी कोई कटुवचन निकला हो तो उसके लिए हार्दिक क्षमायाचना की। तत्पश्चात् मुमुक्षु बन्धु ललित और मुमुक्षु बहिन सीमा ने अपने पूज्य दादासा, माता-पिता एवं परिवारजनों के चरण-स्पर्श किए एवं उनका आशीर्वाद लिया। मंगल पाठ श्रवण कर दीक्षार्थी भाई-बहिन वेश-परिवर्तन हेतु पधारे।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने सुस्वर में "संयम रो मार्ग कठिन है, शूरा बणने चालणो, पंचम आरे में चौथे आरे रो संयम पालणो।" भजन प्रस्तुत किया। मुनि श्री की प्रभावी प्रस्तुति में उपस्थित भक्तों ने भावनापूर्वक स्वर में स्वर मिलाया तो समूचा वातावरण संयम की सौरभ से सराबोर हो गया।

साध्वीप्रमुखा शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.ने संयम की महत्ता पर विचार प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि इन मुमुक्षुओं ने पाँच वर्ष के साधनामय जीवन में साधु-समाचारी, रत्नसंघ की मर्यादा और शास्त्रों का अध्ययन किया। आज्ञा-आराधन में इनका समर्पण है। २५ वर्ष पूर्व आज ही के दिन वैशाख शुक्ला षष्ठी को

रायचूर में आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज के मुखारविन्द से हुण्डीवाल परिवार की बहिन चन्द्रावती की दीक्षा के समय भाई प्रकाशचन्द जी का जो योगदान रहा उसे भुलाया नहीं जा सकता। दीक्षा के मार्ग में अवरोध आते हैं पर शूरवीर अपने पुरुषार्थ से बाधाओं को पार कर महावीर के शासन के सिपाही बनते हैं, आज भी बन रहे हैं, आगे भी बनेंगे।

सेवाभावी-विद्याभिलाषी श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ने 'वैराग्यात् परमभाग्यः' की व्याख्या करते फरमाया कि बिना पुण्यवानी के संयम अच्छा नहीं लगता जबकि संयम में आनन्द की अनुभूति होती है। देव 'मनुष्य जन्म' की वांछा करते हैं क्योंकि मनुष्य संयम-साधना में गति कर सकता है। 'ललित' शब्द का अभिप्राय सुन्दर होता है। श्रेष्ठ भी अर्थ किया जा सकता है और पाप की सीमा करने वाली बहिन सीमा की पुण्यवानी तो है ही। इनके माता-पिता ने और परिवारजनों ने मोह को जीता और दीक्षार्थी को दीक्षा में सहयोग कर कर्म-निर्जरा की।

उपाध्यायप्रवर ने ज्ञानगच्छीय तपस्वी श्री बसन्तमुनि जी म.सा. को अपने हृद्योद्गार रखने का आग्रह किया तो मुनिश्री ने फरमाया- आज के मंगल प्रसंग पर गर्मी के ताण्डव नृत्य के बावजूद आपकी उत्सुकता में कहीं कोई कमी नहीं है। पत्थर से लेकर मार्बल, लोहे, चाँदी, सोने और हीरे-जवाहरात जैसी मूल्यवान वस्तुएँ कम मात्रा में मिलती हैं। कोहिनूर हीरे के प्रसंग में मुनिश्री ने फरमाया कि इस सभा में जयपुर के जौहरी बैठे हैं, न्यायाधिपति भी यहाँ उपस्थित हैं , कोहिनूर हीरा एक ही है, ऐसा सुनने को मिला। बहुमूल्य वस्तुएँ कम मात्रा में मिलती हैं। दीक्षार्थी भाई-बहिन को महान् उज्ज्वल सम्प्रदाय के अन्दर आरक्षण मिल रहा है, वे वीतराग-मार्ग पर बढ़ते हुए लक्ष्य प्राप्त करें।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज का पावन प्रसंग एक नई प्रेरणा लेकर उपस्थित हुआ है। आज के इस मंगल अवसर पर ज्ञानगच्छीय श्रद्धेय श्री बसंतमुनि जी म.सा. परम्परा की प्रगाढ़ता को, प्रेम भावना को ध्यान में रखकर भीषण गर्मी में यहाँ पधारे हैं। जहाँ अपनत्व का भाव होता है वहाँ गर्मी गौण हो जाती है।

दीक्षार्थी भाई-बहिनों के संदर्भ में विचार व्यक्त करते मुनिश्री ने फरमाया कि ये गौरवशाली परम्परा में अपने-आपको समर्पित कर रहे हैं अतः अपने ज्ञान-दर्शन-चारित्र की महक से इनका जीवन महकता रहे।

मुनिश्री के प्रवचन के मध्य में जय-जयकार के जयनाद के साथ दीक्षार्थी भाई-बहिन, साधु-साध्वी के वेश में उपस्थित हुए। मुमुक्षु भाई-बहिन के साथ पारिवारिक

परिजन और इष्ट मित्र भी जयनाद करते हुए उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के चरणों में उपस्थित हुए। वन्दन-नमन के पश्चात् उपाध्यायप्रवर ने दादा, माता-पिता एवं हुण्डीवाल परिवार के सदस्यों से आज्ञा-अनुमति चाही तो माता-पिता और परिवारजनों से सहर्ष आज्ञा प्रदान की। उपाध्यायप्रवर ने संघ पदाधिकारियों एवं चतुर्विध संघ की स्वीकृति-सहमति चाही तो संघ अध्यक्ष श्री हीरावत साहब श्री भाण्डावत साहब सहित पदाधिकारियों ने अनुमति प्रदान की।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज) की परोक्ष कृपा, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा एवं माता-पिता, परिजनों के साथ चतुर्विध संघ की स्वीकृति-सहमति से करेमि भंते के पाठ से सावद्य योग का त्याग करवाया।

उपाध्यायप्रवर ने दीक्षा-पाठ देने के साथ नवदीक्षित संत के चोटी के केश लुंचन कर विधिवत् दीक्षाभिषेक किया। उपाध्यायप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में हुण्डीवाल परिवार जिसने अपने कलेजे की कोर को यावत्जीवन समर्पित किया है, उनकी आप जय-जय बोल कर ही न रह जायें, आज के इस पावन प्रसंग पर यह संकल्प करें कि संयम-मार्ग पर कोई बढ़ना चाहेगा तो उसमें बाधक नहीं बनेंगे।

दीक्षा-पाठ के कारण उपस्थित विशाल जनमेदिनी जय-जयकारों से एवं प्रचण्ड गर्मी की तीव्रता से कुछ चंचल होती दिखाई दी तो बुलन्द आवाज के धनी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आपने समत्व का, सरलता का, संयम और त्याग का जीवन देखा है, देख रहे हैं। परन्तु "शब्दों में विरक्ति, अन्तर में आसक्ति उससे नहीं होगी मुक्ति" इसलिए आप अपने जीवन में विनय, नम्रता, सेवा और समर्पण के भाव जगायें।

दीक्षा-पाठ लेते ही नवदीक्षित मुनि को संतों ने पाट पर बिठाया वहीं नवदीक्षिता साध्वी को विराजित महासतियों ने अपने पास बिठाया। जय-जयकार के अनवरत जयनाद के पश्चात् उपाध्यायप्रवर ने मांगलिक फरमाई।

दीक्षा महोत्सव की अनुमोदनार्थ समीपवर्ती सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों का एवं श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का आने का क्रम एक-दो दिन पूर्व से प्रारम्भ हो गया था जो दीक्षा महोत्सव के दिन तक बराबर चलता रहा।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् के उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने आवास, भोजन, चाय-नाश्ते, शोभायात्रा, अभिनन्दन-समारोह एवं स्वागत समितियों के निर्धारण के साथ संघ के उपाध्यक्ष श्री कनकमल जी कुम्भट के

संयोजक में गठित विभिन्न समितियों ने रात-दिन एककर सेवा में सक्रियता दिखाई वह वस्तुतः प्रेरणादायी है। सूर्यनगरी जोधपुर जिसे रत्नसंघ की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है दीक्षा महोत्सव की सुन्दर व्यवस्था एवं कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति पर आगत बन्धुओं ने संतोष व्यक्त किया।

किलपाक-पुरुषावक्कम(चेन्नई) एवं जोधपुर में तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति उत्साह

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति के पथ-दर्शक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द प्रवचन के माध्यम से तप और दान का महत्त्व प्रतिपादित करते हैं। प्रवचन में संत-सतीवृन्द की प्रभावी प्रेरणा से प्रतिवर्ष नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर श्रावक-श्राविकाएँ अक्षय तृतीया महोत्सव पर शासन की प्रभावना करते हैं।

अक्षय तृतीया के अवसर पर एकान्तर तप-साधक पारणक करते हैं। इस तप पूर्णाहुति समारोह में तप-साधकों के पारिवारिक-परिजनों व इष्ट मित्रों के साथ आयोजन करने वाले संघ के पदाधिकारीगण तप-साधकों का स्वागत-सत्कार और बहुमान करते हैं। तप की अनुमोदना में विभिन्न स्थानों के श्रीसंघ व श्रद्धालुगण भी तप-साधकों को इक्षु-रस पिलाकर उनके तप के प्रति धन्यवाद-साधुवाद ज्ञापित करते हैं।

चेन्नई महानगर में वैंकुट अपार्टमेन्ट में किलपाक-पुरुषवाक्कम् क्षेत्र की ओर से आयोजित तप पूर्णाहुति समारोह में विशाल उपस्थिति एवं जोधपुर में श्री महाराजा माध्यमिक विद्यालय परिसर में समीपवर्ती क्षेत्रों के तपस्वी भाई-बहिनों का तप के प्रति रुझान प्रेरणादायी रहा।

चेन्नई में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ९ एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ के पावन सान्निध्य में बैंकुट अपार्टमेन्ट के प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. ने अक्षय तृतीया पर भगवान् आदिनाथ के पारणे को लेकर विचार रखे। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने साधना में तप का महत्त्व रेखांकित करते फरमाया कि कर्म काटने की अचूक

रामबाण औषधि है तो वह है 'तप'। भगवान् आदिनाथ का तप निरन्न था, निर्जल था, निर्भाषी था, निर्दोष था, निष्काम था। भगवान् के पौत्र श्रेयांस द्वारा प्रदत्त इक्षु रस दान की निर्दोषता के कारण आज का दिन तप दिवस के रूप में मनाया जाता है। तत्त्वचिन्तक मुनिश्री ने तप और दान का माहात्म्य फरमाते हुए तप और दान को अपनाने का आह्वान किया।

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. ने भी अक्षय सुख प्राप्ति हेतु तपश्चर्या का अवलम्बन लेने का आह्वान करते हुए कहा कि आप यदि तप नहीं कर सकते तो तप करने वालों की अनुमोदना के लाभ से तो वंचित न रहें।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने अक्षय तृतीया की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डालते हुए तप-साधना में बढ़ रही विकृतियों से दूर रहने की प्रेरणा की। मोक्ष मार्ग में दान, शील, तप और भावना का महत्त्व रेखांकित करते सेवामूर्ति श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने तप करने वाले तप में पुरुषार्थ करें और दान देने वाले उदारता से दान करें शील का आराधन करने वाले शीलव्रत का नियम अंगीकार करें और भावना से सभी लाभ उठायें।

प्रवचन सभा में विराजित आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने तप-साधकों के पुरुषार्थ को प्रमोदजन्य बताते फरमाया कि एक-एक तपस्वी वर्षों से वर्षीतप का आराधन करते हैं और आज के दिन चल रहे नियम को बढ़ाने के लिए तत्पर हैं। घर-परिवार वाले शारीरिक अशक्तता और अवस्था की बात करते हुए व्रत को आगे नहीं बढ़ाने का कहते हैं पर जिनकी धुन में तप रच-पच गया है वे सदैव ही तप करने को तत्पर रहते हैं। नवीन व्रत-प्रत्याख्यान करने वालों का उत्साह भी प्रेरणादायी है। आप तप करें साथ ही आस्रव त्याग का लक्ष्य रखें तो तप की तेजस्विता बढ़ेगी। आचार्यप्रवर ने कहा कि इक्षु रस का पान तो आप करवाते ही हैं, अब आप प्रेम रस का स्वयं पान करें, औरों को प्रेम-रस से सराबोर करने का प्रयास करें तो आपका यहाँ आना और सुनना सार्थक हो सकेगा।

आचार्यप्रवर के प्रवचन पश्चात् कार्यक्रम संचालक श्री पी.एस.सुराणा साहब ने तप साधकों के नाम उच्चारण करने के अनन्तर आवश्यक सूचनाओं का प्रसारण किया। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से वर्षीतप साधकों में से कइयों ने एक वर्ष और एकान्तर तप बढ़ाया तो कइयों ने एकान्तर तप की साधना हेतु नियम ग्रहण किया। अक्षय तृतीया पर उपवास, बेले, तेले की तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए वहीं नित्य की

भाँति आयंबिल-एकासन के नियम भी हुए।

आचार्यप्रवर के मंगल पाठ पश्चात् बेंकुट अपार्टमेन्ट में तप पूर्णाहुति समारोह का आयोजन हुआ। तप साधकों के पारिवारिक-परिजनों एवं इष्ट मित्रों ने इक्षु रस पान करवाने के साथ तप की अनुमोदना की। संघ पदाधिकारियों ने स्वागत-सत्कार और बहुमान में अपूर्व उत्साह दिखाया।

तप साधकों की सूची

१.श्री चेतनप्रकाश डूंगरवाल, बैंगलोर
२. श्रीमती कंचनबाई डूंगरवाल, बैंगलोर
३. श्रीमती प्रेमादेवी सुराणा, बैंगलोर
४. श्रीमती सरोजाबाई मुथा, बैंगलोर
५.श्रीमती ललितादेवी धोका, मैसूर
६. श्रीमती झंकारदेवी मरलेचा, मैसूर
७. श्रीमती सरस्वती देवी आंबड़, रायचूर
८. श्रीमती सज्जनदेवी सुराणा, कंवलियावास
९. श्रीमती कमलादेवी बाघमार, किलपाक
१०. श्रीमती शांतिबाई चौधरी, चिन्तादरीपेठ
११.श्रीमती कमलादेवी चोरडिया, आवड़ी
१२. श्रीमती रतनकंवर बाफना, चेन्नई
१३.श्रीमती लाडदवी कोठारी, चुल्लई
१४. श्रीमती उषादेवी चोरडिया, पुरुषवाक्कम
१५.श्रीमती मनोहरबाई कोठारी, चेन्नई
१६. श्रीमती चम्पादेवी गोदावत, कुण्डीतोप
१७.श्रीमती पुष्पादेवी लुणावत, पेरम्बुर
१८. श्रीमती कंचनदेवी गादिया, कुण्डीतोप
१९.श्रीमती आईचुकीबाई बाघमार,पुरुषवाक्कम
२०.श्रीमती विमलादेवी आबड़, चेन्नई
२१. श्रीमती सुशीलादेवी मेहता, चुल्लई

बेंकुट अपार्टमेन्ट में आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द की प्रेरणा से जहाँ तपश्चर्या के प्रत्याख्यान हुए, वहीं दान के क्षेत्र में भी श्रावक-श्राविकाओं ने दान के प्रति उत्साह दर्शाया। बैंगलोर की संघसेवी सुश्राविका श्रीमती सरोजबाई जी मूथा धर्मपत्नी स्व० सुश्रावक श्री सुगनचन्द जी मूथा ने १,७१,१११/- किलपाक-पुरुषवाक्कम संघ को भेंट कर अपनी लक्ष्मी का उपयोग किया। बैंगलोर का मूथा परिवार संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा में सक्रिय रहा। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर बैंगलोर पधारे तब सुश्रावक श्री सुगनचन्द जी मूथा ने संघ से निवेदन किया कि वे चातुर्मास का लाभ लेना चाहते हैं। संघ ने मूथा साहब की भावना पर हर्ष व्यक्त करते कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर के प्रति सभी भक्तों की भावनाएँ हैं, बैंगलोर संघ का प्रत्येक सदस्य लाभ ले यह समयोचित है। सुश्रावक श्री सुगनचन्द जी मूथा ने गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी बनने में उदारता का परिचय दिया। आचार्यप्रवर के चातुर्मास के प्रारम्भ में संघसेवी श्रावकरत्न का स्वर्गगमन हो गया, लेकिन सुश्राविका की उदारता और सेवाभावना अनुकरणीय है।

चेन्नई की भाँति सूर्यनगरी, जोधपुर में परमश्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री

मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ तथा साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ९ के पावन सान्निध्य में श्री महाराजा माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में अक्षय तृतीया ३० अप्रेल को प्रातः ८.४५ बजे प्रवचन सभा में सेवाभावी विद्याभिलाषी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ने मंगलाचरण कर प्रवचन का शुभारंभ किया। जोधपुर के अतिरिक्त पीपाड़सिटी, मेड़तासिटी, बीकानेर, भोपालगढ़, भरतपुर, भीलवाड़ा, उनियारा, सूरत, नदबई, मुम्बई आदि-आदि ग्राम-नगरों के तप-साधकों ने अपने पारिवारिक-परिजनों एवं इष्ट मित्रों के साथ उपस्थित हो उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के पीयूष प्रवचनामृत का पान किया एवं व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर शासन प्रभावना में भागीदारी प्रदर्शित की। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्री संघों ने एवं श्रद्धालुओं ने तप-साधकों की तपश्चर्या की अनुमोदना का लाभ लिया।

महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. ने अतीत की झाँकी प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि उस युग में कल्पवृक्ष के सहारे जीवन की जरूरतें पूरी कर ली जाती थीं। उस काल में भगवान् आदिनाथ ने धर्म का प्रवर्तन किया। आज ही के दिन आदि तीर्थंकर आदिनाथ भगवान् का पारणा हुआ था, तप-साधना के उस आदर्श के प्रति आज भी उत्साह है।

सेवाभावी-विद्याभिलाषी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ने अक्षय शब्द की व्याख्या करते इस तिथि की परिपूर्णता पर विचार रखे एवं महत्त्व को रेखांकित किया। मुनिश्री ने द्रव्य और पर्याय की चर्चा करते समय फरमाया कि जिसमें निरन्तर परिवर्तन होता है वह है पर्याय। आत्म तत्त्व चाहे जिस योनि में चला जाय वह हमेशा शाश्वत रहता है। मुनिश्री ने आत्मा की नित्यता, शाश्वतता पर प्रकाश डाला और कहा कि यह शरीर मेरा नहीं, पराया है। जो पराया होता है, वह जाता है। अपनी चीज अपने से कभी अलग नहीं होती। हमारा मन और हमारी इन्द्रियाँ जड़ हैं। मन और इन्द्रियों का आत्मा के साथ संयोग संबंध है।

तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. ने भगवान् ऋषभदेव के तप के साथ दीक्षा पूर्व दिए गए वर्षीदान का विवेचन करते हुए फरमाया कि दान देना हमारी संस्कृति रही है। आज हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। व्याख्यात्री महासती जी ने पहले घरों पर 'स्वागतम्' 'सुस्वागतम्' लिखा हुआ मिलता था, आज कई घरों पर लिखा मिलता है 'कुत्तों से सावधान'। हम संस्कृति के पोषक बनें। तप और दान को

जीवन में अपनाएँ यही आज के दिन का संदेश है।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज का पावन-प्रसंग कई विशेषताओं से और कई विशिष्टताओं से जुड़ा हुआ है। भगवान् आदिनाथ के पारणा-दिवस के कारण आज का दिन तप और दान से जुड़ा हुआ है तो दूसरी तरफ आचार्य भगवन्त के आचार्य पद पर आरोहण का दिन भी आज है। मुनिश्री ने भगवान् आदिनाथ के तप को अन्न त्याग,जल त्याग और मौनयुक्त होने से विशेष बताया।

उपाध्यायप्रवर के मंगल उद्‌बोधन के पूर्व स्थानीय संघाध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत ने प्रवचन सभा में पधारे राजस्थान उच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधिपति न्यायमूर्ति श्री राजेश जी बालिया का परिचय दिया तथा कहा कि मुख्य अतिथि न्यायाधीश बालिया साहब, पूर्व न्यायाधिपति व रत्नसंघ के संरक्षक श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा एवं संघ संरक्षक श्री सायरचन्द जी कांकरिया के आतिथ्य में तप पूर्णाहुति समारोह में तप-साधकों का संघ की ओर से स्वागत, सत्कार, बहुमान होगा।

न्यायमूर्ति बालिया साहब ने अक्षयतृतीया का महत्त्व समझाते हुए कहा कि अक्षयतृतीया का संबंध धर्म तक ही नहीं है, संस्कृति से भी यह दिन जुड़ा हुआ है। न्यायाधिपति महोदय ने तप-साधकों के तपाराधन में पुरुषार्थ पर प्रमोद भाव व्यक्त किया और सनातन काल से चले आ रहे तप और दान का जीवन में अपना कर चलने का आह्वान किया।

परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में 'पूनम की पड़वा भली'' प्रचलित दोहे का रहस्य समझाते हुए फरमाया कि अक्षय तृतीया का कभी क्षय नहीं होता। आखातीज लोक-लोकोत्तर दोनों के लिए मांगलिक है। आज के दिन आखा धान्य पकाया जाता है। लोकोत्तर पर्व में भगवान् आदिनाथ का तप, श्रेयांसकुमार का दान, आचार्य भगवन्त का चादर महोत्सव जैसे न जाने कितने-कितने मंगल अक्षय तृतीया के साथ जुड़ गये हैं। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का ८४ लाख पूर्व का आयुष्य था। भगवान् ८३ लाख पूर्व संसार में रहे और जनता को असि, मसि, कृषि की कला सीखाई। भगवान् ने पेट भरने की कला ही नहीं सीखाई, ठेट की कला भी सीखाई। भगवान् ने दीक्षा के पश्चात् बेले के साथ तपश्चर्या चालू की पर अन्तराय कर्म के कारण एक वर्ष से ज्यादा समय तक आहार-पानी नहीं मिला। भगवान् नित्य प्रति आहार-पानी के लिए निकलते तो कोई घोड़ा, कोई हाथी, कोई सुन्दर स्त्री लाकर खड़ी करता। हाथी-घोड़े देने वाले यह सोचकर कि भगवान् पैदल घूम रहे हैं इसलिए घोड़ा दे

दें। कर्मो की मार कैसी होती है, उपाध्यायप्रवर ने भजन के माध्यम से समझाया। अन्तराय कर्म के क्षय होने पर ही भगवान् का पारणक हुआ। उपाध्यायप्रवर ने तप और दान के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि आप तप कर सकते हैं, दान भी कर सकते हैं, जरूरत है मन को प्रगाढ़ बनाकर पुरुषार्थ प्रदर्शित करने की। आप कोई न कोई व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करें तो आपका यहाँ आना सार्थक हो सकेगा।

कई तप साधकों ने एकान्तर तप वृद्धि के नियम लिए, कुछ नए वर्षीतप के संकल्प भी हुए एवं उपवास, आयंबिल जैसी तपश्चर्याओं के नियम के पश्चात् उपाध्यायप्रवर ने मांगलिक सुनाई।

श्री महाराजा माध्यमिक विद्यालय, जोधपुर में १९ तप-साधकों के नामों की तख्तियों के नीचे तप-साधकों व उनके परिजनों के बैठने की व्यवस्था के कुछ अन्तराल पश्चात् समारोह के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री राजेश जी बालिया, संघ संरक्षकगण, स्थानीय संघाध्यक्ष-मंत्री आदि पदाधिकारियों ने प्रत्येक तप-साधक को संघ की ओर से इक्षु रस पान कराया और संघ की भेंट तप-साधकों को समर्पित कर उनका बहुमान किया।

तप साधकों की सूची

१. श्री मूलचन्द जी बाफना, जोधपुर
२. श्रीमती सुशीला जी बाफना, जोधपुर
३. श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, जोधपुर
४. श्रीमती चाँदकंवर जी खिंवसरा, जोधपुर
५. श्रीमती सुधा जी लोढ़ा, जोधपुर
६. श्रीमती सुशीला जी जालोरी, जोधपुर
७. श्रीमती भंवरीदेवी जी देसरला, जोधपुर
८. श्रीमती पुष्पा जी जैन, भरतपुर
९. श्री स्वरूपचन्द जी जैन, भरतपुर
१०. श्रीमती सीमा जी जैन, उनियारा
११. श्रीमती ज्ञानकंवर जी नाहर, भीलवाड़ा
१२. श्रीमती माडीबाई जी कांकरिया, सूरत
१३. श्रीमती चैनीबाई जी कोठारी, मुम्बई
१४. श्रीमती पुष्पा जी कटारिया, पीपाड़सिटी
१५. वीरमाता मैनादेवी जी ढड्ढा, बीकानेर
१६. श्रीमती पारसकंवर जी डोसी, मेड़ता
१७. श्रीमती शांतिदेवीजी ललवाणी, मेड़ता
१८. श्रीमती मांगीदेवी जी चोरडिया, भोपालगढ़
१९. श्रीमती सुगनदेवी जी जैन, नदबई

चेन्नई व जोधपुर में तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर उपस्थित विशाल जन समुदाय ने तपस्वी श्रावक-श्राविकाओं की तप-साधना की अनुमोदना करने के साथ कुछ न कुछ नियम अंगीकार कर शासन प्रभावना में भागीदारी प्रदर्शित की।

नंगनल्लूर, चेन्नई में दीक्षार्थियों का अभिनन्दन

दीक्षार्थी भाई श्री ललित जी एवं दीक्षार्थी बहिन सुश्री सीमा जी हुण्डीवाल के आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज सुधार क्रांति के सूत्रधार, परमश्रद्धेयं आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सेवामूर्ति श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ९ के एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ के दर्शन-वन्दन हेतु चेन्नई पहुँचने पर एस.एस. जैन संघ, नंगनल्लूर ने विरक्त-विरक्ता भाई-बहिन का वरघोड़ा निकाला और उनका स्वागत-सत्कार किया। कल्याण भवन में आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द ने संयम की महत्ता पर प्रवचन फरमाया। श्री व श्रीमती जबरचन्द जी गुन्देचा, श्री व श्रीमती जवरीलाल जी मूथा, श्री व श्रीमती सुभाषचन्द जी लूणिया ने आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत का खंद किया। *-गौतम कटारिया*

आचार्य हस्ती मेधावी युवारत्न छात्रवृत्ति योजना

युगमनीषी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की वर्ष २०१०-११ की जन्म जयन्ती को अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् शताब्दी जयन्ती वर्ष के रूप में मनाने जा रहा है। इसके अन्तर्गत वर्ष २००६ में ९६, २२०७ में ९७, २००८ में ९८, २००९ में ९९ तथा २०१० में १०० मेधावी छात्रों को परिषद् के नियमानुसार प्रतिमाह एक हजार रुपए की छात्रवृत्ति वर्ष में ११ माह प्रदान की जाएगी। 'आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति' योजना जुलाई २००६ से आरम्भ की जा रही है।

कोई भी युवारत्न बन्धु धनाभाव अथवा साधनाभाव से उच्च शिक्षा से वंचित न हो, उनके शैक्षणिक उन्नयन, चारित्र निर्माण एवं चहुँमुखी विकास तथा प्रतिभाशाली युवाओं की खोज की दृष्टि से यह योजना प्रारम्भ की जा रही है। जिससे पाँच वर्षों में लगभग ५०० छात्र न केवल संघ व समाज को अच्छे प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर एवं प्रोफेशनल उपलब्ध हो सकेंगे, बल्कि संघ के प्रति संवेदनशील बनकर समाज को विकास के पथ पर ले जाने में समर्थ भी हो सकेंगे। यह योजना समयानुकूल एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, निश्चय ही इसके क्रान्तिकारी परिणाम प्राप्त होंगे। योजना इस शिक्षा सत्र से आरम्भ की जानी है, नियम-उपनियम आदि का निर्धारण कर लिया गया है, जिसमें आवेदन की आयु १५ वर्ष से अधिक एवं ३० वर्ष से कम होनी चाहिए तथा रत्नसंघ परिवार का सदस्य होना चाहिए। अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की किसी एक परीक्षा में ६० प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण भी होना चाहिए। आवेदक

को निम्न नियमावली का पालन करना होगा-

१. प्रतिदिन १ नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

२. सदाचार का पालन एवं कुव्यसन का त्याग करना होगा।

३. एक महीने में ५ सामायिक करनी आवश्यक होगी।

४. श्री जैन रत्न युवक परिषद्/स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा आयोजित केन्द्रीय शिविर/क्षेत्रीय शिविर में वर्ष में एक बार भाग लेना अनिवार्य होगा।

छात्र एवं छात्राएँ अपने आवेदन-पत्र को केन्द्रीय कार्यालय जोधपुर या चयन समिति के संयोजक श्री बुधमल बोहरा, **Flat No. 211, Akash Ganga Apartment, No. 19, Flowers Road, Kilpak, Chennai-10, Phone No. 044-26428868, Mob. No. 9444235065** के पते पर प्रेषित करें।

श्राविका मण्डल द्वारा संस्कार निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, शाखा-जयपुर द्वारा बालक-बालिकाओं में संस्कार निर्माण एवं सद्गुणों में अभिवृद्धि करने हेतु संस्कार निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन श्रीमती कमलादेवी जी कोठारी, श्री नरेन्द्र जी कोठारी, श्री विरेन्द्र जी कोठारी, हाँगकाँग, जयपुर के सौजन्य से किया जा रहा है। उक्त प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर १० ग्राम सोने का सिक्का, द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर ५ ग्राम सोने का सिक्का एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को ३ ग्राम सोने का सिक्का प्रदान किया जायेगा। इसके अतिरिक्त ५० ग्राम चाँदी के सिक्के के १० सुपर टॉप टेन पुरस्कार एवं २० ग्राम चाँदी के सिक्के के ४० अन्य पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। प्रतियोगिता के लिए प्रश्न-पुस्तिका सह उत्तरपुस्तिका सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-३०२००३(राज.), फोन नं. ०१४१-२५७५९९७ कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। प्रश्नपुस्तिका का मूल्य ३०/- रुपये एवं डाक द्वारा मँगाने पर ५०/- रुपये मात्र रखा गया है। प्रतियोगिता २५ अप्रेल २००६ से प्रारम्भ होगी। प्रश्नपुस्तिका प्राप्त करने की अन्तिम तिथि ३० जून, २००६ एवं जमा कराने की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई २००६ रखी गई है। पुस्तिका हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है।

-उर्मिला बोथरा, अध्यक्ष, १९९७, पीतलियों का चौक, जौहरी बाजार, जयपुर

जैन अध्यापक निर्माण-योजना

परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की सत्प्रेरणा से समाज चिंतामणि श्री सुरेश दादा जैन (विधायक) ने जैन अध्यापक तैयार करने हेतु एक योजना तैयार की है। जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी को

श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाँव में तीन वर्ष रहकर धार्मिक अध्ययन करना होता है। जिसमें न्यूनतम योग्यता १२वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा आयु १७ से २१ वर्ष होनी चाहिए। विद्यार्थी को अध्ययनकाल में भोजन, आवास तथा धार्मिक शिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था के साथ प्रथम वर्ष में ६००/- प्रतिमाह, द्वितीय वर्ष में ७५०/- प्रतिमाह और तृतीय वर्ष में ९००/- प्रतिमाह की छात्रवृत्ति दी जायेगी। जो विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करेगा उसकी समाज सेवा में ५०००/- प्रतिमाह तक की नौकरी का दायित्व भी संस्था ने लिया है। समाज सेवा में १० वर्ष तक निरन्तर सर्विस करने पर विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। सम्पर्क सूत्र- प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य-श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, व्यंकटेश मंदिर के पीछे, गणपति नगर, जलगाँव-४२५००१(महा.), फोन नं. ०२५७-२२३२३१५(ऑ.) २२५२९५८(घर)

पंचदिवसीय धार्मिक संगोष्ठी

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, शाखा-जयपुर के तत्त्वावधान में २० से २४ अप्रेल तक जीवनोपयोगी धार्मिक संगोष्ठी का आयोजन श्री जैन शिक्षण संस्थान, बजाज नगर में प्रातः ११ से २ बजे तक रखा गया। शिविर में १४० महिलाओं ने शिविरार्थी के रूप में भाग लिया। सूत्र विभाग, तत्त्व विभाग एवं जीवन-व्यवहार के विषयों पर विचार-चिन्तन किया गया। वर्तमान युग में धर्म की आवश्यकता, रात्रि भोजन त्याग का महत्त्व, टी.वी. से लाभ-हानि, जमीकन्द त्याग जैसे विषयों पर अध्ययन करवाया गया। संगोष्ठी में श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) सुषमा जी सिंघवी, शिक्षण संस्थान की संयोजिका श्रीमती शान्ता जी मोदी, श्रीमती चन्द्रप्रभा जी लोढ़ा, श्रीमती पारसमणि खींचा, श्रीमती युवराज जी जैन, श्रीमती मंजू जी डागा, श्री ताराचन्द जी जैन, श्री श्रीकान्त जी जैन, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, श्री जितेश जी जैन ने अध्यापन करवाया। शिक्षा समिति की संयोजिका एवं जयपुर श्राविका मण्डल की परामर्शदात्री डॉ. (श्रीमती) मंजुला बम्ब, श्राविका मण्डल, जयपुर की अध्यक्ष श्रीमती उर्मिला जी बोथरा, मंत्री-श्रीमती मीना जी गोलेछा, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्राविका श्रीमती प्रेमबाई नवलखा, श्रीमती लाडबाई जी हीरावत, श्रीमती मंजू जी मोदी, श्रीमती उषा जी सुराना का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। संगोष्ठी में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के फार्म भरवाये गये। स्वाध्याय सेवा की प्रेरणा की गई। संगोष्ठी में पुरस्कार, अल्पाहार और आने-आने का खर्च श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा वहन किया गया।

न्यूयार्क में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यतिथि मनाई

दिनांक ५ मई, २००६ को परमपूज्य आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमल जी

म.सा. की १५वीं पुण्यतिथि अपने देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। न्यूयार्क में फोरेस्ट हिल स्थित जैन स्थानक में वहाँ के श्रावक-श्राविकाओं ने २४ घंटे नवकार मंत्र का जाप कर आचार्य श्री के प्रति अपनी निष्ठा एवं श्रद्धा की अभिव्यक्ति दी है।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में बालक एवं बालिकाओं में धार्मिक एवं नैतिक संस्कार जागृत करने हेतु धार्मिक-शिविर आयोजित किये जाते हैं। इस वर्ष भी दिनांक १७ मई २००६ से ०४ जून २००६ तक घोड़ों का चौक, पावटा, नेहरू पार्क, लक्ष्मीनगर, चौ.हा.बोर्ड, सिंहपोल एवं सरस्वती नगर में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

धार्मिक प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। दिनांक १२.४.०६ से २९.४.०६ तक मेवाड़, मध्यप्रदेश एवं मालवा क्षेत्रों के ७५ से भी अधिक ग्राम/शहरों में प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ शाखा मेवाड़ के परामर्शदाता श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, श्री जैन शिक्षण संस्थान-जयपुर की संयोजिका श्रीमती शान्ता जी मोदी, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती अकलकंवर जी मोदी-जोधपुर, समन्वय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। इसके अतिरिक्त श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा, श्री पारसमल जी चोरडिया-उज्जैन, श्री मोहन जी पीपाड़ा-इन्दौर ने भी अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। प्रचार-प्रसार के दौरान 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' प्रतियोगिता का प्रचार किया गया तथा सामायिक-स्वाध्याय, स्वाध्यायी आमंत्रित करने हेतु एवं स्वाध्यायी बनने हेतु प्रेरणा की गई।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा २३ जुलाई २००६ को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा १ से १४ तक की आगामी परीक्षा २३ जुलाई २००६, रविवार को दोपहर १२.३० से ३.३० बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि २० जून २००६ है। परीक्षार्थी आगामी परीक्षा हेतु वेबसाइट www.jainratnaboard.com पर भी अपना पंजीयन करवा सकते हैं। जिन-जिन केन्द्रों पर शिक्षण बोर्ड की

पुस्तकों की आवश्यकता हो, वे बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें, ताकि उन्हें वाछित पुस्तकें उपलब्ध करायी जा सकें। *-डॉ. राकेश कांकरिया, अ.भा. श्री जैन रत्न. हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं.* ०२९१-२६३०४९०

महिला स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

जलगाँव- श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ की ओर से दिनांक २३.४.०६ से २८.०४.०६ तक महिला स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन गो-सेवा अनुसंधान केन्द्र, जलगाँव में किया गया। जिसमें ११८ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में १५ नये स्वाध्यायी तैयार हुए। अध्यापक के रूप में श्री प्रकाशचन्द जी जैन, श्री हीरालाल जी मंडलेचा, सौ. मंगलाबाई चोरडिया, श्री मनोज जी संचेती, सुश्री सपना जी धाड़ीवाल ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। संघाध्यक्ष श्री दलीचन्द जी चोरडिया व शिविर के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ द्वारा प्रतिवर्ष २ शिविरों का आयोजन किया जाता है।

युवामनीषी श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा. का राजस्थान की ओर विहार

संघशास्ता शासन प्रभावक श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के सुशिष्य संघनायक श्री पदमचन्द जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती युवामनीषी आगमज्ञाता श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा पंजाब संत-सम्मेलन में भाग लेकर पुनः राजस्थान की ओर पधार रहे हैं। युवामनीषी का गत वर्ष विजयनगर चातुर्मास हुआ था, इस वर्ष भीलवाड़ा श्री संघ की पुरजोर विनति पर २००६ के चातुर्मास की स्वीकृति भीलवाड़ा प्रदान की है।

निःशुल्क पशु-पक्षी चिकित्सा शिविर

चेन्नई- भगवान् महावीर अहिंसा प्रचार संघ के तत्त्वावधान में २२ अप्रेल को अम्बातूर के निकट गाँधी हाई रोड़ पर स्थित विशाल मैदान में निःशुल्क पशु-पक्षी चिकित्सा शिविर लगाया गया। शिविर में मद्रास वेटेनरी कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता श्री महालिंगम एवं डॉ रतलम के नेतृत्व में नवजात छोटे-बड़े बछड़ों-गायों-बकरियों, मुर्गियों का इलाज किया गया। २५० पशु-पक्षियों की चिकित्सा में संघ सदस्यों ने भाग लिया। पशु-पक्षियों से प्रेम करने और उन्हें मित्रवत् समझने की प्रेरणा के साथ अधिक दूध प्राप्त करने के लिए इन्जेक्शन देकर दूध नहीं निकालने का नियम लेने का आह्वान किया गया। शाकाहार के पेम्पलेट भी वितरित किए गये। *-सुरेन्द्र मालू, मंत्री*

बधाई/चुनाव

जोधपुर- सुश्री कोमल भंसाली सुपुत्री श्रीमती कान्ता जी एवं श्री विरेन्द्र जी भंसाली ने

सीनियर सैकेण्डरी बोर्ड की परीक्षा में ८९.२३ प्रतिशत अंक अर्जित कर मेरिट में छठा स्थान प्राप्त किया है। आप ग्रीष्मावकाश में आयोजित धार्मिक शिविर में भी भाग लेती रहती हैं। सुश्री कोमल ने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा में भी भाग लिया है। श्री विरेन्द्र जी भंसाली युवक परिषद् के सक्रिय कार्यकर्ता हैं एवं संत-सती विहार-सेवा में उनका अच्छा योगदान रहता है।

जोधपुर- सुश्री दिव्या सालेचा सुपुत्री श्रीमती इन्द्रा एवं श्री प्रकाश जी सालेचा ने

आठवीं बोर्ड परीक्षा में ९०० में से ८२९ अंक अर्जित कर वरीयता सूची में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया है। सुश्री दिव्या विभिन्न धार्मिक शिविरों में एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं में भाग लेती रहती हैं।

दिल्ली- सुप्रसिद्ध समाजसेवी तथा स्पष्ट वक्ता प्रो. रतन जैन को भगवान् महावीर के २६०५वें जन्मकल्याणक के भव्य समारोह में उनकी अथक और समर्पित भाव से समाज सेवा के लिए सम्मानित किया गया। दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने उन्हें स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। *-इन्द्रा जैन, संयोजिका*

जयपुर- सुबोध प्रबन्ध संस्थान के निदेशक प्रो. मानचन्द्र खंडेला को सिटीजन्स इन्ट्रीगेशन पीस सोसाइटी, नई दिल्ली द्वारा "राष्ट्रीय रत्न अवार्ड" २४ अप्रेल को जयपुर में आयोजित समारोह में प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान की महामहिम राज्यपाल ने की।

बीकानेर- श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक संघ के चुनाव में श्री भंवरलाल जी बढ़ेर, श्री पुखराज जी वैद और श्री झंवरलाल जी वैद को संरक्षक सदस्य; श्री सुन्दरलाल जी डागा को अध्यक्ष; श्री भीखमचन्द जी पारख, श्री बच्छराज जी अभ्भाणी, श्री रविन्द्रकुमार जी सेठिया और श्रीमती सुधा जी रामपुरिया को उपाध्यक्ष; श्री शांतिलाल जी सेठिया को मंत्री; श्री केवलचन्द जी पटवा, श्री सुरेन्द्र कुमार जी पारख, श्री उम्मेदजी सेठिया और श्री प्रेमचन्द जी पुगलिया को सहमंत्री; श्री वीरचन्द जी सेठिया को कोषाध्यक्ष एवं ४१ कार्यकारिणी सदस्य सर्वसम्मति से चुने गये। *-शांतिलाल सेठिया*

चेन्नई- श्री श्वे.स्था. जैन संस्कार मंच, मिन्ट स्ट्रीट, चेन्नई के २००६-०७ के चुनाव

में श्री सुरेश जी आंबड़-अध्यक्ष, श्री पदमचन्द जी सिंघवी-उपाध्यक्ष, श्री मुकेश जी खाटेड़ -सचिव, श्री पवन जी खाबिया-सहसचिव और श्री महावीरचन्द जी लुणावत-कोषाध्यक्ष चुने गये। १६ कार्यकारिणी सदस्यों का भी चयन किया गया। -*मुकेश खाटेड़*

ब्यावर- श्री स्थानकवासी जैन वीर संघ के द्विवार्षिक कार्यकारिणी के चुनाव २३.४.०६ को सम्पन्न हुए। श्री जवरीलाल जी सिसोदिया अध्यक्ष चुने गये तथा २७ कार्यकारिणी सदस्यों ने विजयश्री का वरण किया। चुनाव पश्चात् कार्यकारिणी सदस्यों ने बृज मधुकर भवन में विराजित विदुषी महासती श्री उमरावकंवर जी 'अर्चना' आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण की। -*ताराचन्द बम्ब*

नदबई- ग्राम पंचायत डहरा के सरपंच एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नदबई के संरक्षक श्री ज्ञानचन्द जी जैन का विधिक प्राधिकरण लोक अदालत तहसील क्षेत्र, नदबई में दो वर्ष के लिए चयन किया गया। श्री ज्ञानचन्द जी सेवा कार्य में रुचिपूर्वक भाग लेते हैं। -*हीरालाल जैन, प्रधानाचार्य*

संक्षिप्त समाचार

लासलगाँव- श्री महावीर जैन विद्यालय, लासलगाँव जिला नाशिक में १२ जून २००६ से पाँचवीं कक्षा से १२वीं कक्षा के लिए प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। आई.टी.आई. इलेक्ट्रिशियन-फिटर ट्रेड के लिए भी प्रवेश चालू है। होनहार किन्तु आर्थिक स्थिति से कमजोर छात्रों को संस्था की ओर से सहयोग भी दिया जा सकता है।

गुलबापुरा- श्री श्वे. स्था. जैन स्वाध्याय संघ, गुलाबपुरा २१ अगस्त से २८ अगस्त तक मनाये जाने वाले पर्युषण हेतु जो क्षेत्र स्वाध्यायी बुलाना चाहे तो वे अपना आवेदन ६ अगस्त २००६ तक गुलाबपुरा कार्यालय में भेज सकते हैं। आवेदन-पत्र में स्थानकवासी जैन घरों की संख्या रेल-बस मार्ग का उल्लेख करें और संघ के अध्यक्ष/मंत्री हस्ताक्षर सहित आवेदन करें।

नाशिक- भगवान् महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव समिति, जैन सेवा संघ एवं जैन सोशियल ग्रुप, नाशिक के तत्त्वावधान में भव्य शोभायात्रा एवं शिविर का आयोजन हुआ। शोभायात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई स्थानक पहुँची, जहाँ विराजित संत-मुनिराजों ने भगवान् महावीर के सिद्धान्तों पर प्रवचन फरमाया।

चेन्नई- श्री एस.एस. जैन संघ, सैदापेट, चेन्नई के तत्त्वावधान में महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में धार्मिक पाठशाला के बच्चों द्वारा गीत, स्तवन, भाषण एवं प्रश्नोत्तर

प्रतियोगिताओं के आयोजन किए गये। बच्चों में सेवा, समर्पण और धर्म के प्रति श्रद्धा की भावना बढ़े एतदर्थ धार्मिक पाठशालाएँ चलाई जा रही हैं। सैदापेट में बच्चों द्वारा सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। - *प्रकाशचन्द बोथरा, मंत्री*

मुरादाबाद(उ.प्र.)- तीर्थंकर महावीर डेंटल कॉलेज एण्ड रिसर्च सेन्टर, मुरादाबाद देश का प्रथम जैन अल्पसंख्यक डेंटल कॉलेज है। जहाँ देश के कोने-कोने से छात्र-छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जैन छात्र-छात्रों को प्रवेश में प्राथमिकता दी जाती है।

-एस.पी. जैन, निदेशक(फाइनेंस) फोन नं. ०९८३७८४८८६२

श्रद्धाञ्जलि

अलीगढ़- दृढ़धर्मी, संघ-सेवी सुश्राविका श्रीमती कपूरीदेवी जी धर्मपत्नी सुश्रावक

स्व. श्री सौभागमल जी जैन का ७२ वर्ष की आयु में २६ अप्रेल २००६ को प्रातः अकस्मात्-असामयिक स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ की सुज्ञ और समर्पित श्राविका थीं। गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति दृढ़ आस्थावान श्राविका नगर में पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदा तत्पर रहती। महासती मण्डल के नगर में विराजने पर श्राविका संवर-साधना करती। नित्यप्रति सामायिक साधना करने वाली श्राविका रत्न के विगत कई वर्षो से कच्चे पानी और रात्रि भोजन का त्याग था। स्वर्गगमन के दिन प्रातः सामायिक साधना से निवृत्त होने के अनन्तर अकस्मात् आयुष्यबल क्षीण हुआ और चन्द मिनटों में श्राविकारत्न ने नश्वर देह त्याग दी। अष्टमी-चतुर्दशी को एकाशन करने वाली श्राविका ने स्वर्गगमन के दिन भी पोरसी के प्रत्याख्यान कर रखे थे और नित्य की भाँति सामायिक में भजन गाने वाली श्राविका के स्वर्गवास पर किसी को विश्वास तक नहीं हुआ। जोधपुर में विराजित उपाध्यायप्रवर की सेवा में जब यह सूचना दी गई तो उन्होंने फरमाया कि श्राविकारत्न के चेहरे पर सदा शांति और सौम्यता रहती थी। संस्कारवान श्राविका के जीवनादर्श उनके सुपुत्रों और परिवारजनों में स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। उनके ज्येष्ठ सुपुत्र डॉ. धर्मचन्द जी जैन जिनवाणी मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक तो हैं ही, जैन धर्म-दर्शन-साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् भी हैं। सर्व श्री ऋषभ जी, टीकम जी और विनोद जी के जीवन में भी धर्म-भावना कूट-कूट कर भरी हुई है।

चेन्नई- रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका श्रीमती उमरावबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री रूपचन्द जी मेहता (खेजड़ला वाले)का २१.४.०६ को चेन्नई में स्वर्गवास हो गया।गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति आस्थावान श्राविका नगर में पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सन्नद्ध रहती। नित्य पाँच से लेकर दस सामायिकों में वे ध्यान, मौन और

स्वाध्याय करतीं। सुबह-साय प्रतिक्रमण करने वाली श्राविका नन्दीसूत्र का वाचन अवश्य करती। नवकारसी-पोरसी के प्रत्याख्यानों के साथ उपवास, बेले, तेले, पाँच, आठ अनेक तपस्याओं के साथ श्राविकारत्न ने तीन वर्षीतप भी किए। वे रूपासती महिला मण्डल, पीपाड़ की सक्रिय सदस्या थीं। श्रीमती उमरावबाई जी संघ-सेवी, संत-सेवी सुज्ञ श्राविका थीं। कार्यालय प्रभारी श्री नौरतन जी मेहता की मौसी जी का जीवन प्रेरणादायी था।

सवाईमाधोपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती फूलांदेवी जी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री

हीरालाल जी जैन (मोटर वाले) का २७ अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका थीं। उनके जीवन में सरलता, सादगी और सेवा भावना के विशिष्ट गुण थे। गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय को जीवन व्यवहार में चरितार्थ करने वाली श्राविका का तप-साधना में भी अच्छा पुरुषार्थ था। उन्होंने वर्षीतप का आराधन भी किया। वे जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन की सासु जी थीं।

रानी (जिला-पाली)- श्री मरुधर महिला शिक्षण संघ विद्यावाड़ी, रानी की

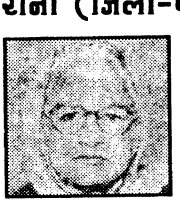

व्यवस्थापिका श्रीमती सुभद्रा जी जैन का ९.४.०६ को स्वर्गवास हो गया। सेवा, त्याग और समर्पण के बल पर उन्होंने विद्यावाड़ी को शिक्षा का अनूठा केन्द्र बनाया। शिक्षा के क्षेत्र में १९८० में महामहिम राज्यपाल और १९९० में महामहिम राष्ट्रपति ने उन्हें श्रेष्ठ शिक्षिका के रूप में सम्मानित किया। *-श्रीमती पद्मा जैन, जोधपुर*

जयपुर- संघसेवी श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री प्रशान्त जी पारख का २६.४.०६ को स्वर्गवास हो गया। उनका जीवन सहज, सरल और सादगी पूर्ण था। वे धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्य परायण श्रावक थे।

दिल्ली- सुश्रावक श्री विमलचन्द जी मालू का २७.३.०६ को अकस्मात् हृदयगति

रुके जाने से स्वर्गवास हो गया। वे विनोदप्रिय, निर्भीक, कर्मठ समाज-सेवी थे। स्वर्गगमन के दो घंटे पूर्व वे श्री ज्ञानचन्द जी म.सा. के दर्शन-वन्दन करने और मंगलपाठ श्रवण करने गये थे। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। *-कमलचन्द मालू*

शाहदा- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती मोहनीबाई मूलचन्द जी चोरडिया ने आचार्यप्रवर श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से पूर्ण सजग अवस्था में संथारा ग्रहण किया और समाधिभाव के साथ १५ दिन में स्वर्गगमन प्राप्त किया। श्राविकारत्न

विगत ३० वर्षों से चौविहार, सचित्त का त्याग जैसे नियमों का आराधन कर रही थीं। उन्होंने ११ की तपस्या के साथ आयंबिल का मासखमण तप भी किया। *-महेश नाहटा*

जयपुर- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती उषा भंडारी धर्मपत्नी स्व. श्री

सत्यप्रसन्नसिंह जी भंडारी (सेवानिवृत्त आई.पी.एस.) का ८६ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। सिद्धान्तप्रिय श्राविका की धर्म के प्रति अटूट आस्था थी। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं जिनमें उनके सुपुत्र श्री अशोक जी भंडारी पुलिस सेवा से निवृत्त हैं।

चेन्नई- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती पाँचीबाई बोहरा धर्मपत्नी स्व. श्री मिश्रीलाल जी बोहरा का ९४ वर्ष की आयु में २५ मार्च को एक घंटे के संथारे के साथ स्वर्गवास हो गया। सादगी पूर्ण जीवन जीने वाली श्राविका ने तीन बार अठाई तप का आराधन किया।

-शांतिलाल कोठारी

जोधपुर- संघसेवी-संतसेवी श्रावकरत्न श्री गणपतमल जी भंडारी सुपुत्र स्व. श्री मख्तूरमल जी भंडारी का १५.४.०६ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ के समर्पित श्रावक थे। उनका जीवन सरलता, सादगी, संतोष और सेवा की भावना से ओतप्रोत था।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी पर अभिमत

जिनवाणी माह मार्च २००६ के संपादकीय लेख को पढ़ा जिसमें जैन पत्रिकाओं को सम्पर्क का मार्ग बताया है। आज देश में ४०० के करीब जैन समाचार पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। ये पत्रिकाएँ समाज पर कितना प्रभाव डाल रही हैं, यह प्रश्न अहम है। पर हम देखते हैं कि लोग अपने शूद्र हितों के लिये इन पत्रिकाओं का उपयोग कर सामाजिक व्यवस्था के रंग को काला कर देते हैं। पत्रिकाएँ सत्कार्य में अपना निर्वहन करें, समाज को दिशा दें, तार्किक टीकाएँ करें तो समाज में व्याप्त अंधविश्वास को दूर किया जा सकता है। केवल मृत्यु समाचार, मान-सम्मान के समाचार प्रकाशित कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेना ही पत्रिकाओं का उद्देश्य नहीं होना चाहिये। सारगर्भित लेखों पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।

-धेवरचन्द गोदिका, जयपुर

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/-. रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

१०३२९ श्री हेमन्त कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
१०३३० श्रीमती कुसुम जी फोफलिया, जयपुर (राज.)
१०३३१ श्री बसन्त कुमार जी सिंघवी, जयपुर (राज.)
१०३३२ श्री विपुल कुमार जी खारीवाल, जोधपुर (राज.)
१०३३३ श्री निलेश कुमार जी बोहरा, भवानीमण्डी (राज.)
१०३३४ श्री महावीरचन्द जी डागा, जोधपुर (राज.)
१०३३५ श्रीमती कुसुम जी भण्डारी, जयपुर (राज.)
१०३३६ श्री के.के. सिंघवी, जोधपुर (राज.)
१०३३७ Shri Achal chand ji Bhikchand ji Lunkad, Ahmedabad(Gujrat)
१०३३८ Shri Vaibhav Ji Mehta, Jodhpur(Raj.)
१०३३९ श्री माँगीलाल जी निर्मल कुमार जी गोलेछा, बालोतरा (राज.)
१०३४० श्रीमती सीमा जी विवेक जी जैन, भोपाल (म.प्र.)
१०३४१ श्री कमलेश कुमार जी जैन, देई-बून्दी (राज.)
१०३४२ Shri Satish Kumar Ji Kantilal Ji Kothari, Kamraj, Surat(Gujrat)
१०३४३ Shri Nitin Bhai Ji jaywant Bhai Shah Ji, Piplod, Surat (Gujrat)
१०३४४ Dr. Jinesh Ji Jain, Hindauncity, Karauli (Raj.)
१०३४५ श्री विनोदसिंह जी डागुर, जटनगला, हिण्डौनसिटी, करौली (राज.)
१०३४६ श्री छतरमल जी जैन, हीरादास, भरतपुर (राज.)
१०३४७ श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन, मौहल्ला गोपालगढ़, भरतपुर (राज.)
१०३४८ श्री मिथिलेश जी जैन, मौहल्ला गोपालगढ़, भरतपुर (राज.)
१०३४९ वैद्य श्री धूरेलाल जी जैन, हीरादास, भतरपुर (राज.)
१०३५० श्री उगमराज जी खारीवाल, चेन्नई (तमि.)
१०३५१ श्री पदमचन्द जी सुरेश कुमार जी छाजेड़, चेन्नई (तमि.)
१०३५२ श्री नरेन्द्र कुमार जी संदीपकुमार जी पारख, चेन्नई (तमि.)
१०३५३ Shri Shreepal H. Jugraj Ji Jain, Chennai (T.N.)
१०३५४ Shri Mohanlal Ji Suresh Kumar Ji Bohra, Mysore (K.T.)
१०३५५ Shri Ashok chand ji Sandeep Kumar Ji Bafna, Bangalore (K.T.)
१०३५६ Shri Mahaveer chand Ji Goutham chand ji Sankala, Mysore(K.T.)
१०३५७ श्री प्रदीप कुमार जी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर(राज.)
१०३५८ श्री अभयकुमार जी जैन, लुधियाना (पंजाब)
१०३५९ Smt. Sonia Ji Aditya Ji Bhandari, Mumbai (M.H.)

१०३६० Mrs. Renu Ji Khinwasara, Kolkata (W.B.)
१०३६१ Shri Vijay Kumar Ji Hingad, Raja Park, Jaipur (Raj.)
१०३६२ Shri Sushil Kumar Ji Singhvi, Jaipur (Raj.)
१०३६३ श्री रमेशचन्द जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
१०३६४ श्री फौजराज जी सांगीलाल जी लोढ़ा, उठवालिया, पोकरण, जोधपुर (राज.)
१०३६५ प्राणीमित्र श्री कल्पेश जी सालेचा, पादरू, बाड़मेर (राज.)
१०३६६ श्री सुनील कुमार जी कावड़िया, अजमेर (राज.)
१०३६७ श्री संदीप सदावत मेहता, जोधपुर (राज.)
१०३६८ श्री सम्पतराज जी ललवाणी, बैंगलोर (कर्नाटक)
१०३६९ Shri Ratanchand Ji Kothari, Mumbai (M.H.)
१०३७० Smt. Priyanka Ji Mehta, Mumbai (M.H.)
१०३७१ Smt. Renu Ji Khinwasara, Kolkatta (W.B.)
१०३७२ श्री घीसीलाल जी सुकलेचा, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

१००००/- श्री सजीव जी संदीप जी महिलम जी नाहर, सूरत, उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दर्शन करने एवं विरक्त भाई ललित एवं विरक्ता बहिन सीमा की दीक्षा के उपलक्ष्य में।

२१००/- श्री घीसीलाल जी, कमलचन्द जी, प्रकाशचन्द जी सुकलेचा, जयपुर, अपने नवनिर्मित आवास 'सुकलेचा एनक्लेव' में गृहप्रवेश करने के उपलक्ष्य में।

११०१/- श्री गुलाबचन्द जी जैन, उनियारा, अपनी पुत्रवधू श्रीमती सीमा जी जैन धर्मपत्नी श्री त्रिलोकचन्द जी के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में।

११०१/- श्री श्रीचन्द जी हस्तीमल जी डोसी, मेड़ता सिटी, श्रीमती पुष्पादेवी जी डोसी धर्मपत्नी श्री श्रीचन्द जी डोसी के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में।

११००/- श्री डुंगरमल जी भुरट, जलगाँव, महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के वर्षीतप के पारणे एवं ललित व सीमा की भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१००१/- श्री कैलाशचन्द जी गांग, बैंगलोर, चि. अक्षय सुपौत्र स्व. श्री मानमल जी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

१००१/- श्रीमती निरूपा धर्मपत्नी श्री कपिल जी पटवा, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री शांतिलाल जी डाकलिया की दिनांक २९.५.२००६ को प्रथम पुण्यतिथि पर स्मृति में।

१०००/- श्री इन्दरमल जी सुराणा, बीकानेर, तरुण तपस्विनी महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा ३ के बीकानेर पधारने के उपलक्ष्य में।

५०१/- आगोलाई श्री जैन श्री संघ, आगोलाई, उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा, मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के महावीर जयन्ती पर आगोलाई पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री सुनील जी अनिल जी संजय जी कटारिया, पीपाड़ शहर, पूज्य माताजी श्रीमती

पुष्पादेवी जी धर्मपत्नी श्री नन्दलाल जी कटारिया के वर्षीतप तपस्या के पारणे के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री विनोदकुमार जी, महावीरकुमार जी सेठ, जयपुर, गुरु भगवन्तों की कृपा से स्व. सेठ उमरावमल जी के प्रपौत्र एवं प्रपौत्री पुत्र महावीर सलौनी एवं पुत्री पारस एवं पूर्वा तथा विनोद एवं किरण के पौत्र-पौत्री की खुशी में।

५००/- श्री प्रकाशचन्द जी जैन, भरतपुर, पूज्य पिताजी श्री स्वरूपचन्द जी जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा जी जैन के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री राजकुमार जी बाफना, जोधपुर, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यतिथि में सप्रेम भेंट।

३००/- श्रीमती भंवरीबाई जी रूणवाल, बैंगलोर, सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री कमलचन्द जी मालू, दिल्ली, श्री विमलचन्द जी मालू का दिनांक २७.३.०६ को आकस्मिक निधन होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री रमेशचन्द जी चेतन कुमार जी दिनेश कुमार जी शाह, अलीगढ़-रामपुरा, स्व. श्री गुलाबचन्द जी शाह का स्वर्गवास दिनांक २२.३.०६ को होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री हरिशचन्द जी जैन, मौजपुर, स्वर्गीय श्रीमती विद्या देवी जी जैन की पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री कमलपतराज जी, सुशीला जी, अनिल जी, ममता जी भंसाली, जोधपुर, पूज्य गुरुदेव उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जोधपुर आगमन पर सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री कमलपतराज जी, सुशीला जी, अनिल जी, ममता जी भंसाली, जोधपुर, पूज्य गुरुदेव उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जोधपुर में दर्शनलाभ के उपलक्ष्य में।

२५१/- श्री महावीरप्रसाद जी जैन, कोटा, अपने सुपुत्र चि.शीतल एवं सौ. मंजु जैन के उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से जोधपुर में देव-गुरु-धर्म का स्वरूप समझने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

निम्नलिखित महानुभावों से भी साभार प्राप्त हुआ

श्री प्रकाशचन्द जी झांबड़-नादुरा बुलढाणा, श्री जवरीलाल जी गौतमचन्द जी बोहरा-चेन्नई, श्री आनन्दराज जी सुनील कुमार जी भंसाली, श्री महावीरप्रसाद जी शांतिलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री कैलाशचन्द जी प्रभुदयाल जी-हिण्डौनसिटी, श्री मोतीमल जी पन्नालाल जी गोघड़-आगोलाई, श्रीमती ताराबाई जी डाकलिया-जलगाँव,।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

६००/- श्री विनोदकुमार जी महावीर कुमार जी सेठ, जयपुर, साहित्य प्रकाशन, स्वाध्याय संघ एवं जीवदया हेतु साभार।

जीवदया हेतु साभार

२०००/- श्री ज्ञानकंवर जी नाहर धर्मपत्नी श्री भोपालसिंह जी नाहर, भीलवाडा।

१०००/- श्रीमती चैनीबाई जी कोठारी धर्मपत्नी स्व. श्री पुखराज जी कोठारी, दूसरे वर्षीतप के उपलक्ष्य में।

५००/- श्रीमती कंचन देवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री मनोहरलाल जी बोहरा, भीलवाड़ा।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार

११०००/- श्री कल्याणमल जी बाफना, इन्दौर, स्तम्भ सदस्यता।

१००००/- श्री लाभचन्द जी नाहर, श्रीमती लाडश्री जी नाहर, सूरत, उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दर्शन करने एवं विरक्त भाई ललित एवं विरक्ता बहिन सीमा की भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

११०१/- श्री गुलाबचन्द जी जैन, उनियारा, अपनी पुत्रवधू सीमा जी जैन धर्मपत्नी श्री त्रिलोकचन्द जी जैन के वर्षीतप पारणे के उपलक्ष्य में।

११००/- श्री श्रीचन्द जी हस्तीमल जी डोसी, मेड़ता सिटी, श्रीमती पुष्पादेवी जी डोसी धर्मपत्नी श्री श्रीचन्द जी डोसी के वर्षीतप पारणे के उपलक्ष्य में।

५५०/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बागली, पर्युषण सहायतार्थ।

५०१/- श्रीमती ताराबाई जी डाकलिया, जलगाँव, अपने पति श्री मदनलाल जी डाकलिया का दिनांक ८.२.०६ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

५०१/- श्री सुनील जी, अनिल जी, संजय जी कटारिया, पीपाड़ शहर, पूज्य माताजी श्रीमती पुष्पादेवी जी धर्मपत्नी श्री नन्दनलाल जी कटारिया के वर्षीतप पारणे के उपलक्ष्य में।

५००/- श्री मांगीलाल जी नागौरी, पारसोली, सहयोगी सदस्यता।

२५१/- श्री हरीशचन्द जी जैन, मौजपुर, स्व. श्रीमती विद्यादेवी जी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

२५१/- श्री महावीरप्रसाद जी जैन, कोटा,अपने सुपुत्र चि. शीतल जैन (सुपौत्र श्रीमती गुलाबबाई जी जैन) का शुभ विवाह सौ. मंजू जैन (सुपुत्री श्री जम्बूकुमार जी जैन, चौथ का बरवाड़ा) दिनांक १८ अप्रेल २००६ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

आगामी पर्व

ज्येष्ठ कृष्णा ५-६	गुरुवार, १८.०५.२००६	आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. १६वाँ आचार्य पद चादर महोत्सव, परम्परा के मूलपुरुष श्री कुशलचन्द जी म.सा. की २२३वीं पुण्यतिथि
ज्येष्ठ कृष्णा ८	शनिवार,२०.०५.२००६	अष्टमी
ज्येष्ठ कृष्णा १४	शुक्रवार, २६.०५.२००६	चतुर्दशी, पक्खी
ज्येष्ठ शुक्ला ८	रविवार, ०४.०६.२००६	अष्टमी
ज्येष्ठ शुक्ला १४	शनिवार, १०.०६.२००६	चतुर्दशी, पक्खी, क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा: की १६१वीं पुण्यतिथि
आषाढ़ कृष्णा २	मंगलवार, १३.०६.२००६	२१०वाँ क्रियोद्धारक दिवस

आचार्य हस्ती जीवन-दर्शन स्वाध्याय प्रतियोगिता

युगद्रष्टा-युगमनीषी अध्यात्मयोगी महापुरुष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित्र

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं'

पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता में भाग लीजिए

प्रथम पुरस्कार- १ लाख रुपये

अन्य विविध पुरस्कार

द्वितीय -३१,०००/-, तृतीय- २१,०००/-, चतुर्थ-१५,०००/-

पंचम-११,०००/-, षष्ठ-७,०००/-, सप्तम-५,०००/-अष्टम-३,०००/,

नवम-२,०००/-, दशम- १०० प्रतियोगियों में प्रत्येक को १,०००/-

शीघ्र प्रतियोगी प्रोत्साहन पुरस्कार रुपये ५०/-प्रत्येक

सौजन्य :

श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत की स्मृति में श्री मोफतराज मुणोत परिवार, मुम्बई

प्रतियोगिता की उपयोगिता-

अपने जीवन का निर्माण, आत्मशक्ति एवं आत्मविश्वास में अभिवृद्धि, आदर्श साधु-जीवन का बोध, जीवन की वैयक्तिक-पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान, शान्ति एवं आनन्द का अनुभव।

प्रश्न-पुस्तिका वितरण की अन्तिम तिथि	**- ६ सितम्बर २००६**
शीघ्र प्रतियोगियों हेतु अन्तिम तिथि	**- ५ नवम्बर २००६**
उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि	**- २ जनवरी २००७**
परिणाम घोषणा	**- २९ अप्रेल २००७**

प्रतियोगिता हेतु ९५० पृष्ठ का विशाल ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं २५०/- के स्थान पर मात्र १००/- में तथा प्रश्न पुस्तिका एवं उत्तरपुस्तिका- ३०/- में उपलब्ध।

प्रश्नपुस्तिका में लगभग ६०० प्रश्न हैं। प्रश्नपुस्तिका दो भागों में विभक्त है। प्रथम खण्ड, पंचम खण्ड एवं आवरण पृष्ठ आदि के प्रश्न प्रथम भाग में तथा द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड के प्रश्न द्वितीय भाग में हैं।

डाक अथवा कोरियर से मंगवाने पर-

ग्रन्थ-१००/-+ डाक व्यय ६०/-= कुल १६०/-

प्रश्न पुस्तिका ३०/- + डाक व्यय १०/- = कुल ४०/-

ग्रन्थ एवं प्रश्न-पुस्तिका मंगवाने का पता-
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१(राज.)
फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६२४८९१, २६४१४४५, फैक्स-२६३६७६३

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगी ध्यान दें

युगद्रष्टा-युगमनीषी अध्यात्मयोगी महापुरुष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित्र 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता का शुभारम्भ हो चुका है। प्रश्नपुस्तिका को प्राप्त कर अध्ययन करने का उत्साह जन-साधारण में दृष्टिगत हो रहा है। प्रतियोगी उत्तर लिखने से पूर्व निम्नांकित संशोधन अपनी प्रश्नपुस्तिका में अवश्य कर लेवें। (यदि पहले से सही हो तो संशोधन न करें)

१. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४ के प्रश्न संख्या २० को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- आचार्य श्री ने केन्द्रीय कारागार, जोधपुर में कैदियों को अपने प्रवचन के दौरान बुराइयों के फल से बचने का क्या उपाय बताया? (१३)
नया प्रश्न- .....में आत्मशांति है। (३)

२. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली २१ के प्रश्न संख्या १६ को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- मैं अपने दोषों का प्रायश्चित्त पूर्ण हुआ समझूँगा।
नया प्रश्न- इनके स्वप्न में भी कह देवां तो ये केणो कर लेवे।

३. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली २९ के प्रश्न संख्या ८ को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- श्रमण प्रधान चतुर्वर्ण संघ ही तीर्थ है, ...वाला है।
नया प्रश्न- विषम स्वभाव के अणुओं का मेल शक्ति को.....नहीं।

४. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४ के प्रश्न संख्या १९ में आए शब्द "कोसाणा" के स्थान पर "कोरना" पढ़ा जाए।

५. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली ३१ के उत्तर चतुर्थ एवं तृतीय खण्ड (काव्यांजलि में निलीन व्यक्तित्व) से देने हैं।

६. प्रश्नपुस्तिका के प्रश्नावली १ के प्रश्न संख्या १९ में आए शब्द 'संवत् १९८८' के स्थान पर 'संवत् ११८८' पढ़ा जाए।

७. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४, प्रश्न संख्या १४ का उत्तर(४) शब्दों के स्थान पर(६) शब्दों का है।

८. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली २५, प्रश्न संख्या ४- सच्चा सहारा तो मुझे अपने गुरु का ही है, फिर यह कृत्रिम सहारा किसलिये? जिन्होंने जीवन में जो सोचा, जिसे.....समझा, उसे अपने जीवन में उतारा भी। **की जगह जिन्होंने जीवन में जो सोचा, जिसे.....समझा, उसे अपने जीवन में उतारा भी। ही पढ़ा जाए**

उक्त संशोधनों के अतिरिक्त किसी प्रकार का संशोधन उत्तरदाता को लगे तो वह उत्तरपुस्तिका में नोट लगाकर भेज सकता है। अन्य संशय होने पर निम्नांकित पते एवं संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया के फोन नं.०९४१४१-३४६०६ पर सम्पर्क किया जा सकता है- *अ.भ. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन ०२९१-२६३६७६३*

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत ६२ से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 21 अगस्त से 28 अगस्त 2006 तक रहेंगे।** अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 15 जुलाई 2006 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम व पता.....
4. संघ मंत्री का नाम व पता.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई २४/२५,Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- दुलीचन्द बी. बोहरा, फोन नं. २५२६५१४३ (स्वाध्याय संघ), २६४२३०३६, २६४११०१५

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET
CHENNAI-600079(T.N.)
PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI GURU HEERAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Live & Let Live

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

REGD. OFFICE : 33, Montieth Road, Egmore, Channai-600008

CHENNAI	:	**044-28553185, 52145478**
BANGALORE	:	**080-22103267, 22103268**
HYDERABAD	:	**040-23414333, 23414777**
GOA	:	**0832-2420675, 2231190**

www.prithvifx.com

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD **NAVARATHAN KAVAD**
RAVINDRA KAVAD **ASHOK KAVAD**

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Phone No.: 044-2627 3165, 2627 4165

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

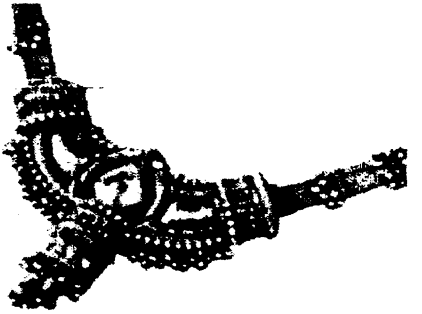

Best Compliments from

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916.KDM)

22 Ct. Gold! 24 Ct. Trust!

No.4, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272609, 55666555.

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान॥

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No.5, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272906, 55689588.

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR DIAMOND CO.,LTD

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House,
12th Floor, Suite 160-161,
Suriwongse Road,
BANGKOK 10500, Thailand
G.P.O. Box No. 2088

Tel : 237-8051, 237-8052
234-7648
Fax : (662) 237-6110
Res : 437-0910
Mobile : 01-6285733

Gurudev

SURANA

INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz. HSD / CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office

29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai 600 014.
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Phone : 954119 222881 Telefax : 954119 222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram,
Chennai 600 110
Phone : 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Man

विश्व को आज शस्त्रधारी सैनिकों की नहीं अपितु शास्त्रधारी सैनिकों की आवश्यकता है।

आचार्य श्री हस्ती

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliment From :

NARENDRA HIRAWAT

Flat No. 1, Building No. 2
Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg,
Matunga (West), Mumbai-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-56669707, 24370713
Opera House Office : 022-23884282
Mobile : 98210-40899

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है,
वह प्रभावक श्रावक है।
आचार्य श्री हस्तीमलजी.म.सा.

With Best Compliments From :

MJ

MAHENDRA JEWELLERS

No. 1000-1001.
Thiruvottiyur High Road
Kaladipet, Chennai-600 019

Phone : (O) 044-25991313, 25992300, 25992400
Fax : 044-25994466
Phone : (R) 044-25993671, 25993101, 25995588

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

Presenting
Premium properties by Kalpataru

KALPATARU ROYALE

Near Cine Planet, Off Sion Circle,
Sion

KALPATARU ESTATE

Opp. Fantasyland,
Andheri (E)

SIDDHACHAL

Pokhran Road No.2,
Thane (W)

Other Projects :

Kalpataru Habitat, **Parel** • Kalpataru Gardens, **Kandivli (E)**
Tarangan, **Thane (W)** • Kamdhenu, **Mulund (E)**
Kalpataru Regency II, **Pune**

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai - 400 021. India
Tel.: 022-2282 2888, 2281 7171 • Fax: 022-2204 1548, 2288 4778
Email : sales@kalpataru.com • Website : www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।